

बाणी

श्री नेही नागरीदास जी

प्रकाशक :

श्री किशोरी चरण रजलिप्तसु
लाबा किशोरीशरण

श्यामाकृष्ण, दुसायत, बृन्दावन

बाणी

श्री नेही नागरीदास जी



प्रकाशक :

श्री किशोरी चरण रजलिप्सु
बाबा किशोरीशरण

स्थामाकुञ्ज, दुसायत, वृन्दावन
CC-0. Vasishta Tripathi Collection.

★ प्रकाशक :

श्री किशोरी चरण रजलिप्तु
बाबा किशोरीशरण
इयामा कुञ्ज, दुसायत, वृन्दावन

★ सम्पादक :

नन्दकुमार शर्मा एम.ए
श्रीमद्भागवत धाम, सेवाकुञ्ज-वृन्दावन

★ प्रथमवार

१०००

★ न्योछावर : सात रुपये पचास पैसे

★ श्रीधामवृन्दावन-पाटोत्सव
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी, २०३५
१२ नवम्बर १९७८

★ मर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

★ मुद्रक :

रत्न प्रेस, अठखाम्बा
वृन्दावन

वाणी के सम्बन्ध में

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय में वाणी साहित्य की प्रचुरता है। वाणी-कार, महानुभाव अपनी साधनाओं में जिस रस का समास्वादन करते थे, उसी का वर्णन अपनी आत्मनिष्ठा से स्वरचित् पद्धों में करते रहते थे।

इन अनुभवी संतों की वाणी का प्रभाव भवाटबी व्यक्ति सांसारिक जनों के हृदय पर आज भी प्रत्यक्ष होता है।

श्री नेही नागरीदास जी महाराज की वाणी भी उनके श्रीहित रस रीति समाविष्ट चित्तका अनुपम दर्शन है। इसमें प्रिया प्रियतम के दिव्यातिं-दिव्य रस सिद्धान्त का वर्णन किया है। वे अपने में जितने एकान्त सेवी, भजननिष्ठ, निर्मीक, स्पष्ट वक्ता हैं, वे सभी गुण इनकी भावमयी वाणी में मुख्यरित हुए हैं।

श्री हरिवंशचन्द्र महाप्रभु के नित्य विहार में निज भावना को स्थित करके श्री नागरीदास जी ने पद, दोहावली के द्वारा श्री राधावल्लभ जी की विविध केलि का सरस एवं हृदयप्राही वर्णन किया है। श्री हरिवंश को सर्वोपरि तत्त्व, श्री सेवक जी की भाँति मानते हैं :—

वानी श्री हरिवंश को धर्मी धर्म प्रतीति ।

करी नागरीदास जू भगवत् मुदित सु रोति ॥

—श्री भगवत् मुदित

आपने अपने उज्ज्वल चरित्र और वाणी के माध्यम से रसिक समाज को नवीन चेतना प्रदान की है तथा राधावल्लभीय सम्प्रदाय के आधार को सुस्थिरत्व प्रदान किया है। उपासना मार्ग के गाम्भीर्य को स्पष्ट करने में नागरीदास शिल्पकार स्फुरने जाते हैं :—

मारग रसिक नरेश के निषट विकट है चाल ।

तन मन झाँटि, सिराय, गरि, दृथा बजावत गाल ॥

* * * *

मूरति नेननि में रभी हिय मधि गुन रहे पूरि ।

दसा न कोऊ समुझि है प्रेम पहुँचनो दूरि ॥

* * * *

प्रेम भजन की छटपटी ताहि सुहाइ न आन ।

कल काहे की रेत दिन रति जब पकरथो प्रान ॥

नागरीदास जी द्वारा रचित पद ३३० एवं दोहा ६३७ तथा एक हिताङ्क भी उपलब्ध है। वह प्रस्तुत प्रकाशन में प्रकाशित है। इनके पदों में व्रजभाषा का प्रबाह देखने योग्य है। कहीं-कहीं बुन्देलखण्डी के शब्दों का भी बड़े ढङ्ग वे प्रयोग किया है। किन्तु प्रत्येक पद में इनके निजी अनुभव की छाप लगी मिलती है। पद पढ़ने से हृदय पर चिन्त्र सा चित्रित हो जाता है। श्री घुबदास जी ने लिखा है :—

नेही नागरिदास अति जानत नेह की रीति ।
दिन दुलराई लाडिली लाल रेंगीली प्रीति ॥

— भक्त नामावलि

[इनको बाणी का रचना काल विक्रम संवत् १६२० से १६६० तक मान सकते हैं।]

इहोने अपनी बाणी में युगल विहार का वर्णन किया है, और उसके साथ प्रेम-अनन्य-भजन के भावों का भी सूक्ष्म रीति से सुवोध वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि श्री सेवक जी महाराज के हित कल्पतरु को श्री नागरीदास जी ने पल्लवित, पुष्पित, फलित किया है। इनकी रचनाओं में हित महाप्रभु की बाणी का जितना उत्कर्ष प्राप्त है, अन्यत्र कहीं देखने में नहीं आया।

एक सर्वेया में इन्होने अपनी हड्डिनिष्ठा, का परिचय दिया है :—

सुन्दर श्री वरसानो निवास और बास बसों बृन्दावन धाम है।

देवी हमारें श्री राधिका नागरी गोत सौं श्री हरिवंश को नाम है॥

देव हमारें श्री राधिकावल्लभ रसिक अनन्य समा विधाम है।

नाम है नागरिदासि अली बृषभानु लली की गली को गुलाम है॥

इनके विरक्त जीवन का परिचय ग्रन्थ के साथ संलग्न है उसे भी अवश्य पढ़ें।

यह ग्रन्थ सर्व प्रथम प्रकाशित करके रसप्लुत रसिकों के कर-कमलों में समर्पित करते हुए आज मुझे अपार है। इस ग्रन्थ रत्न में जितनी विशेषतायें हैं उसके अनुसार इसका प्रकाशन बहुत पहले ही हो जाना था, परन्तु पता नहीं क्यों? यह प्रकाश में नहीं आया। वैसे हितधर्मी तथा व्रज-रसवेता महानुभावों में इस ग्रन्थ का सदा से समादर होता आया है। समाजगान में भी समय-समय पर इनकी पदावलि बड़े चाव से गाई जाती रहीं हैं। सत्य तो यह है कि जब राधावल्लभ लाल जाहें तब ही सभी दुलंभ कार्य भी सुलभ हो जाते हैं।

(३)

इसके प्रकाशन—सम्पादन में जो हस्तलिखित वाणियाँ प्राप्त हुईं, उनमें भी बहुत से पाठ भेद थे, हमने उन पाठ भेदों को नीचे टिप्पणी में लिखा है। टिप्पणी में कठिन शब्दों के यथा संभव अर्थ भी दिये गये हैं। जिससे सरलता से अर्थ लग जाता है। इस कठिन शब्दार्थ थृत्यला खोलने में शब्द कोश ग्रन्थों का आश्रय लिया गया है। कहीं-कहीं संतों के भाव के अनुसार भी शब्दार्थ किये गये हैं। जिन महानुभावों की कृपा से यह प्रकाशन सम्भव हो सका है उस कृपा को भी हम अपनी हृषि से ओङ्कल नहीं कर सकते। १००८ गो० श्री ललिताचरण जी महाराज, गोस्वामी श्री प्रीतमलाल जी आदि जिन्होंने उदारता-पूर्वक हस्तलिखित वाणी प्रदान की तथा समय-समय पर प्रकाशन सम्बन्धी परामर्श भी देते रहे। श्रीवाच्चा ध्रुवालिशरण जी, श्रीभगत जी धर्मचन्द जी, श्री वाचा तुलसीदास जी, आदि सभी महानुभावों के सहयोग से यह कार्य संपन्न हो सका है। मेरे ऊपर आचार्यबृन्द, रसिक जन सदा से कृपा करते आये हैं, और सदा प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से कृपा करते रहेंगे, उन सभी का मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

यह प्रकाशन की सेवा श्रीहित महाप्रभु की असीम अनुकूल्या से संभव हुई है, उन्होंने पहले अपनी वाणी श्रीराधा सुधानिधि की लगभग तीन सौ वर्ष प्राचीन “रसकुल्या” टीका दो भागों में प्रकाशित कराई है। जो अपने में एक अनूठी है। श्री रूपवाणी, स्फुटवाणी, इन सब प्रकाशित वाणियों का रसिक साधु समाज ने बहुत आदर कियां हैं। अब यह प्राचीन रस उपासक नागरीदास जी की वाणी भी उन्हीं संतवाणीं अध्येताओं को आनन्दित करे। यही श्रीहित महाप्रभु से प्रार्थना है। कामना है।

श्री किशोरी चरणराज लिप्स्य
बाबा किशोरीशरण
श्यामा-कुञ्ज, वृन्दावन.

श्री नेहीनागरीदास जी

च४।

जीवन-परिचय

श्रीनेही नागरीदास जी का नाम हित चरणकनिष्ठ रसिक सन्तों में बड़े आदर से लिया जाता है। इन्होंने अपने जन्म से मध्य प्रदेश के बेरछा[॥] नामक ग्राम की भक्ति भावमयी भूमि को पावन किया है। इनका जन्म पवित्र भगवद् भक्ति राजवंश कात्रिय कुल में हुआ था। बाल्यकाल से ही इन्हें सन्त चरणों में प्रगाढ़ अनुराग था। कहीं भी सन्त दर्शन होते, ये लपक कर बड़ी निष्ठा से उनके चरण पकड़ लेते थे। इनके मन में अपने लिये गुरु की गवेषणा थी, और इसी लिये प्रत्येक साषु का संग करते और उनकी दिनचर्या उपासना आदि को बड़े ध्यान से देखते रहते। इनके इस संत-सेवी स्वभाव से संयोगवश एक दिन इन्हें स्वामी चतुर्भुजदास जी के दर्शन हो गये। श्री स्वामीजी महाराज के सद-उपदेशों का प्रभाव इनके सरल, सुवोच, चित्त पर गहरा हुआ। 'सत्संगति कथय कि न करोति पुंसाम्'[॥]

इनके चरित्र के मूल लेखक महात्मा भगवत्सुदित ने अपने ग्रन्थ "श्री रसिक अनन्धमाल" में लिखा है:—

घर्मा श्री हरिवंश के, तिनको भयो चु संग।

रसिक नागरीदास उर, चढ़चौ प्रेम को रंग॥

उन दिनों श्रीस्वामी चतुर्भुजदासजो[॥] हिन्दू-संतमण्डली (जमात) को साथ लेकर देश भर में भगवत् भक्ति के प्रचार के लिये घूमते रहते थे। उनकी रसमयी वाणी तथा उनके दिव्य आचरणों का प्रभाव, तत्कालीन भावुक समाज के हृदय पर तुरन्त होता था। श्री नागरीदास के भक्ति भाव से पवित्र हुए हृदय पर, स्वामीजी के संग का रञ्ज गहरा चढ़ गया था।

चतुर्भुज गोड़ देश अनुरक्त।

देवी, चौर, प्रेत, किये भक्त॥

* यह ग्राम मध्यप्रदेश में भोपाल के समीप है। * रासमण्डल के ये प्रथम महन्त हैं।

इस सत्संग में नेहीं नागरीदास जी का चित्त श्याम-श्याम की नित्य नवोन रसोपासनों से परिचित हुआ । अब इनका मन एकान्त चिन्तन के लिये आकुल हो उठा, और वे बृन्दावन आ गये । इनके साथ इनकी भावज भागमती भी आई थीं । उनका हृदय भी विरक्त एवं हरि भक्ति से परिपूर्ण था । वे अपनी सच्चरित्रता के लिये उस समय बहुत प्रसिद्ध थीं । बृन्दावन पहुँच कर इन्होंने श्री हिताचार्य महाप्रभु के पुत्र गोस्वामी श्री वनचन्द्र जी महाराज से दीक्षा ग्रहण की । जो धन घर से लाये थे, वह इन्होंने गुरु सेवा और साधु सेवा में लगाकर धन संग्रही वृत्ति से भी निश्चन्तता प्राप्त कर ली । बृन्दावन के अनन्य निष्ठ विरक्त समुदाय में इनका नाम प्रमुखता से लिया जाने लगा ।

इनका जीवन आधार श्रीहित वाणी में वर्णित नव-दम्पत्ति विहार विचार ही बन गया था । श्रीहित महाप्रभु की वाणी में ही इनके तन-मन-प्राण तन्मय से हो गये थे । हित वाणी के अतिरिक्त और कुछ सुनना बोलना या मनन करना इनको प्रिय नहीं लगता था । प्रातःकाल चतुरासी वाणी के किसी एक पद को पढ़ते और दिन रात उसी की भावना में छके रहते ।

इनकी भावना नवद्या भक्ति के नव सोपानों से ऊपर स्थित हो चुकी थी, अतः उन्हें भागवत आदि की वे कथाएँ जिनमें इनके सुकुमार प्यारे को थोड़ा भी श्रम होता हो, अच्छी नहीं लगती थीं ।

ठीक ही है निकुञ्ज लीला भावना में जिनका प्रवेश नहीं है, उन्हें ब्रज-लीला के माध्यम से भक्ति मार्ग का ज्ञान भागवत से सुगम हो जाता है । किन्तु जिन्होंने प्रेम के पूर्ण रूप रसोपासना के मार्ग को प्राप्त कर लिया है, उनके मन में ब्रजलीला के प्रति उतना लोभ नहीं होता । इसी कारण नेहीं नागरीदास जी को निकुञ्ज लीला के अतिरिक्त और कुछ भी सुनना प्रिय नहीं लगता था । इस रस से अपरिचित लोग इन्हें बार-बार श्रीमद्-भागवत सुनने का आग्रह करते, तब ये लीला रस निमग्न मौन ही रह जाते, वे इनकी मौन धारणा से खुब्ब होकर इनके गुरुजी से चुगली तक भी कर देते, संत नागरीदास कुछ भी न कहते चुपचाप सुनते रहते ।

एक दिन मार्ग में आते हुए इनके गुरु पुत्र गोस्वामी श्री नागरवर जी ने कुछ भागवत कथा प्रेमी भावुकों के आग्रह से श्री नागरीदासजी से कहा-

कि आज तो भागवत कथा सुनने के लिये चलो और अन्य अवतार कथाओं में भले ही आपका मन न लगता हो, किन्तु आज तो दशम स्कंध की कथा होगी ।

गुरु पुत्र भी गुरु सदृश ही वन्दनीय और पूज्य-सेव्य होते हैं, यह विचार कर इन्होंने उनकी आज्ञा स्वीकार कर कथा सुनने चले गये । कथा प्रारम्भ हुई, व्रज लीलाओं के प्रसंग सुने जब धेनुकासुर बघ लोला का प्रसंग आया, उस में उन्होंने सुना कि प्रभु ने धेनुकासुर को पछाड़ दिया । यह प्रसंग सुनते ही धड़ाम से गिर पड़े और उदास हो गये, थोड़ी देर मौन रहे और उठ कर बहाँ से चल दिये ।

श्री गोस्वामी जी महाराज ने आग्रह एवं शपथ पूर्वक रोकते हुए पूछा कि आप क्यों जा रहे हैं ?

नागरीदास जी ने भाव विभोर होकर अपने नित्य चित्तन, तत्त्व को स्पष्ट करते हुए कहा :—

“चिन्तुक सुचारु प्रस्तोइ प्रबोधित ।

तिन कर कहु गदहन पद सोभित ॥”

सुनते ही हित तनय गोस्वामी जी समझ गये कि नागरीदास जी की भावना ‘हित-चौरासी’ के सातवें पद पर चल रही थी । वे चुगुली करने वालों को बहुत ही फटकारते हुए बोले, भावना लीन साधकों की छेड़छाड़ करना ठीक नहीं । इस घटना से उत्तम रसिक जन नागरीदास के भावना पूर्ण हृदय को भली-भाँति समझ गये थे । सारे मानसिक विकारों को त्याग कर—

‘सब सों हित निष्काम मति दृन्दावन विश्वाम ।

राधावल्लभ लाल को हृदय ध्यान मुख नाम ॥’

के अनुसार हित महाप्रभु प्रदर्शित भावनाओं में इनका चित्त रम चुका था । इनके सरस-सरल चित्त एवं उदात्त विचारों से इनके गुरुजी इनपर बहुत प्रसन्न रहते थे । किन्तु कुछ लोगों को इनके दिनों दिन बढ़ते भजनोत्कर्ष को देखकर श्री नागरीदास के प्रति अधिक जलन होती थी । इस नेहीं को कोई भी पराया नहीं लगता था ।

एक दिन प्रातःकाल जब आप श्रीहित-चौरासी जी के ४६ उन्नचासवें पद की भावना कर रहे थे :—

देखि सखी राधा पिय केलि ।

ये दोऊ खोरि, खिरक, गिरि गहवर विहरत कुंवर कंड भुज मैलि ॥

पद में गहवर वन की लोला भावना से प्रवाहित होकर आप वरसाना ग्राम गहवर वन में जाकर पर्वत मानगढ़ की कपरी गुफा में निवास करने लगे । वहाँ के मनोहारी हृषयों ने इनके मन को वश में कर लिया । गहवर वन के चारों ओर हरी भरी लताओं में चाहे जब श्याम आ जाते हैं कभी भी श्री श्यामा जी भी आ जाती हैं । कभी-कभी दोनों गलवहियाँ डालकर आ जाते हैं । कभी फूल लेने, कभी नये-नये खेल-खेलने, युगल किशोर पधारते रहते हैं ।

पर्वत पर निवास करते इन्हें बिना भोजन के तीन दिन व्यतीत हो गये थे । नयी-नयी भावनाओं से उन्हें देखने के लिये बेचेन हो गये थे । एक बार रात्रि में अचानक लता निकुञ्ज की झुकी हुई डाली को उठाकर श्री ब्रजमणि श्री श्यामा जी प्रकट हो गई । श्री नागरीदास के नेत्र अधीर होकर अपलक दर्शन करने में मुग्ध हो गये थे । जैसे इन्हें जीवन का सर्वस्व मिल गया हो । श्रीराधा बोलीं ! लीजिये प्रसाद पाइये—कहकर अमृत तुल्य प्रसाद निज कर-कमलों से प्रदान किया । पुनः आज्ञा की कि—हठ छोड़ कर ग्राम से मधुकरी करके ले आया करो । तुम्हारे भूखे रहने से हमें बहुत कष्ट होता है अन्यथा हमको ही प्रतिदिन प्रसाद देने आना पड़ेगा ।

जहाँ अपने हृदयेश मिल जायें भला वहाँ किसका मन न लगेगा । अब इनके नेहीं मन में उनका रूप देखने की लालसा तीव्र हो गई थी । रह रहकर याद आती थी :—

‘ये दोऊ खोरि, खिरक, गिरि गहवर, विहरत कुंचर कंठ भुज मेलि ।

वरसाने में निवास कर नित्य दम्पति की नव नव केलियों का नव नव भाँति अबलोकन करने लगे ।

एक दिन प्रभात से सायंकाल पर्यन्त भजन-भावना में डूबे रहे । रात्रि में चिश्चाम भी नहीं किया क्योंकि आज भावों का सिन्धु उमड़ रहा था । आधी रात बीत गई किन्तु नेहीं की नेह भरी प्रीति में कोई कभी नहीं आई । उस समय इन्होंने एक अनुपम कौतुक के दर्शन किये—आपने देखा कि समस्त गहवर वन एक दिव्य महा प्रकाश से दीप्तिमान हो रहा है, वीणा की मधुर संकार सुनाई दे रही है, मृदंग की मधुर तालों का सुख मिल रहा है इस प्रकार वादों के मधुर घोष पृथक्-पृथक् श्वरण का आनन्द दे रहे थे । सखीगणों के अनंत कंकण, किकिणि एवं नूपुरों के शब्दों से समस्त वन बोल उठा था, हर बृक्ष लता गुल्म से आनन्द टपकने लगा था ।

(८)

इस दिव्य दर्शन आनन्द से बिस्तृच्छित होकर वे गिर पड़े । तब प्रीति विवस श्रीराधा ने अपनी महा मधुर वचन माधुरी से सीचते हुए सचेत किया । नेहीं नागरीदास से श्री प्रियाजी बोलीं ! हम प्रति दिन इसी गहवर वन में विचरण करती रहती हैं, तुम में प्रीति अधिक देख के सखियों सहित दर्शन दिया है । इस समय हमें भूलं लगी है, इस समय यदि कुछ भोग लगाओ तो हम बहुत सुखी होंगे, तब रसिक श्रेष्ठ नागरीदास जी ने उसी समय निशीथ भोग लगाया, प्रिया-प्रियतम दोनों तृप्त होकर बोले! हमें प्रतिदिन इस अर्ध रात्रि के समय निशीथ भोग लगाया करो, और यहाँ बरसाने में एक मन्दिर बनवाओ तथा प्रतिवर्ष मेरा जन्मोत्सव मनाया करो ।

इतना आदेश करके वह नबल किशोरी जोरी साँकरी खोर की ओर से पर्वत के नीचे उत्तर गयी । तभी से मन्दिर में अर्ध रात्रि में निशीथ भोग के लिये शयन के समय अमनिया रख दिया जाता है, वहाँ मन्दिर भी बनवाया गया तथा प्रतिवर्ष थी राधिका जन्मोत्सव बड़ी घूमघास से मनाया जाने लगा । वह आज तक चलता है ।

इनके यहाँ उत्सव के आनन्द में वस्त्र, आभूषण समागत याचकों को, बिना किसी भेद भाव के सभी को दिये जाते थे । भोजन-प्रसादी भी उसी प्रकार उदार वृत्ति से सबको पवार्ह जाती थी ।

एक दिन इनके यहाँ एक चोर चोरी करने आया । उसने देखा कि द्वार पर सिंह पहरे पर बैठा है, उसकी दहाड़ मुनकर चोर उल्टे पैर भाग गया । इनके यहाँ सिंह और सर्प निरन्तर निस्संक भाव से रहते थे । यहाँ तक कि सिंह ने मांस भोजन करना छोड़ दिया था । सामान्य आहार पर ही साधु वृत्ति से रहता था ।

जब कभी कोई थी नेहीं नागरीदास को सताने को आता तो यह भयानक रूप से शब्द करने लगता था । जिससे इनके भजन में कोई वाधा न आती और विपदा शांत हो जाती । इन्होंने अनेकों सिंह सहश दुष्ट प्रकृति के पुरुषों को सत्पुरुष बनाया था ।

जब रसिकजनों का सत्संग होता था वह सिंह भी बड़े शांत भाव से सत्संग का आनन्द लेता तथा समय-समय पर मस्तक हिलाकर कथा का अनुमोदन करता ।

एक दिन कुछ रसिक उपासक सन्त इनकी कुटी पर पधारे, उनकी सेवा के लिये आप सभीप के ग्राम में अज्ञादि लेने को गये । इनके पीछे पीछे सिंह भी पालतू की रहा। वहाँ से सामान लेकर जब स्वामी आने

लगे तब सिंह सामने आड़ा खड़ा हो गया, नेहीं जी ने सुरजी बनाकर सामान सब सिंह की पीठ पर लाद दिया और साथ-साथ चल दिये। कुटों पर पहुँच कर प्रभु को सयन भोग लगाया और सब सन्तों को प्रसाद वितरित करके आनन्दित हुए।

नेहीं नागरीदासजी के जीवन में जैसी हित धर्म की निष्ठा है। वैसा ही सीधा-साधा सरल सुवोध अनुरागी चित्त भी है। इसी प्रभाव से सिंह सर्प आदि भी अपनी हिंसक कुटिल वृत्ति को छोड़कर साधु स्वभाव के हो गये थे। मानसी भावना परायण रहने से इनके तन-मन वचन-कर्म सब एक ही हो गये थे। इनकी साधना प्रशस्ति करते हुए विशिष्ट वाणीकार श्रीहित चाचा वृन्दावनदासजी ने लिखा है—

हित सरनागत होत मावना भक्ति प्रकासी ।

बसे साँकरी खोरि भये बानंत उपासी ॥

ब्रजबासिन यों भजे जुगल-परिकर छज सगरी ।

यही भाव हृष्ट होत प्रेम उर परस्थौ अगरी ॥

गुनगन बानी विचित्र कथि श्रीहरिवंश प्रसादबल ।

दृष्टभानु कुंचरि पद हृष्ट सुरति करी नागरीदासमल ॥

श्रीहरिवंश चरणों की अनन्य निष्ठा तथा उनकी बानी के गाम्भीर्य मर्म को प्रगट करते हुए, चरित्र की झाँकी प्रस्तुत करते हैं—

श्रीहरिवंश चरण हृष्ट अटकी मति अरबीली ।

अक्षर रस को गहर गूढ़ बानी गरबीली ॥

लाल लड़ती दरस चाह जिन यह व्रत लीनो ।

त्याग दियो जल-यान कृपानिधि दरसन दीनो ॥

रज्यो बरस गांठ उत्सव कुंचरि जुगल रहस पाई लबधि ।

श्रीनागरीदासरेस भजन हृष्ट गुरु भारग नेहीं अबधि ॥

‘चाचा हित वृन्दावनदास कृत’—“रसिक अनन्य परचावलि”

+ + +

श्री राधावल्लभीय सम्प्रदाय के अन्य वाणीकारों ने भी इनकी प्रशंसा करते हुए कहा है—

अंतरंग में मगन रहैं सन्तत सब जाने ।

सुनि धेनुक परसंग गिरे भूपर भुरझाने ॥

बन उठि चरसाने बसे जहाँ नरहरि संजोग ।

त्यियो रुद्रमुख सौंगि के प्रयट निशीथी भोग ॥

बनमाली गुरु पाइके व्यास सुबन गुन ही भनै ।
रसिक नागरीदास की बानो हित निजु रुचि सुनै ॥

‘गोविन्द अलि कृत—“अनन्यरसिक गाथा”

रसिक सन्त श्री घुबदासजी भी इनके गुणों के प्रशंसक हैं—

नेही नागरिदास अति, जानत नेह की रीति ।

दिन दुलराई लाड़िली, लाल रंगीली प्रीति ॥

व्यास नन्द पद कमल सौ, जाके हड़ विश्वास ।

जिहि प्रताप यह रस कहाँ, अरु वृन्दावन वास ॥

भली भाँति सेयो विपिन, तजि बन्धुन सौ हेत ।

सूर भजन में एक रस, छाड़चौं नाहिन खेत ॥

“मत्त नामावलि”

इनके चरित्र के उपसंहार में भगवत् मुदितजी ने इन्हें द्वितीय सेवक के समान माना है—

हित धर्मन में उत्तम निवटचौ । मनहु दूसरो सेवक प्रकटचौ ॥

+ + +

चरित अनंत कहाँ लगि गाँऊ । गुन सागर को अन्त न पाऊ ॥

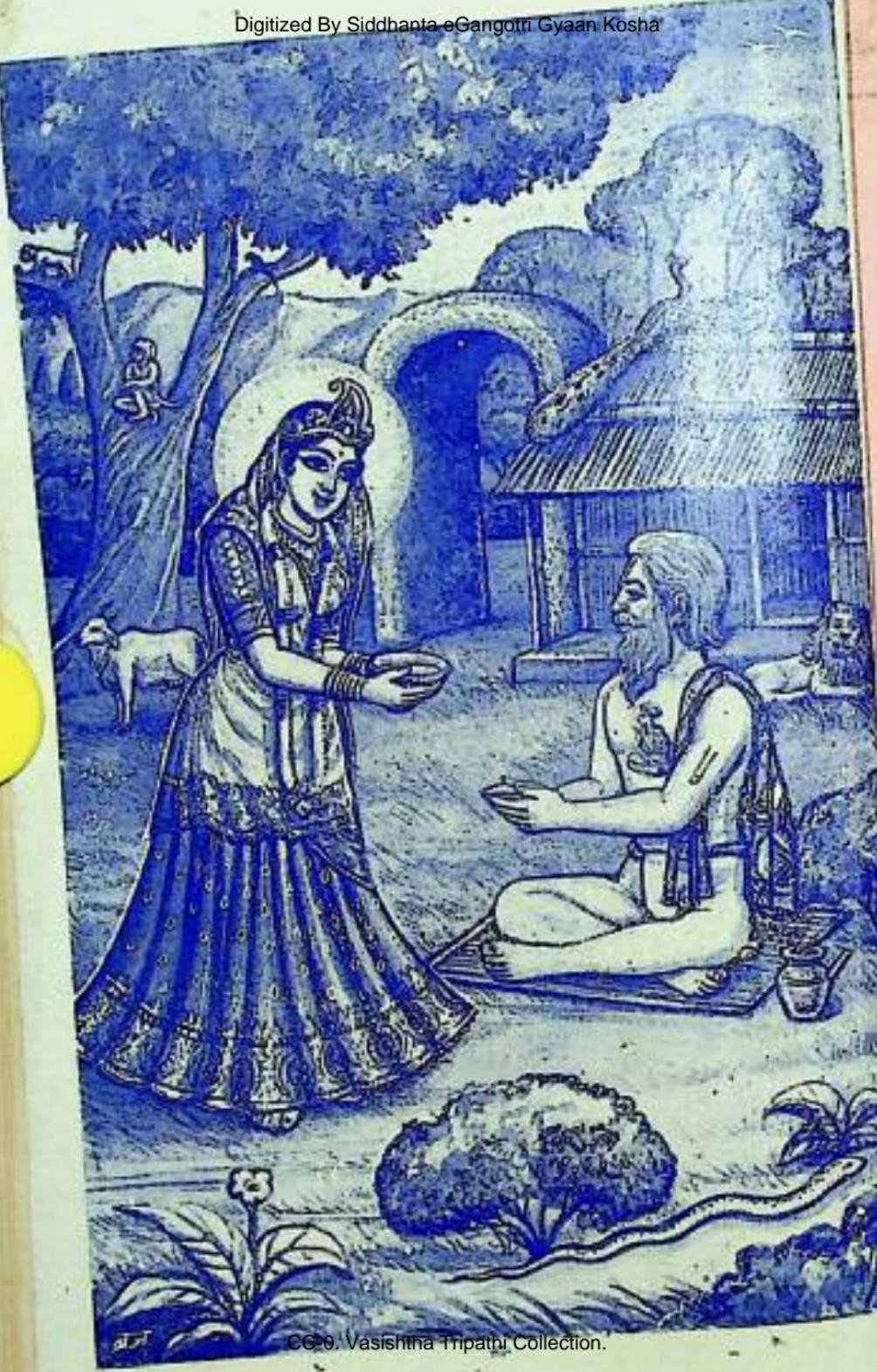
इस प्रकार इनके चरित्र से अनन्य धर्म को दुर्लभ स्थिति स्पष्ट होती है,
तथा प्रियतम की प्राप्ति कितनी तादात्म्य वृत्ति से होती है । यह स्पष्ट है—

ओकिशोरो चरण रज लिप्तु

बाबा किशोरीशरण

कृष्णमाकुंज, दुसायत





चित्र परिचय :-

श्री नागरी दास जी की रहनी

राग सारङ्ग

सुनि रहनि नागरीदास की ।

कर करवा गूदर तन जीरन मधुकर वृत्ति पुनि तास की ॥
 महा विकट वैराग लही जिन सम्पति रास विलास की ।
 युगल रहसि भावना प्ररायन मनु अलि दम्पति पास की ॥
 गिरि कन्दरा रहें वन गहवर जग मन वृत्ति निरास की ।
 सिंह सर्प जिनके ढिंग खेलैं रञ्चक सङ्क न तास की ॥
 विना अहार तीन दिन बीते दरसी मणि व्रजबास की ।
 दियो प्रसाद तक पुनि बोली बोलनि परम हुलास की ॥
 माँगि खाय नित ह्याँ को लावै तजि हठि बैठनि आस की ।
 लेत प्रसाद प्रेम अति सरस्यौ भई मति विपुल प्रकास की ॥
 जान्यों चरित कुंवरि को जब तब बानी भई अकास की ।
 कर विस्तार जनम लीला सुदि आठे भादों मास की ॥
 लली जनम सोहिली प्रगट भयो बानी फुरी अनियास की ।
 वृन्दावन हित व्यास सुवन दई खोलि लवधि रस खास की ॥

—“चाचा वृन्दावन दास जी कुर”

“मत्त प्रसाद देली”

पद संख्या—६७

ॐ श्रीराधावस्त्रभो जयति ॥
ॐ श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ॥



॥ जे जे श्रीहरिवंश ॥

* श्रीराधाबलभो जयति ॐ
कृ श्रीहित हरिवंशचन्द्रो जयति ॐ

अथ वाणी

श्री नेहो नागरीदास जी महाराज
सिद्धांन

[१]

राग-रामकली

स्वाहा शक्ति होम की जैसे अैसे ही रति दम्पति जान ।
आकरषत निज अलि समाज सुख राखत उर अभि अन्तर आन ॥
ऐसे ही अनुमान जान जिय जैसे पीजत पानी छान ।
नागरीदास गुरु पद प्रसाद तें परं जिय सरस सलोनी बान ॥

[२]

मनुआ में तू बहुत जतन करि सिखयो ।

रसिक सिरोमनि व्यास सुबन जू विमल भजन तोहि दिखयो ॥
अब तौ और चलन नहि बनिहैं अपनौं करि प्रभु रखियो ।
नागरीदास भजन छोग ढरि है असेंगति चितवत विषयो ॥

[३]

सहै को सुहूद भजन की भीर ।

रहै न काह की माम मामले विराजत धरमी धीर ॥
वे पर बाही भक्ति की पात्र हिये धरि बस्तु गम्मीर ।
नागरीदास अल्लक लड़े अविचल सोमिति सुहृत सरीर ॥

[४]

सुख सरीरी साधु सजाती ।

तई सुहृद भजन के पाद्र विमल वस्तु भरी छाती ॥
 धरमी भरमी मेरे मन मिल मंगल मत मति माती ।
 नागरीदास बड़भागन पईये सुकृती सुजन सजाती ॥

[५]

राग-नारी

प्रान प्रिया मम सुकृतनै को फलु ।

सर्वंस भेरी जिय की जीवन और नहीं मन क्रम वच ते बलु ॥
 उयों कण मणि आधार सिंगार सब अंखियनि जिन ओट होहु पलु ।
 नागरीदास प्रिया सुख संपति जैसे मीन दीन पुनि-पुनि जतु ॥

[६]

दंपति विलास वारि॒ मन मोन वृत्ति है ।

ब्यास सुबन सुहृदै बल उपजत अलक लड़े की कौन कृति है ॥
 मोद विनोद भोगबत भोगी अवगुन गति रति दसा तिरत है ।
 अकह अगाध अगम निरवधि निधि कापै ऐसी अधिर घिरत है ॥
 मञ्जल मय मकरंदी मृदु मधु पान मुदित मति मत्त फिरत है ।
 रसिक नरेस वचन वर सदिका॑ नागरीदास निज लीन भृत्२ है ॥

[७]

भजन पहुँच को कठिन खरी है ।

सावधान मति रति सौं चलनौं पग धरि गाढ़ी ब्रेम गरी है ॥
 दसा समेंटि ढरे ढेंग यहई यहई टोटै६ प्रकृति बिगरी है ।
 श्री गुरु प्रसाद वस्तु सौं जोरे रहि सेंभार में मन भगरी७ है ।
 श्री रसिक नृपति के पाछे लागे सुखद भक्ति सद संपति धरी है ।
 और न बल वित नागरीदास श्रीब्यास-सुबन जू निधि सगरी है ॥

१- पुष्पों के, २- जल, ३- उपकारक, ४- बलिहारी, ५- दास, सेवक,
 ६- कसर, ७- भागने वाला ।

सिद्धान्त

[८]

व्यास सुधा रस सागर तें प्रगटे शशि श्रीहरिबंश गुसाई ।
 न घटे छिन ही छिन होत उदोत जु कीरति तीनहुँ लोकन छाई ॥
 चकोर अनन्यन काँ मधु प्याय दिखादत केलि ज्याँ दर्पन झाँई ।
 भइं सब नागरीदासि खवासि श्रीराधिकावल्लभ जू मन भाई ॥

[९]

अति निविड़ कलि कलुष तिमिर हारी,
 उदित वृन्दाविपिन व्यास कुल दीप जै ।

जगत मंगल करन जे तब पद सरन
 उदित नित रसिक बरदान दीनी अझै ॥

लाडिलीलाल कलकेलि विस्तारनी
 सुसुख वानी विदित जगत कीनी ।

विविध रस भेद गुण नगन मंजुसिका^१
 गहव गुह जननि काँ सुनिधि दीनी ॥

कर्म धर्मन खंड वृत्ति नेमन दण्ड थापि
 परसाद रति गति न दूषित भई ।

चले भागोत भत गूढ श्रुति सार मथि
 पेति पंडितन मान ठानि अद्भुत ठई ॥

कुंवरि वृथभानु नंदनेदन आधीनता
 उमगि हिय प्रीति को रोति गाई ।

मित्रजार पुलिन दुलराय अनुरागिनी
 नागरीदास बहु भाँति भाई ॥

[१०]

कल कालिदि कुंवरि कहना कर ।

अतुलित आनेंद रासि रमीलो विविध विनोद विहार सार सर ॥

ललना लाल मराल मोद मद सेवत कोमल ललित केलि घर ।

मृदु माधुरी मकरंद अंबुकन छिन छुबत नवने नव सुख भर ॥

१- पेटी, २- यमुना, ३- नम्रता ।

कमल परग्राम प्रेम रस पागे खेल सुहेल पवित्र पुलिन पर ।
हितकारी व्यारो प्यारे की नागरीदास ललित पाइन तर ॥

[११]

व्यास सुबन पद प्रीति बढ़ावत ।

रसिक सिरोमनि वर वानी रति तेई तेई कुंवरन भावत ॥
कहणा कर श्रीराधावलभ बृन्दाविधिन वसावत ।
नागरीदास तिन कों सुख सुलभ श्रीहरिवंशहि गावत ॥

[१२]

जेजे श्रीहरिवंश निवाजे ।

फूले फिरत माधुरी माते बृन्दा - विधिन विराजे ॥
निषट निसंक निरसंसं कीने मुदित भजन बल गाजे ।
नागरीदास ताहि सुलभ स्यामा सुख जा उर व्याससुबन पद छाजे ॥

[१३]

जहाँ श्रीहरिवंश विमल जस नाहीं ।

विद्यमान होंहि जो मोहन मेरे चित न खटाहीं ॥
बचन विचित्र व्यासनंदन के रमि रहे उर मन भाहीं ।
रसिक सिरोमनि पद प्रताप बल नागरीदास सुख छाहीं ॥

[१४]

मेरे श्री व्यास सुबन चरनन बलु ।

रसिक सिरोमनि सुखद सरन विनु देखे टकटोरि कहौ नाहीं लतुरे ॥
श्रीहरिवंश सुरस के हीने जरत वर्त उवरत नाहीं पतु ।
नागरीदास कोऊ सिर न सहाई भटकत फिरत अंध कर्मठै बल ॥

[१५]

उदित मुदित मन नैन डहडहे ।

वर विहार रस मत्त मधुहि पी प्रगदत मुख मद मोद गहगहे ॥

१- कृपा की, २- ललक, ३- कर्माभिमानी ।

जागर निसि आगर कल क्रीड़ा घटे न अंग अंग ललक लहलहे ।
नागरीदास न्योछावर छवि पर सुरत सुरझ सुख चिह्न चहचहे ॥

[१६]

व्यास सुबन मो निधने को धन ।

क्रम क्रम कष्ट कष्ट करि पायी जतन जतन के लगायौ जब मन ॥
रास विलास माधुरी अंचबत कीनौ धाम हचिर वृन्दावन ।
श्रीहरिवंश कृपा नागरीदास अब पकरथौ वृषभान सुता पन ॥

[१७]

श्रीहरिवंश चरण विश्राम ।

साधन आराधन पुरुषारथ श्रीहरिवंश चरन सुख धाम ॥
सीतल रसद विसद गुन गन मय श्रीहरिवंश भजन निहि काम ।
श्रीहरिवंश सेइबौ स्वारथ सुधा विमल बानी अभिराम ॥
जो चाहै वृन्दाविपिन माधुरी श्रीहरिवंश सुमिर वर नाम ।
श्रीहरिवंश रति किये नागरीदास सदा सुगम सुख स्थामा-स्थाम ॥

[१८]

श्रीहरिवंश चरन कीजे रति ।

व्यास सुबन साधन आराधन मन क्रम बचन यहै उत्तम मति ॥
सोई तब आचार भजन विधि रसिक सिरोमनि तजि न आन गति ।
जौ पे द्रये अनन्य नृपति जू नागरीदास सुख सुलभ कुंवरि पति ॥

[१९]

श्रीहरिवंश चरन आनन्द धन ।

वरघत संतत सुखन सुजन हित पावन पाँइ प्रान जीवन धन ॥
मञ्जलरूप माधुरी मूरति सुजन अवधि गंभीर गुनगि गन ।
श्रीव्यास सुबन पद सद शुभ संपति सदा प्रकासी नागरीदास मन ॥

[२०]

श्री व्यास सुबन पद रसद रसाल ।

चारु चरन नख मनि मन गुन भर धर वर विमल कंठ कल माल ॥

जसरस सकल सुखन परि पूरन पावन पाँड प्रनत प्रतिपाल ।
श्रीहरिवंश अन्ध्र ! जुग जीवन नागरीदास सुचल यह चाल ॥

[२१]

प्रथम सु सेवक पद शिर नाऊँ ।

करहु कृपा दामोदर मोपर श्रीहरिवंश चरन रति पाऊँ ।
गुण गम्भीर व्यासनंवन के तुब परसादु सुजस रस गाऊँ ।
नागरीदास के तुम ही सहाइक रसिक अनन्य नृपति मन भाऊँ ॥

[२२]

राग—बिलावल

श्री हरिवंश चरन सुखदाई ।

अति आनंद सकल गुण आलय सुमिरत ही उर सीतलताई ॥
व्यास सुवन सेवन पुरुषारथ परमारथ सरसाई ।
नागरीदास जे भक्ति नृपति बल वृन्दाविधिन माधुरी पाई ॥

[२३]

श्री हरिवंश सुखद रस सार ।

नेकही नुकतारे रीझि देत निधि निषट निसंक उदार ॥
भक्त अनन्य सदा प्रतिपालक रसिक सिरोमनि प्रान अधार ।
नागरीदास हित अवतरे माधुरी कुंचरि केलि कल ललित विहार ॥

[२४]

श्रीहरिवंश विराजमान ।

रसिक सिरोमनि समरथ संपति सकल सुख निधान ॥
सुन्दर सुकुंचार सुहृद^१ सुजस समूह सुजान ।
नागरीदास सब ही कौ सर्वसु व्यास सुवन जू प्रान ॥

[२५]

सरन रहत संपूरन आनंद ठाडे ।

व्यास सुवन पद सेवी संतत फूले फिरत सरस मन बाढे ।
रसिक सिरोमनि अंध्रि बलहि यौं वर नागरीदास गुण आढे^२ ॥

१-चरण, २- तत्त्व, ३- अवित होना, ४- मित्र, ५- अदृपटे ।

[२६]

विसद रसद सेवहु पद मूल विचारी ।

श्रीहरिवंश चरन मृदु अभयद आनंद घन सब सुख वृन्दावन चारी ॥
जाचं द्रवत सुभग सुख सम्पति सुधा समूह सुजस रस धारी ।
नागरीदास येई पद हित वित । सदाई सुलभ विहार विहारी ॥

[२७]

जे व्यास नंद आनंद गुन गावहि ।

उत्तम भक्ति भजन परमारथ श्रीहरिवंश चरन सिर नावहि ॥
सोई आचार विचार सकल मति रसिक सिरोमनि ज्ञ मन लावहि ।
नागरीदास जो यह सुख सर्वस लाल लड़ती दिन मन भावहि ॥

[२८]

जिनके व्यास सुवन ज्ञ सर्वसु ।

तेई सकल गुनन पर पूरन रहै पौवत वृन्दाविपिन केलि रसु ॥
छिन छिन सुख संपति के भोगी दंपति सहज भये अपने बसु ।
सुख ही सुगम लड़ती लालन नागरीदास कलर किये यहे कसु ॥

[२९]

श्रीव्यास सुवन ज्ञ की कोमल बतियाँ ।

ताते जतन जतन कं पकरहु लगहि ललित मृदु छतियाँ ॥
यह सुख साधन सावधान ह्वै वर विहार की पावी घतियाँ ।
रसिक सिरोमनि पद आराधन नागरीदास कल उत्तम मतियाँ ॥

[३०]

जे जे श्रीहरिवंश उपासी ।

व्यास सुवन आनंद पद उर धरि, हैं वृन्दावन अविचल बासी ॥
वानी विमल गुसाई ज्ञ की कुंवर केलि रस सुखद निवासी ।
श्रीरसिक सिरोमनि रति नागरीदास सुखही सुवस निकुञ्जविलासी ॥

१- सम्पत्ति, देवभव, २- चैन, ३- तत्त्व, सार

वाणी श्रीनेही नागरीदासजी महाराज

८]

[३१]

श्री वृषभानु नृपति की चंटुली१ ।

कहनासिथु उदार सिरोमनि विषदा दारिद्र मैटुली२ ॥
 कहा कहीं सत भाव सहस सखि मोसे कृपन समैटुली ।
 नागरीदास रूप गुन निधि प्रिया लागीये रहौ मम घंटुली३ ॥

[३२]

इहि अनभौ४ रंग रुचि जाइ ।

स्याम चरण रति सुचि सँभार करि अनभौ सहित विमल गुन गाइ ॥
 जहाँ तहाँ सहज विचार सार मयि मनही मन ता मध्य समाइ ।
 माया कौ नटबत सब हांसी काक समाज न हँस समाइ ॥
 तहाँई चित वित जहाँ जानिये ताही हित करि नैन लगाइ ।
 नागरीदास इतनोई जीवन भजन शुद्ध गधि काल चिताइ ॥

[३३]

भागन मिले भजन कौ मर्मी ।

संतोषी सुख सुहृद सनेही श्री हरिवंश धर्म हड़ धर्मी ॥
 कोमल कृपाल कुसल कल५ करनी सुजन सजाती सँधाती६ सरमी७ ।
 रोति समीति समार रसिकमनि नागरीदास जीवन धन जनमी ॥

[३४]

श्रीव्यास सुबन झू कौ अद्भुत ऐङ्डौ८ ।

रोति समीत जीत जहाँ दुर्लभ लाड़ ओहटो९ ऐङ्डौ वैङ्डौ ॥
 मातीचाल लक्षित लखि भाँतिन लाड़ लड़ी बन रूप उलंडौ १० ।
 नागरीदास भर भीर भेदनि की पूरन परम प्यार कौ छंडौ११ ॥

१- लाडिली, २- मिटाने वाली, ३- कंठ, गला, ४-अनुभव, ५- सुन्दर, ६-संय-
 देने वाला, साथी, ७- लाज रखने वाला, ८- मार्ग, ९- गम्भीर, गुप्त, १०-उ-
 लने वाला, ११ छोटप्रिया, राज्ञीकृत Tripathi Collection.

[३५]

लोभ लाहुक लाघव कहाँ बनि आवत ।

अद्भुत खेल मेल मंगल कौ देखत हो बने कहत न कहि आवत ॥

परम प्यार प्रीत की रीति रति जिन भाँतिन खिलवार खिलावत ।

रसिक नृपति की बातें धातें नागरीदास कोई भेदीय पावत ॥

[३६]

भजनी क्यों धरि है उपहासहि ।

अपनी वस्तु नौहरी काजं सहें जगत की त्रासहि ॥

सुहृद सनेही अपनी अपनी आतम मान करहु वस बासहि ।

वे परचाही व्यास सुवन कौ बल है नागरीदासहि ॥

[३७]

सहै को सुहृद भजन की भीर ।

रहै न काहू की माम मामिले विराजत धर्मो धीर ॥

वे परचाही वस्तु कौ पात्र हिये धरि वस्तु गंभीर ।

नागरीदास अलक लड़े अलबेले चाल सोभियत सुकृत सरीर ॥

[३८]

कौन ठौर गायो कौन लड़ायो कौन दुलरायो कहाँ चित अटकयो ।

कौन ठौर भायो कौन पायो कौन खेल जामहि मन लटकयो ॥

अमित अमानी रमित रमानी अपेष पेषयो चटकयो झटकयो ।

जाको काहू गंध न फरस्यो सुधा सार लोचन भर गटकयो ॥

द्रवत महा मकरंद मधुब्रत पी निसंक कहुँ पल नहि मटकयो ।

नागरीदास वलि रसिक नृपति की अलक लड़ौ कहुँ लाड़नि ठटकयो ॥

[३९]

जै श्रीब्यासनंदन ज्ञ उदार रमित रूप सुख सुडार ।

कोमल कमलीय कुंवर कोचिदर सुकुंवार ॥

बाली श्री नेही नागरीदास जी महाराज

१०

करना करि कल किशोर करम धरम भंजि जोर,
धर्म धीर गुन गंभीर रसिकनि आधार।
नागरीदास निपुन नेह नव नव रति नाना गति ललित आगार॥

[४०]

मेरी अँखियन की पीड़ै ।

अबलंबित जीवन व्रत सुन्दरि कहत खैचि हौं डीड़ै ॥
हौं बलि अंतर्वृति होहु नित चटपटात मन हीड़ै ।
नागरीदास बलि सुधि न औरहि उर धरि रस की बीड़ै ॥

[४१]

राग-केवारी

अपनी लली यह लाल लड़ावत ।

केलि कौतुक श्रीब्यास कुंवर जू ठौर ठौर दुर्लभ दुलरावत ॥
महा मुदित मकरंद मधुव्रत धरि अद्भुत अघट अलभ निधि पावत ।
प्रेम प्रचार उचार वचन वर नागरीदास बहु वानिक बनावत ॥

[४२]

राग-विहारी

भजन न होई खेल खिलौना ।

को काचे ढोरे सौं बाँधि खिलावत प्रबल सिंघ को छौना ॥
अति ही अगम अगाध लग्यौ फल कहि कैसे कर पहुँचे बौना ।
नागरीदास हरिवंश चरन भजि मिथुन सुरत अचौना ॥

[४३]

भजन मदंधी चाल को पेंडौ ।

रसिक नरेस लाल गरबीले को क्यों जलि आवै ऐड़ौ बेंडौ ॥
सहसा कैसे चल्यौ जात है खरोई कठिन है प्रेम को छेंडौ ।
श्रीब्यास सुबन बल बिन नागरीदास परस्यौ न जाइ मंगली मेंडौ ॥

[४४]

राग-अड़नी

पुहुप लता गृह सुमन तलप पर लाड़िली चिलास परचौ ठिकु
गौर स्थाम दुति गात गुनीले तरल तरंग तैसिये तरनि सुता दिंग ॥

१- मंडार, २- पीड़ा, ३- लकीर, आँख का मेल, ४- आकुलता, ५- ढेर, समूह
६- सीमा ।

सिद्धान्त

पावन पुलिन नलिन नाना रंग जिल प्रकास भये हैं इकमिक ।
नागरीदास प्रतिबिंब कौ संगम अद्भुत क्रोड़ा अकथ अधिक ॥

[४५]

खरोई कठिन है भजन ढंग छरिबौ ।

तमक सिद्धूर मेलि माथे पर साहस सिद्ध सती कौ सौ जरिबौ ॥
रण के चाइ धायल ज्यों घूमें मुरे न गरूर सूर कौ सौ लरिबौ ।
नागरीदास सुगम जिन जानों श्रीहरिवंश पंथ पग धरिबौ ॥

[४६]

प्रबल प्रेम वर तत्व पायो ।

जाकौ आदि अंत मधि नाहीं रसिक नृपति ज्ञ अदिख दिखायो ॥
दुर्लभ दुर्घट दुर्गम ठाहरे जाकों प्रभु अलि मारग धायो ।
नागरीदास श्रीव्यास सुवन ज्ञ अकह भजन निरवधि पकरायो ॥

[४७]

श्रीहरिवंश प्रबल वर जोरा ।

हिय बल जिय बल तन भन बाँह बल राखैं फिरत पराक्रम तोरा ॥
लाड़िलीलाल लड़ाइ निरंतर मंगल रूप भजन कौ अमोरा॒ ।
नागरीदास वृन्दावन चारी लाल सेवत रसिक नृपति ज्ञ कौ कोरा ॥

[४८]

कर वर भेद सबहि तं बाँकौ ।

ज्यों बीन सार पर धरत अंगुरिया सोई सोई सुर उपजत तिर्हि ठाँकौ ॥
याही ते अब अब कौ छीवत उमगत सरस सुरत दुहुं घाँकौ४ ।
अलि कौ उक्ति जुक्ति गहि जोरत जैसे कनक सुमंजी टाँकौ ॥
व्यास सुवन उद्धर्यो अगोचर जग पर जीति बजायो डाँकौ ।
नागरीदास बलि बलि बानो की विगत व्यक्त कर्यो रस कौ नाकौ५ ॥

१- अति कठिन, २- ठिकाना, स्थान, ३- आम का नया निकलता पौधा,
अमूल्य, ४- ओर, ५- सीमा।

[४६]

भजन समझिबौ खरौ दुहेलौ ।

बाँकी दसा प्रेम के पेंडे चल्यौ लाल अलवेलौ ॥

वे परवाही हिये वस्तु बल रसिक नृपति कुंवरेलौ ।

नागरीदास श्रीब्यास सुबन सुत सूर सपूत अकेलौ ॥

[५०]

नमो नमो जै श्री बनचंद ।

वृन्दा विपिन बिलास माधुरी परि पूरन आनंद के कंद ॥

सब भक्तनि कुल कुमुद प्रकासित श्रीहरिवंश रसिक वर नंद ।

शीश वद्ध उर मंडन नागरीदास सीतल सुभग छरन अरविद ॥

[५१]

अनन्य कहाइबौ अति ही बाँको ।

सबै दसा जब भजनहि मिलि है नेक न इतकी घाँको ॥

मन अबलंब ऊरमो^२ दम है कठिन सुपेच तहाँ कौ ।

नागरीदास कहाँ लौं मूदे पर्यौ अकासहि झाँको ॥

[५२]

काचौ पारी खायेन पचि है ।

श्रीहरिवंश भजन गद^३ सेवन जहाँ तहाँ मन ललचे कहा बचि है ॥

रसिक नरेस सुधा साधन बिनु आन सयान न रचि है ।

श्रीब्यास सुबन पद पाढो न गहें नागरीदास तरस बहु तचि^४ है ॥

[५३]

लाड़ लहल^५ कौ ओहठौ पेड़ौ ।

माती दसा गरब गुन भजन की क्यों चलि आवे ऐड़ौ बैड़ौ ॥

घरमो मरमी भेद भीतरे जामहि रति रस रंग उलैड़ौ ।

श्रीहरिवंश चरन वर बिन नागरीदास कोऊ न खखेड़ौ ॥

१- कठिन, २- तरंग, मन को पीड़ित करने वाली छ: उमियाँ होती हैं—सुख, दुःख, शोत, उष्ण, शुद्ध, पिपासा, ३- विष, ४- संतप्त होना, ५- उन्मत्त ।

[५४]

प्राननाथ प्रानजीवन प्रानश्रीतम प्यारे ।

प्रानबल्लभ प्रानरवन प्रान पोखन हारे ॥

प्रान अधार प्रान परम प्राननि में धारे ।

प्रान सिरावन श्रीव्यासनंदन नागरीदास हँ दग तारे ॥

[५५]

श्रीव्यास सुवन ज्ञ के सदिका जी जतु ।

भजन सु अमी कनी के पायेविष कौ मेरु कहा लै कीजतु ॥

परम कृपाल उदार अवधि सुख ऐसो प्रभु छाँड़ि अनत भन दीजतु ।

चितामणि प्रिय कलप तरोवर नागरीदास कंठ कटुला कीजतु ॥

[५६]

श्रीव्यास सुवन सर्वस सनमेस ।

भजन अवधि आधार अमल रस इन विन नहीं कहूँ सुख लेस ॥

श्रीहरिवंश लाड़ सचि राख्यौ ता महि पावै न लेस प्रवेस ॥

श्रीरसिक नृपति वर तत्त्व न जान्यौ नागरीदास सब ऊबटर भेस ॥

[५७]

श्रीहरिवंश सुमिरि सुख सीरे ।

सोई महल टहल के मरमी ललना लाल तलप^३ रहै नीरेः ॥

बानी विमल विलास निरन्तर सावधान धरि धीरज धीरे ।

नागरीदास श्रीरसिक मुकुटमणि समरथ तिनकी पीरनि पीरे ॥

[५८]

श्रीरसिक सिरोमनि व्यास सुवन ।

अजब अगाध अपरमित अद्भुत कीरति विमल पावन भुवन ॥

भजन उदार अवधि आनंद की विपता भंजन बारिद दवन ।

नागरीदास तिमिर^४ छवंसक श्रीहरिवंस चन्द्र सदा उवन^५ ॥

१- आधार, सन्निवेश, २- विपरीत, उल्टा, ३- शाव्या, सेज, ४- निकट,
५- अंधकार, ६- उदित ।

१४]

[५९]

लाडिली लाल कृपा कौ परम फल ।

मंगल अवधि रसिक चूडामणि सूजे श्रीहरिवंश बस्तु बल ॥
भजन सबाद अगाध आनंद निज निरवधि सुख बरखत तामें पल पल ।
दंपति प्रीति रीति कौ मुहा? नागरीदास इन न कहैं लल ॥

[६०]

दरस प्रकास पिय परस पराक्रम ।

रूप गंभीर गहुल गुन गर्वित छवि की निधि पिय अनुसरै क्रम क्रम ॥
प्रापति अन प्रापति सी अलभ लहौ अकुलाय गहै मन संध्रम ।
सौरभ समूह सबाद सुधि परी नागरीदास सिरानं ध्रम ध्रम ॥

[६१]

प्यारो श्रीहरिवंश न होतौ ।

तौ रस रीति सभीत प्रीति कौ भेदु भजन अधिकारी कोतौ ॥
लाडिलीलाल विमल जस रस बिनु जग अंधेर पर्यौ हुतौ सोतौ ।
नागरीदास प्रभु प्रगट पुकार्यौ अविवेकिन कौं अजहूं अछोतौ ॥

[६२]

जाके तुम ही तुम सौं मन लागै ।

सोई दास तास कौं सब सुख जीवन सकल जगत में जागै ॥
लाल लड़ती जू गान यशोमल२ हेमै श्याम छवि हिये अनुरागै ।
गौर सुखद पद मृदु सेवन विन नागरीदास संदेह न भागै ॥

[६३]

बिलसियै खसम कौ कमायौ ।

श्रीहरिवंश चन्द्र करना करि जामहि मन जतन कै रमायौ ॥
अद्भुत अति अगाध सुख निर्मल बर बिलास रति रंग जमायौ ।
श्रीरसिक नृपति जू कौं सब सदिका नागरीदास बड़भागनि पायौ ॥

१- तात्पर्य, अभिप्राय, २- निर्मल यश, ३- स्वर्ण ।

[६४]

राग-केदारी

श्रीव्यास कुंवर पद पदबी हाथ परे ।

सुहृदी सुजन समीत रोति रस विमल भजन कल कुशल काज सरे ॥

बानी सुभग समूह सार सुख ठौर ठौर भेदनि पकरे ।

गिरा गंभीर माँझ गुन निधि प्रिय नागरीदास कत जतन और करे ॥

[६५]

श्रीहरिवंश गिरा पहिचानी ।

ताकों और कछू नहिं साधन विमल भक्ति जा हाथ बिकानी ॥

मोद बिनोद भेद बहु भाँतिन रूप रंग रस अकथ कहानी ।

नागरीदास सुजन तेझ धन नेह निपुन वर बानी मानी ॥

[६६]

गिरा गंभीर गुननि गरबीली ।

सुजन सनेहिन के मन आवै औरन को ओहठ बरबीली ॥

श्रीहरिवंश बचन वर कल कढ़ी स्वच्छ सुछंद सुछैल छबीली ।

नागरीदास मकरन्द माधुरी रूप रंग रस रसिनि रसोली ॥

[६७]

श्रीहरिवंश गिरा मन मान्यो ।

ता कहूँ भजन रह्यो न कछु करिवै सुजन सनेहिनु सर्वसु जान्यो ।

सब जस रति रस सार सच्यो श्रीव्यास सुवन जू मन पहिचान्यो ॥

श्रीबृन्दाविपिन विलास रसिकमणि नागरीदास धनि जिन उरआन्यो ॥

[६८]

श्री बृन्दाविपिन विलास सार है ।

धीर गंभीर भीर कोलाहल बानी गुन गाढ़ो विचार है ॥

रसिकनि कों रसखान दान सुख औरनि कों अद्भुत अपार है ।

श्रीव्यास सुवन पद बल नागरीदास ताहो सों बानी हियहार है ॥

१६]

[६९]

बानी मानी जब मन होई ।

श्रीहरिवंश वचन वर भाख्यो समुझे ततु बड़ भागी सोई ॥
सुकृती सुजन सूर अलि व्रत धरि सरस सुधा सौरभ रहै ज्ञोई ॥
नागरीदास रसिक मनि ज्ञ मत विरलौ कोऊ समझे लोई ॥

[७०]

विरलौ कोऊ जाननि हारौ ।

अद्भुत रूप अनूप अनौखौ बानी विमल गरव गुन गारौ ॥
कौतुक कुशल कमनीय रमीली मोद विनोद कोलाहल भारौ ।
लाड्हिलीलाल खेल की परावधि^४ नागरीदास अनुराग पसारौ ॥

[७१]

कठिन समझिनी बानी वर मतु ।

जामहि निरवधि आनंद निरन्तर श्रीहरिवंश सुवचन सार ततु ॥
अविरल^५ सुरनिः^६ समूह सुधा मई सुहृदी सुजन होत मन रचि रतु ।
गिरा गंभीर व्यासनंदन ज्ञ की नागरीदास रस रंगनि कौ सतु ॥

[७२]

श्रीहरिवंश गिरा पद अष्टक ।

कहत सुनत ताको मन सुधरै कपटी होइ कुटिल खलु निष्टक^७ ॥
प्रबल प्रताप छ्वंस अशुभ निकर^८ रहन न पावै कंटक किष्टक^९ ।
सदगद^{१०} नागरीदास रसिक मनि कैसेहैं करि रमै मिटै मति मिष्टक

[७३]

भीतरी सेवा में मन मानै ।

निष्ट निरंतर अभियंतर रति तब हैसि प्रभु पहिचानै ॥
ठौर ठौर लालच लाहक हिये यह बहु ठाने ठानै ।

१- विभोर, मत्त, २- लोग, प्रभा, दीप्ति, ३- गुण सम्पन्न, ४- सीमा
५- अखंडित, ६- स्वर, ७- दाहक, जलाने वाला, ८- समूह, ९- कष्टकारी
१०- श्रीमहाप्रभु की वाणी, ११- विषय, विकारादि ।

अपनी कसरि छाँड़ि दिग भजन के खेलै हृदय सिरानै ॥
श्रीगुह वचन संभारि रमै तन और न उर मधि आनै ।
नागरीदास वृषभानु कुंवरि जू तिन्हें अपनौ करि जानै ॥

[७४]

श्रीहरिवंश जुगल पद जचियतु ।

विविध बिनोद मोद की परावधि निर्मल सुजस रंग रस रचियतु ॥
बानी विच्चित्र बिहार सार सुख अद्भुत भर आनेंद उर सचियतु ।
श्रीव्यास सुवन वर बैन सुपेसलै नागरीदास रंग रस रचियतु ॥

[७५]

जो मुख वर बानी नहीं कढ़ती ।

प्रगटते नहीं विमल मंगल निधि तौ भजनहि क्यों पानिप चढ़ती ॥
श्रीवृन्दावन रस रीति समोती प्रीत प्रतीति कहाँ तैं बढ़ती ।
श्रीरसिक सिरोमनि वस्तु बिना नागरीदास,

नीरस भक्ति दुनी॒२ सब रढ़ती॑३ ॥

[७६]

क्षीड़ा॑ वर मरजाद छुड़ावत ।

अब-अब टक टोलनि मधु बोलनि ठौर-ठौर दुर्लभ दुलरावत ॥
काँति भाँति में मगन होत मन चूँबि चरन गहि हियैं लगावत ।
नागरीदास विलास मोद निधि रूप अनूप रोम-रोममर्म सिरावत ॥

[७७]

यहि वर मन पति राखित करै ।

छिन छिन चित चरचित न नृपति मन पिय बिनु पल न प्रान धीरज धरै ।
सर्वसु जीवन सुभग सुन्दरी कण्ठ कौ कठुला लसत गरै ।
जुगल किशोर नेह की परावधि नागरीदास हिय जिय विहरै ॥

१८]

बाणी शीनेही नागरीदासजी महारत्न

[७६]

वानी विमल लाड़की परावधि ।

श्रीहरिवंश वचन वर निकसी बड़भागीनु जो आबै कहाँ सधि ॥
 रूप रंग रस कुशल कुलाहल जामहि अमित अगाध लवधि लधि ॥
 नागरीदास भजन कौ मरमी सुख निधि व्यास सुबन पद आरधि ॥

[७७]

अनेक भाँतिन कल खेल खिलाए ।

श्रीव्यास सुबन दाऊ दुलरावन मंगल मृदु मद मेल मिलाए ॥
 लाड़ लड़ावन मन के भावन लाड़ली लालन हिलगै हिलाए ॥
 नागरीदास सुरत सागर सुख नागरी नागर झेल झिलाए ॥

[८०]

जा पाढ़े सब भजन साज है ।

प्यारी प्यारे प्राननितैं प्रिय मोहि श्रीहरिवंश चंद जू सौं काज है ॥
 निसदिन सकल सम्पदा विलसत अलक लड़े कौ इक छत राज है ॥
 नागरीदास ललितादि संघटी५ रसिक नृपतिकौ सुहृद सभा समाज है ॥

[८१]

हिये गुन गर्वित गर्व गरुर है ।

लाड़ गहेल अलबेले पिय हिय मंडित केलि सूर है ।
 सौरम समूह साज सौं फेली उर छबीली छेलपति भाग भूर है ।
 नागरीदास रोम रस वरषत पानिप प्रकास प्यारी कौ न फूरू६ है ॥

[८२]

भूलि कोऊ अनत कहावे धर्मी ।

श्रीहरिवंश भजन सदिका कौ जब बड़भागनि हूँ है करमी ।
 अनपाइनी भक्ति कौ फल लहै व्यास सुबन भेदनि कौ मरमी ।
 नागरीदास तन हिय ठिक७ बेठै इहि मद मंगल फिरे न डीठिं८ मरमी ।

१- प्राप्त करना, २- आराधन कर, ३- लगन, ४- परिचित किये, ५- समूह,
 ६- अल्प, ७- ठिकाने, ८- हाट।

[८३]

सब सुख मुद्दा हाथ पर्यो ।

साध अगाध रसिक मनि पूरन भावे त्यो वितर्यो ॥

वे परवाह उदार ओहठीं अद्भूत ठौर अर्यो ।

आनन्द अमल अगाध सम्पदा लटेर पेच पकर्यो ॥

नित्य विहार अभूत अखंडित श्रीमुख प्रगट कर्यो ।

नागरीदास बसौ हिय बानो और रही सहजहि धर्यो ॥

[८४]

श्रीहरिवंश हिलगि को अटक है ।

लाड़िली लालन लाड़िलड़ावेन पलु-पलु प्रति रति प्रोत भटक है ॥

सुमग विहार सुदेश सुन्दरी पानिप्रबल अंग-अंग चटक है ।

नागरीदास गंभीर गरुब गुनमद मंथरे गति लाड़ि लटक है ॥

[८५]

रूप निधान भावती अति लड़ ।

जोई छिन जोई पलु निकट पाईयत है जीवन जनम सोई भागनि बड़ ॥

भाँति-भाँति की ठौर-ठौर छवि मन औखियन में परी रहत गड़ ।

नागरीदास यह अकह बात है हिय ही समझे चौप चांय चड़ ॥

[८६]

मेरे नैनाई यह जाने ।

जेतिक भीर परत अबलोकत ठौर-ठौर छवि माँझ बिकाने ।

रूप अगाध अवधि सौखि अंग-अंग रसना बपुरी कहा बखाने ।

तन मन बूढ़ि जात देखत ही कहा होइ उर भीतर आने ॥

सुधि बुधि बल बिनु चतुर चातुरी कछून सरे कोटिक जो ठाने ।

प्रान प्रिया सेमराये समझि हैं कहा कहाये आप सयाने ॥

हों तौ दारु पुतरिया प्रिया कर नचावत हित करि जैसे जाने ।

सर्वस सुख यितु जीवन बलुवित नागरीदास हम हाथ बिराने ॥

वाणी वी नेही नागरीदास जी महाराज

२०]

[८७]

राग-विलापन

गौर स्याम अंग-अंग खेले छूटि ।

अलक लूम महि रहे झूमि झिल अलभ लब्ध फबी अदभुत लूटि ॥
बाढ़त रचि रचि चौपै चिहुठरे चित पलु-पलु मुख मकरंदी धूटि ।
नागरीदास प्रात कोलाहल मोद विनोद परत दोऊ टूटि ॥

[८८]

श्रीहरिवंश ज्ञ के भजन उजारे ।

श्रीवनचन्द्र विनोद मोद निधि प्रान नाथ नैननि के तारे ॥
श्रीव्यास सुबन बानी विचित्र रति कौतुक क्लेलाहल उरधारे ।
परमानन्द प्रोति की परावधि छेल छबीले सुखनि सुढारे ॥
मकरन्दी मृदु मधु अगाध पिय गूढ गम्भीर गरब गुन गारे ।
नागरीदास वृषभानु कुंवरि ज्ञ की राजकेलि तें निमिष न न्यारे ॥

[८९]

राग-कान्हरी

रच्यो न और दूसरी लाल करुना कर ।

बानी ललित सुधा-निधि पोहयो दिये हियं फिरत नेह भर ॥
अलक लड़ी निरमोलक हीरा रास्यौ हिय नैननि प्राननि पर ।
जो तुम्हें चौपचाड़ भजन की संततरे रहौ नागरीदास पाइन तर ॥

[९०]

जामें मोद विनोद केलि सिधि ।

हरख हेत भरी हंस नन्दनी खेल मेल सब सुख सद की निधि ॥
ललना लाल विलास विचित्र वर रोम-रोम रमि मरम रहे विधि ।
सौरभ सोकर जल रस पोषत नागरीदास मृदु महल दहल गिधि ॥

[९१]

बाढ़ी जमुना जल कल केलि ।

कुंवरि कुंवर सब सेंग सखी लै खेलत आनन्द झेलि ॥

१- लालसा, २- चटपटी, ३- आसक्ति, पकड़, ४- चटपटी, ५- सदा, ५- तस्वीर
रता से ।

भरत धरत कोलाहल उमगे नागर सुभग नवेलि ।
 छिरकि चले प्यारी जब प्रीतम पकरे पट गर मेलि ॥
 उदित उजागर अंग रमीलो भीजे वसन सुहेलि ।
 मंगल रूप संपदा प्रगटी उपमा सब पग पेलि ॥
 फैल रही मोहन के नैननि प्रिया प्रेम की बेलि ।
 नागरीदास बलि विवस जानिके पति छतियाँ लगि खेलि ॥

[६२]

राग-रामकली

सब सुख तरनि सुता वरखावत ।

कमल विमल सौरभ मृदु सीकर सीचत हियौ सिरावत ॥
 मंगलकारी प्यारी पिय की पल-पल केलि बढ़ावत ।
 सकल सुगंध सु सीचत नागरीदास छिन-छिन ऊपर छावत ॥

[६३]

राग-गोरी

जिनके श्रीहरिवंश सहाइक ।

तेई सुजन भजन अधिकारी श्रीवृन्दावन घन वसिवे लाइक ॥
 अलक लड़े! आनंद भरे ढोलत सिर पर व्यास सुबन सुख दाइक ।
 कुंवरिकुंवर तिन्हें सुलभ नागरीदास रसिक सिरोमनि केलि गुनगाइक ॥

[६४]

श्रीहरिवंश विमल वर बानी ।

वृन्दाविपिन विलास माधुरी पूरन रसिक अनन्य सुख दानी ॥
 फूले फिरत मुदित मन रंगमगे श्रीव्यास सुबन रस जस के गानी ।
 नागरीदास रसिक वर सेवत सुलभ विहारी विहारिनि रानी ॥

[६५]

श्रीव्यास सुबन पद पंकज रति करि ।

रसिक सिरोमनि सावधान हूँ बानी सुजस सुधा उर में धरि ॥
 रस सागर हरिवंशचन्द्र ज्ञ गुन आगर वर आनंद रंग भरि ।
 सर्वस नागरीदास गुसाइ तौ आवे सहज सुख कुंवरि कुंवर ढरि ॥

१- दुलारे ।

[६६]

कुशल कुंवर कमनीय किशोरे ।

कोमल केतक अंग कनक कौ गुन गनं गर्वं गहिलरे गोरे ॥

रसिक नरेस प्रताप किरन कन कर्म धर्म मद मान मरोरे ।

भजन चाल नव लाड़ लड़ावन जामें मोद बिनोद न थोरे ॥

विष्णु विहार विशद जिनके हित ललना लाल फिरत चक ढोरे ।

लोभ लाभ नौखे १ नाना विधि नागरीदास बानी नग छोरे ॥

[६७]

राग-सोर

बरसानो हमारी रजधानी रे ।

महाराज वृषभानु नृपति जहाँ कीरतिदा सुभ रानी रे ॥

गोपी गोप ओपर सौं राजे बोलत मधुरी बानी रे ।

रसिक मुकुटमणि कुंवरि राधिका वेद पुरान बखानी रे ॥

खोरि सांकरी मोहन दूँक्यौरे दान केलि रति ठानी रे ।

गहवर गिरिवन वीथिनु विहरत गढ़ विलास सुख दानी रे ॥

दूध वही मांखन रस घर-घर रसना रहत लुभानी रे ।

पान करन कौं अमृत सार सर भानोखर कौं पानी रे ॥

सदा सर्वदा पर्वत ऊपर राजत श्रीठकुरानी रे ।

अष्ट सिद्धि नवनिधि कर जोरे कमला निरखि लजानी रे ॥

दीने लेत न चार पदारथ जाचक जन अभिमानी रे ।

नागरीदास वास बरसाने भागमती जग जानी रे ॥

[६८]

राग-बहु

फूलन के नव सत तन साजे ।

फूलनि की कंचुकी फूलनि कौ लहंगा फूलनि की सारी अंग अंग विराजे

कंकन बलय किकिनी नृपुर फूल बढ़ावन फूल ही सौं बाजे

फूलौ आलिगन फूल हीके चुंबन फूले मुख मधुपिये फूल हीसौं भाजे

१- अनोखे, २- शान से, जोभा से, ३- छिपा ।

फूलहीके निकुंजघर फूलकी तलपपर फूल की बरखत फूलही के काजे ।
 फूल के सहा उलास फूली सखी आस पास,
 नागरीदास फूले फूल खेल काजे ॥

[१००]

चृन्दावन बाग फूलवारी ।

कौतुक अबधि कंतकल कौतुकी मुकुलित मन खेलत सुकुंवारी ॥
 अंग सुधंग नचाइ नेह निधि विचित्र विलास भेद भर वारी ।
 खग द्रुम जंगम जन सद तोषे नागरीदास संग सुखकारी ॥

[१००]

विहृत विपिन फिरत रंग ठुरकी ।

हरषि गुलाल उड़ाइ लाड़िली सम्पति कुसुमाकर की ॥
 कसूंभी सारी सोधें भीनी ऊपर बंदन बुरकी ।
 चोली नील ललित अंचल चल झलक उजागर उरकी ॥
 मृदुल सुहास तरल हृग कुडल मुख अलकावलि घरकी ।
 नागरीदास खेलसुख सनि रहे मननि ललकि नहि मुरकी ॥

[१०१]

रितु वसन्त फूलत बन राजी ।

ललित लता मिलि अग्नित रंगनि भाँति-भाँति तह सभा समाजी ॥
 मधुप मोर चातक कोकिल फुल मनहर मदन मण्डली साजी ।
 कौतुक अबधि कुशल कुल कानन,
 कुंवरि तब नागरीदास संग सुख काजी ॥

[१०२]

फाल-मूरका

सुभग लता सुख सदन में फूलत तलपरे पर रसें खेल ।
 लाल बलि भावती ज़ ॥

१- किकरी, कार्यकर्ता, २- शम्या ।

२४]

गौर स्याम अब-अब लुलैं ललक लुमावन मेल ।
 चुम्बन चौप चिहुट परिरंभन सुरत सहेलि ।
 मकरन्दी सुख मधु पिये ललित लाल अलबेल ।
 छुटक नचे अंग रसमसे ठौर-ठौर उडे खेल ।
 हरख करखै उत्करण सों अतुलित आनन्द झेलिर ।
 झूल फूल सद मदमते अबलंवित हार हमेल ।
 छुटो अलक आनन सुभी३ सौंधे सगवगी फुलेल ।
 अटक भटक रति लटक में भटकि पगन की पेल ।
 मनौ मतंग४ खिरखट५ करै उर सुख उरज उठेल ।
 अद्भुत वयु पराग कढ़ै थानिक६ मानिक सकेल ।
 परम प्यार पूरन प्यारी ज्ञ पिय दारिद्र पछेल७ ।
 झपक झमक झलमलन बसत तन पानिप प्रभा उथेल८ ।
 सोत मन्द माहत पुरबै स्वास वास सु बसेल ।
 झपक झकोर मती गते उड़लित रूप अलेल९ ।
 नागरीदास पिय हिय ओहठी विलसत गरव गहेल१० ।

लाल बलि भावती जू ॥

[१०३]

राग-पूर्ण दुर्दृश्य

लाल लड़ती दोऊ मिलि खेलत दुर्लभ फाग ।
 परस्पर क्रम प्रीतम गुननिधि गौसी राग ॥
 तामैं कुशल कुलाहल सनि स्याम सुभग सुहाग ।
 पति प्रापति परि पूरन गति मति अद्भुत भाग ॥

१- आकर्षण, २- सहना, ३- शोभित, ४- हाथी, ५- क्रीड़ा, ६- स्थान, ७- क्षाग, ८- दूर करना, पछाड़ना, पीछे हटाना, ९- उठना, १०- अपार, असीम ।

ठोर-ठोर ठटे ठाटनि वरखि सुधा अनुराग ।
 प्पार परावधि मन परे लोभ लाह की लाग ॥
 लालन लाड तरल तन खेल मेल खगि खाग ।
 चौप चमक बिच श्रीमद ताकौ लगन न पावै लाग ॥
 जहपि खेद भेद मदमाते आवै आनन्द पाग ।
 नयौ-नयौ नेह अति फैलत रति रंगनि कौ जाग ॥
 भोर भीर भरि चाब चिहुट लसि लगै न आलस दाग ।
 रोम-रोम हियं जियहूँ सौंप्यो प्रबल प्रोति हड़ ताग ॥
 गुन सलौन त्रैसंगम न्हाय दिये दान प्रयाग ।
 लाल अतिथि पोष्यौ पाल्यौ छुटि नट कुल नच्यौ नाग ॥
 विसद विलास विलसि नवल वर-वर वृन्दावन बाग ।
 जामें संकल सुखन की सामा श्रीव्यास सुत सदिका माँग ॥
 रूप झकोरा विष के बोरा नाना रंग छवि ज्ञाग ।
 नागरीदास बारि दिन पाछे परे न आग ॥

[१०४]

राग-गौरी

अपने-अपने संग करि जूथै जुगल नव बाल ।
 दुहैं दिसि दुंदुभि बाजत मृदंग मुरज ढफ ताल ॥
 रुन्ज भेरि सहनाई मुहवर मुरलि रसाल ।
 भरि पिचकैं पिय सन मुख चलत मत्त गज चाल ॥
 डगत चरन नूपुर धुनि कृश कटि किकिनि जाल ।
 कंचन तन नीलाम्बर कुमकुम रेंगित गुलाल ॥
 मधि जराइ^३ की बेंदी मृग मद तिलक सुभाल ।
 करनाइत^३ कजरारे लोचन चपल विशाल ॥
 विहँसत स्थाम दसन दुति अरुन अधर प्रतिपाल ।

१- समूह, २- जड़ाव की, ३- कानों को छूने वाले ।

२६]

चिदुक चखौड़ा॑ मोहन कठियारे कंठ मणि माल ॥
 कौतुक रूप निहारत औसर विथकयौरे हाल ।
 धरिवौ भरिवौ भूल्यौ विवस कुंवर तिहि काल ॥
 लै पाइन तरनाये पुलकित प्रेम प्रवाल ।
 मुख मधु प्याय अंक भरि प्यारी परम कृपालु ॥
 श्रीवा भुज गहि लटकत जोरी जनु जुगल मराल५ ।
 सेज सदन सुकुवार मदन मते मृदु पाल ॥
 अगनित गुन गति उपजत रंग अनेक उछाल ।
 चतुरबाहु४ कंठनि गसि मनु मिलि उरग६ मृनाल७ ॥
 नागरीदास हेम की बल्ली८ अरुसी स्याम तमाल ॥

[१०५]

जैत-अ-

लाल लड़ती जू रंग भरे नीको बहु नीको बन्धौ समाज ।
 सकल सहेली संग लियै साखजबादि९ सौंज९ रची आज ॥
 जूथ-जूथ जुबती जुरों कीनो वहाँ दुहै ओर बनाइ ।
 अप अपने बरनन मिली गोहन१० जू अब लई लगाइ ॥
 सूथन११ कठिनो कटि कसैं श्याम की कोद१२ सावरे अंग ।
 विविध विनोद विचच्छनी१३ गोरी बहो गोरी सुन्दरि संग ॥
 उत गुलाल जेरी लई इत मिचकारी सटकारी साट ।
 उत कोपर चोबा भरे इतहि बजू कुमकुम के माट ॥
 उभै बृन्द सनमुख जुरे चरचत छन्द वन्द कै बहु दाव ।
 मध्य विराजत भाँवते रहसि रहसि खेलन कौ चाव ॥
 काग विपिन वीथिनु मच्ची उमडे जूथ तन मन में मोद ।

१- डिठोना, २- सुडौल, पहलूदार, ३- स्तब्ध, ४- हैस, ५- युगल को चाँ
 भुजायें, ६- सर्प, ७- कमल का नाल, ८- लता, बेल, ९- सामग्री, १०- सार्व
 ११- पजामा, १२- ओर, १३- विवेकशीला, प्रवीणा ।

★ पंच पल्लव-यवांकर आदि ।

छिरकत भरत धरत लसें कोलाहल उपजै विवि कोद ॥
 ताल पखावज डफ बजे बीन किन्नरी अवज उपंग ।
 गजक कमाइच्च कुङ्डली महुवर मुरली मृदु मुख चंग ॥
 अति कौतुक कहत न बनै दम्पति सम्पति सने सुरंग ।
 निरखि नाहु विथकित भयौ उदित हास मुख उरज उतंग ॥
 हार झमकि कृश कटि डलै लटकि-लटकि पद मद गज गैन ।
 सबै सुधरता पाइये उमड़ी पानिप को निधि ऐन ॥
 कंचन तन छवि अति फबी सौंधे बुडे कसूंभी चोर ।
 नव कपूर बन्दन उडे केसरि रंजित कृष्ण शरीर ॥
 भोज वसन झीने लगे रहे शुभ अंग उजागर होइ ।
 भूषन पट न सभारहों मोद मुदित आनन्द भन मोइ ॥
 अरगजा कोच अवनि भई सौरभ बन कानन रह्यौ छाइ ।
 पिय प्यारी रस रसमसे^१ हरखि बहो हिये न समाइ ॥
 तब विचार सखियन कियो समयौ कल कीड़ा को जानि ।
 सैननि माँझ चलाइके कुंचर कुंचरि पग पारे आनि ॥
 भुज उठाइ आँको भरे चले मुदित हँसि गहवर कुञ्ज ।
 तलप रुचिर सज्या रची बरनि बरनि कुसुमनि के पुञ्ज ॥
 ललित लाल सज्या भये नवल चीर नव-नव सत साज ।
 चुम्बन परिरंभन करे मुख प्रकास रह्यौ भवन विराज ॥
 सुरत मुधा सागर^२ बद्यौ निज सहचरि के नैनन हेत ।
 चाह चलत अब माधुरी नव-नव सचु विलसत सुख देत ॥
 कोविद कोक कलनि भरे सुलस सुधर सुन्दर सुदेस ।
 रस तन्द्रा^३ इत लोचना बदन माधुरी मद आवेस ॥
 विटरत अधर दसन धरें आनन मिलि जिलि सुभग सुवास ।

१- रस भीजे, २- निद्रायुत ।

मण्डित उर कल कंत कै राजत सुन्दर राज विलास ॥
 नूपुर किकिनो धुनि सुनो चतुर चौप जुग रुचिर उदार ।
 हुलसि चाइ पलु-पलु चढे विलुलित कच कमनीय विहार ॥
 पुहुपावलि सिर तें गिरे चोलो दरकि विगत लकै बास ।
 अमित अधात अधातिनो रजनी रति गति अमित हुलास ॥
 हिय जिय भेदनि मिदि रहे सुभग मोर ज्यौ मंगल ठाट ।
 यह अलाप अविचल रही नागरीदास जियत इहि डाट ॥

अथ अक्षय तृतीया के पद

[१०५]

आज महा मंगल कौ दिन है ।

अखती लाड़ खेल प्यारी ज़़ कौ कोटि कोटि सुख की इक छिन है ॥
 प्रेम परस लायरस लाल सौ मिलन भीतरौ सखि मिलु खिन है ।
 नागरीदास अखती जुरी रंग हृद बिनु है ॥

[१०६]

याहो तें अक्षय तृतीया नाँव ।

पहलै ही तैं सकल सजनी मिलि रचि राचियत खेल कौ ठाँव ।
 दरस परस रस महा महोडठव संघट कोलाहली विचित्र बनाव ।
 नागरीदास सखियन की मनोरथ पूरन होत केलि कल दाव ॥

[१०७]

सीतल बरकी छाँह परसुला ।

याहो तें अक्षय चरित्रा तृतीया खेल मेल रति रंग सरसुला ॥
 पूरित प्रीति परस्पर हिय भर अद्भुत रूप अनूप दरसुला ।
 नागरीदास समाज आदरी शुभ विहार सद सुखनि बरसुला ॥

१- माला, २- ढटे हुए हैं ।

[१०८]

नेह निपुन निरवधि रति जामें ।

राग-मलार

यह पावस परिपूरन आनन्द प्रीति समीति थिर चर तामें ॥
 चातिक चौप रटत प्रेम मग्न यिक नटवर किलकि जगावत कामें ।
 गरज गंभीर गरब उवराहट उदमद घन निरवत वर भामें ॥
 साज समाज जाहि सब लाग्यौ हिंत थितु रित वरखा अभिरामें ।
 नागरीदास सुनि चलो मुदित हँसि विपिन विलासिनि निकुंज धामें ॥

[११०]

प्रेम बलि पावस बाँट पर्यौ ।

पसु पंछी थिर चर अनुरागी सब इक मना कर्यौ ॥
 प्रीति उमाह ललक के बस परि धीरज रह्यौ धर्यौ ।
 नागरीदास इहि वरखा सबकौ तन मन प्रान हर्यौ ॥

[१११]

एके तक धक जक दुड़े ओर ।

द्वांगी झमक तार सुर किकिनो पूरत भवन मध्य मधु धोर ॥
 उमड़ि अबनि रस एक मेक भई रेनि सुख मंगल भोर ।
 नागरीदास सर निधि रस लंपट आनंदित मद ललित किशोर ॥

[११२]

रमोलो साँवन उल्हर आयौ ।

हरित अबनि निरखत मन हरखत धमड़ि गरज घन गगन छायौ ॥
 चातिक शब्द उघटत केकी नट कोकिल कुल मंगल गायौ ।
 नागरीदास कहि खेल बलि कानन कोलाहल मन कौं भायौ ॥

[११३]

यह सावन सब सम्पत्ति साहौ ।

नबल अबनि नब बन नब जलधर लागत है तन मनहि उमाहौ ॥
 कोकिल चातक गान केकि नट कौतुक विपिन ललक को लाहोै ।
 खेलहु कुंवरि केलि कल कानन नागरीदास बलि सुख अबगाहौै ॥

१- लाभ, २- अबगाहन करो ।

वाणी श्रीनेही नागरीदास जी महाराज

३०]

[११४]

साढ़ी सांबरी सावरी शिखर ।

पीत बसन दामिनि जल धरसौ तैसोई सुभग सावल गिर ॥
 नाचत मोर हरखि मुरली धुनि गान करत चातिक पिक पिखरि ॥
 ठाड़े त्रिभंगी ललित इकवाई नागरीदास सुध गई बिसरि ॥

[११५]

भीजत दोऊ घन दामिनि तन हेरै ।

चातिक रठि पिक गान भेद करि सुनत केकि कल टेरै ॥
 पुलकि पुलकि लपटात गात गसि हैसि उरोज उर भेरै ॥
 आरजै बसन तन अबनि अमित छवि अलिललितादिक घेरै ॥
 पावस संपति दंपति चिलसत कूल कर्लिंबी नेरै ॥
 नागरीदास नब नागर नेही सदाई बसौ मन मेरै ॥

[११६]

कनक पत्रावलि झूमत धूंधट ।

लहेगा पीत केचुको कसूंभी तैसोई गोरे तन लसत नील पट ॥
 केसरि की आड़ जराइ कौ बैदा तैसिय मुख पर रुत ललित लट ॥
 बर बानिक छवि रही पिय नैननि नागरीदास धीरज न रह्यो घट ॥

[११७]

कंचन तन छवि फबी है लड़ैतो कसूंभी सुरंग सारी ।

सहज सुहावने झूमे बादर सधन वृन्दावन नब अंकुरित अबनि हरियारी
 प्यारो जित चलत तित नचत बरहोंकुल किलकि द्वातिक किलकारी
 गावत गुन गंभीर कोकिल गन वरखि फुही गरजत जलधारी ॥
 पल पलक पाँवड़े पिय दे तन मन प्रान संपदा वारी ॥
 नागरीदास कमनीय कुंज मिलि उमगि प्रेम कल केलि सुचारी ॥

[११५]

आज सुहावनी कल कानन ।

तैसियै सजल स्थाम घटा सघन सुरंग नव ललित उठानन ॥

रटत चातिक नचत मोर आनन्द भरि कोकिल कलगन गानन ।

नागरीदास बलि देखियै आछो हरित अवनि तामें कुंज सुठानन ॥

[११६]

त्रुम्हारी बलि सावन है ।

हरित भूमि पर विपिन रमोली सजल जलद रहे गगन गरज छै ॥

नाचत मोर कोकिला बोलत चातिक रटत ललक की लै ।

नागरीदास बलि मिलि रति सौ पति करति आलिगन अधर मधु दै ॥

[१२०]

बदरिया धुर बानी धुकि धुकि ।

ईखतै दामिनि दमकति लसि लसि बरखत अमृतधारा रुकि रुकि ।

चातक सतुण तृपति नहि मानत प्रणय प्रकोप झकोरत झुकिझुकि ।

नागरीदास विथकित डरपत मनोहर बूँद बरावे चित चुकि चुकि ॥

[१२१]

अमकि झलनि झमकति नव गोरी बदरिया उर उल्हर बरसी ।

स्थाम भूमि पर झूमि निरंतर अति अति रति सरसी ॥

कच धुरवा पिक चैननि मोहत दसननि दुति दामिनि दरसी ।

नेह मेह झर नागरीदास ज्यों ज्यों पति परसी ॥

[१२२]

उनये उनमद उमड़ि सजल घन ।

कोकिल गायन केकि नृत्य की चातक रटि कोलाहल वृन्दावन ॥

विलसत दामिनि मृदु जलधर मधि पूरत पानिप विमल जुगल तन ।

नागरीदास निरुपम निरवधि कहा बनि आचं फूल फैल मन ॥

[१२३]

चंपक तन कसूमी सारी पहिरी ।

इक बरनी छवि अंग अंग प्रति पानि पै प्रकासित पचरंग गहरी ॥

पिय हिय विलसत गुल गरबीली वानिक निरखि परत सिर सहरी ।

दरस परस रस बूँद उठारत नागरीदास अद्भुत सुख लहरी ॥

[१२४]

राग-देवगंधार

झूलत दोऊ संग डोल बने ।

अंबर उड़त अमित अगनित छवि किलकत रंग सने ॥

निरखत मुख सुख कहत न आवै कीड़त रस अपने ।

फेरि पियौ जल चटकि आँगुरी सिर नागरीदास बारने ॥

[१२५]

राग-सारंग

झूलति दोऊ रितु बसंत सुखदाई ।

कुसुम खंभ कुसुमन की ढाँड़ी रचना विविध बनाई ॥

मधुरे सुर आलाप लाड़िली राग मलार सुनाई ।

लैं बलाइ पद पकंरि भाँवते रवकि कंठ लपटाई ॥

पहुप पुंज बरखत वृन्दावन समीर सौरभ झरलाई ।

आनंद उमगि निरखि सुख सखियनि मुदित गुलाल उड़ाई ॥

पिय चकोर चंद्रावर बदनी अधर सुधा अँचवाई ।

चौकीहार पटपरी प्रेम ग्रन्थि नागरीदास सिराई ॥

[१२६] "

झुलंवत कुँचरिहि मोहन राय ।

रितु बसंत वर रच्यौ है हिंडोरा विविध रंग रंग कुसुम बनाय ॥

अद्भुत भाँति भावती देखत आनंद उर न समाय ।

सनसुख मगन होत सुख सागर रीझि गहे पिय पाँय ॥

१- आमा ।

भुज गहि प्रीतम कंठ लगायौ अधर सुधा अच्चाय ।
वर बंदसिंह पर बलि नागरीदास निरखि न्यौछावर जाय ।

[१२७]

अलक लड़ी सावन अलक लड़ी लाड़िली झूलत अलक लड़ी हिंडोल ।
कोकिल चातिक गान सुकानन नाचत केकी कल बोल ॥
धावत उदमद अलक लड़ी धरत धरनि धरे कसूंभी निचोल ।
पहिरे पीत बसन पिय आगे नागरीदास सुबस बिन मोल ॥

[१२८]

राग-धनाश्री

फूलत झूलत पति हिये हिंडोरना ।
बलि दामिनि घन कोटि हिंडोरना ॥
लाल ललक लालच बढ़चो हिंडोरना ॥ टेक॥
बिलसत पिय निधि पोट^१ । हिंडोरना ।
मुक्ता मांग बग पंकती धनुष धूंधट पचरंग ।
घुरवारे अलक आनन रहे मनों घन हिमकर इक संग । हिंडोरना ।
कोकिल कूजे चातिक रटे मेह नेह छए धूमि ।
केकी किलक कौतुक नचै घटा दिसि दिसि रही लूमि । हिंडोरना ।
श्याम बसन चपला दिपे^२ गंभीर मंगली गाजु । हिंडोरना ।
अलक लड़ी लाड़िनि लड़ी दुलरावत कल कंते ।
वरस परस परिरंभना चुंबन मद मैंमंत^३ । हिंडोरना ।
प्रमुदित बदन सुधा पिये भदन गुमानी बैन ।
कुँडल झलक कपोलनी चपल चाह चारी नैन । हिंडोरना ।
लटकि मटकि कुश कटि डुले ललित लुलित अच्चाइ ।
मद मंथर गति गुनवती देखत नैन लुमाइ । हिंडोरना ।

३४]

बाणी भीनेही नागरीदासजी महाराज

बिलसत हिये विनोदनी सुलस सुखनि सुकुंवार ।
नागरीदासी बारनै आनंद उदित उदार । हिडोरना ।

[१२८]

राग-अड़ान

झूलत भीत मतेर रति रंग हिडोरनि को दुमची ।
अब अब चालनि रोम रोम सुख भुज दंडनि छुमची ॥
मचकत सदमद अबत तथन हृद सुभग सुट्टङ गति नहिं उमची ।
बर बिहार पर बलि नागरीदास गूढ़ दशा सुमची ॥

—*—

अथ प्रिया जू की बधाई

[१३०]

मंगल है वृषभान राय घर ।

जाई कुंवरि कीरतदा रानी छवि अगाध अतुलित आनंद कर ।
नंदी^५ सुरते सौंज सकल भरि आए बधाये महरि महर
बड़े भाग बल्लभ कुल मंडन दूव बंधावत भेटि परस्पर ।
सिर दधि ढोरि हरखि मुख माड़त सुकृत समूह फले इहि औसर
लटकत फिरत रंग रस भीने हरख उछाहु बाहु अंसनि^६ पर ।
गोरस माँट लुटावत आँगन नाचत प्रेम मुदित नारी नर ।
घृत मधु माखन दधि अजिर^७ जिले मानहुँ मुदित मराल मानसर ।
घर घर बात लुटाइ नंद जू जनम महोत्सव यह सर्वोपर
सुत समेत बारि जसुमति को रहे सीस दे सुता पगनि तर ।
धन्य हिता जिन कुंवर कूंखि धरी रूप अनूप कुशल कौतुक कर
कुल परकास रसिक जन जीवन नागरीदास सिराने थिर चर

१-बलिहारी जाते हैं, २-मतवाले, ३-झोटा, ४-ढीली, ५-नन्दी
६-कन्धे, स्कन्ध ७-आँगन ।

[१३१]

नाचत रंग भरे रावल आये ।

जसुमति नन्द सहित सब गोकुल सौजनि सकट^१ भराये ।
 तोरन कलस जलज मनि झालर धुजा पताकनि द्वार बनाये ।
 चंदन गलीन गरकी छिरकी अजिरिनु बरन वितान तनाये ॥
 जित कित अवन सुजस धुनि सुनियतु जनम नक्षत्र विमल गुनगाये ।
 शुभ सुकुंवारी प्यारी प्रगटी धन्य हिता जिन संचि हिताये ॥
 श्री वृषभानु नृपति जूके घर पूरित मंगल विविध बधाये ।
 यह सुख सुपनेहू नहि भया कहा भयो जो बेटाहू जाये ॥
 धन्य कूखि कीरतिदा रानी बल्लभ कुल के तिमिर नसाये ।
 सुन्दर सकल घोष परकासक अतुलित आनन्द नैन सिराये ॥
 सोभा निधि उर धरी सिरोमनि बज बन दिन दिन कौतुक छाये ।
 रूप अवधि है सुता छबीलो सुकृत पुंज बड़भागनि पाये ॥
 कुमकुम चोवा भरि नर नारो दूध वही के माँट लुटाये ।
 निर्तत बाहु परस्पर कंधनि अवकल कारज मन के भाये ॥
 हँसत लसत लटकत रंग भीने कोलाहल वर भवन बढ़ाये ।
 प्रेम मगन पट भूषन छूटत ओक बोघ गोरसनि बहाये ॥
 व्योम विमान अमर गन^२ देखत सकल समूह कुसुम बरसाये ।
 जय धुनि कहि धन्य मार्नि अपुनपौ हरखि हरखि निसान बजाये ॥
 अति उदार राजनि के राजा मनि मानिकन सकल अघवाये ।
 निपट निसंक दाननहि उसरत हाटक हीर चीर बगराये ॥
 मानु नरिद^३ कुदम्ब कौ मंडन सुहृदिन पट भूषन पहिराये ।
 नागरीदास धनिक भये जाचक गोधन भवन भँडार लुटाये ॥

१-गाढ़ी, २-नरेन्द्र, राजा ।

बाजी श्री नेहो नागरीदास जी महाराज

३६]

[१३२]

राग-गौरी

बजत बधाई वृषभान ज्ञ के रावरै ।

झज सब सिकल^३ महोछै^४ आयो भये मनोरथ मन के भावर ॥

नंद जसोदा सर्वसु खरच्यौ पग गहि कुंवर कियौ न्यौछावर ।

कछु न सेंभार गोप कुल मंडन फूले फिरत प्रेम लड़बावर ॥

धन्य कूखि कीरतिदा रानी कुंवरि रूप निधि जनमी जा उर ।

कोउ न कृपन रह्यौ तिहि औसर नागरीदास पोषे जंगम थावर ॥

[१३३]

राग-जंतधी

आज लली कौ सोहिलौ^५ कुंवरि मेरी प्रगटी है आनन्द कंद ॥ टेक

धन्य कूखि कीरतिदा रानी कीनौ कुल परकास ।

कौतुक अवधि कुंवरि यह जाई सफल भयो बजवास ॥

जग उदोत मुदित मुख सुन्दर है सोभा कौ धाम ।

देखी सुनी न ऐसी कन्या अंग अंग अति अभिराम ॥

आज भवन वृषभानु भुवन कौ निज सुख निरख्यौ नैन ।

सब सुकृतनि की संपति आई कहत बनै नहिं बैन ॥

होत कुलाहल गावत मंगल घोष बधाये आयो ।

पुन्य पुंज वृषभानु नृपति कौ देख्यौ मन कौ भायो ॥

मोतिनु माल चौक मनि बैदन गली सुगंध संवारी ।

रावल रमित रवानी राजत जनमी है सुकुंवारी ॥

रतन जटित बहु भाँति पताका मारग छाये फूल ।

मानिक चौकनि दिपत दुवारे रोपे है कबली मूल ॥

महा महोछी गोप राइ घर दूध दहो की काँदौ ।

कुमकुम चौवा चैदन छिरकत शर लायो भर भादौ ॥

गोरस माट लुटावत आंगन नाचत मगन भये ।

१- महल का अन्तर, २- एकनित, ३- महोत्सव, ४- जन्म संगोत बधाई ।

बल्लभराज हिता चिरजोरी उपजत मोद नये ॥
 थृत मधु माखन द्विले गिरारे अजर मुदित 'नव बाल ।
 नर नारी हँसि भरत परस्पर मानो मत्त मराल ॥
 गद गद सुर तन पुलकि हरखि मन झूमत ग्रीवा बाहु ।
 अति आवेस सुदेस सोभियत उमड़चौ प्रेम प्रवाह ॥
 गोपी ग्वाल मिले मधि निर्तंत लटकत रंग भरे ।
 भूषन बसन गिरत नहि जानत कवरिनु कुसुम ढरे ॥
 तबहि हरखि रावल रानेजू हाटकै हीर मेंगाये ।
 चीर अमोल विविध पाटंवर बधू बंधु पहिराये ।
 तब मागद बंदीजन संग दै जाचक धनिक करे ।
 भवन भंडार उखेल सौज सब बकसे सकट भरे ॥
 आपसु भयो खरिक लख हूँ कौ ग्वाल हंकार लये ।
 महाराज राजनि के राजा लहिर विडार दये ॥
 पूरन करी कामना सब विधि रसिक सरस आनंदे ।
 नागरीदास बास बरसाने गौर चरन रज बंदे ॥

[१३४]

राग-गौरी

बजत बधाई वृषभान जू के रावर ।
 बर बरसाने सुख सरसाने नाचत मेल मिले नारी नर ।
 वही हरद रोचन मुख मांडत हँसि हँसि भरत प्रफुल्ल परस्पर ।
 गोपी ग्वाल महा मदमाते गाइ जनम भंगल गदगद सुर ॥
 गरे वांह दिये लटकत डोलत महा मुदित अनुराग रंग भरि ।
 भूषन बसन गिरत नहि जानत नागरीदास जागयो आनंद झर ॥

१-सोना ।

श्रीलाल जू की बधाई

[१३५]

राग-जंतथी

आज बधावी ब्रज राज के । प्रगटचो है आनंद कंद ॥
 स्थाम सुन्दर कमल लोचन जायी जसुमति पूत ।
 लाल कुल कौ भाँवती री जा बिनु जगत अऊतै ॥
 कुंवर रूप अनूप पौड़ी दिपति दीपति धाम ।
 ललित मुख के वारने री अँग अँग अति अभिराम ॥
 मुदित ब्रजपति भवन आये सकल गोपी गोप ।
 दूब बधाई जुहार करि करि भई है कुटुंब की रोप ॥
 भुवन मंगल रूप सुत कौ निरखि वारत प्रान ।
 तुन तोरि लेत बलाइ वनिता जियौ जसुमति जान ॥
 छिरकि दधि मुख माड़ि रोटी माट देत लुढ़ाइ ।
 अजिर गोरस पंक पूरित रपट टिक नहि पाइ ॥
 पुलक तन नर नारि निर्तत बाहु कंठ लगाइ ।
 मत्त गदगद सुरनि गावत हरख हिय न समाइ ॥
 कोलाहल कौतूहल मंगल महा महोत्सव द्वारे ।
 नन्द राइ अनुराग मुदित हूँ रीझि अपुनपौ बारे ॥
 हाटक हीर चीर पाटंवर गोधन कूट लुटाये ।
 जाचक धनी अजाची कीने मन कामना सिराये ॥
 भूषन बसन बंधु बधू पहिरे फिर तब पाइ गहे ।
 यह सुख सुकृती सुहृद तिहारी लोचन वारि बहे ॥
 नागरीदास कोऊ न गयी घर सुधि बुधि विसरी देही ।
 अलभ लच्छि प्रापत बड़भागी सनि रहे सज्जन सनेही ॥

१-पुत्र विहीन, निपूता ।

[१३६]

रामनीरी

श्री हरिवंश सरन जे आये ।

श्री वृषभानु कुबरि नंदनंदन निजकर अपनी चिट्ठी चढ़ाये ॥
 दिये मुकरायै कछू नहि गोयौ किये मनोरथ मन के भाये ।
 व्यास सुवन चरनन रज परसे नागरीदास से रंक जिवाये ॥

[१३७]

चर्चरी-ताल

उघरि मुख मुसकि मृदु ललित करताल दे

सुरत तांडव अलग लाग लीनी ।

विविध विधि रमित रति देत सुख,

प्रानपति छामुरे कटि किकिनी कुनित कीनी ॥

उरप तिरपनि लेत सरस आलाप गति

मुदित मद दैन मधु अधर दीनी ।

अमित उपजनि सहित सार सुख संचि

रति भाम हिय लसत रमिरंग भीनी ॥

स्वाद चौपनि चढ़ी लाड़ लाड़नि लड़ी

अबनि दुति तन तड़ित घन छवि सुछीनी ।

कोक संगीत गुन मथन की माधुरी

नागरीदास अलि हृगनि भीनी ॥

[१३८]

विलसत लसत पानिप अंग ।

गज कीडा रत कुंचर^१ दोऊ नचत सुरत सुधंग ॥

लोल कुंडल गंड मंडित भाव भृकुटी भंग ।

अधर दसन सहास मृदु मुख लसत विव वर रंग ॥

मुक्त माल सुडार उर पर दिपति उरज उतंग ।

किकिनी कल कुनित अबननि उदित कोटि अनंग ॥

१-मुक्तकर दिये, २-हृष, पतला ।

तलप सुरत किशोर कोमल लई कुंवरि उछंग ।

दासि नागरी कच सेवारत करनि वियुरी मंग ॥

[१३६]

राग-विहागरी

राति सुहिरती निवड़ जीत भई ।

पुरे पंत घरे प्यारी ज्ञा के हारे पति रति टेक टक ठई ॥

गये दाव फुरे चाव चौगुने सर्वस घरि अंग अंग होड़ दई ।

ज्ञावा तन मन हार्द्धो नागरीदास यामें पिय रुचि रंग अधिकई॥

[१४०]

राग-जैतथी

स्याम सहेली भाँवतौ देखत री मेरे हिये उछाहु ।

इन अखियन में रमि रह्यो रंग मर्यौ रंग नागर नाहु ॥

बरहि मुकट बर सिर घरे कुमकुम हो तिलक ललाट ।

करनायत चल लोचना चितवत री छूटत हट घाट ॥

अधर विव शुक नासिका निरूपम हो मुक्ता मनि चाह ।

मणि कुंडल श्रवनन बने राजत सोमा बदन उदाह ॥

दार्द्धौ? बीज दसनावली मंद मंद कलहास प्रकाश ।

कुटिल अलक छवि मंडना भृकुटिनि री भेद विलास ॥

कंबुरे कंठ मोतिन लरे गुंजा जुत राजत बनमाल ।

अवलंबित आजानु ज्यों सुन्दर री सखी बाहु विसाल ॥

पीत बसन कटि काछिनी किकिनि री सखी शब्द कराइ ।

मत्त चरन गजराज ज्यों घरत ललित नुमुरनि बजाइ ॥

सुनत सखी को ओट हैं गहवर हरषि हूदौ गयो पूरि ।

पुलकित अखियनि जल बह्यो धाय गहे पद जीवन मूरि ॥

हगन लाय सिर बंदि कै चूमि लाल घरि हिये मङ्गार ।

जीवन फल धन मानियो कीनो ज्ञ मधि नायक हार ॥

उमगि कुंवर आँकौ भरे भये कुंज सुख सेज समाज ।
 केलि कलोलन मन बढ़ै सहचरि सब परिपूरन काज ॥
 सुरत सुरस लसै लाडिले अंग अंग गसि रहे अरुझाइ ।
 शुभ बिनोद दिन दिन करौ नागरीदास न्यौछावर जाइ ॥

[१४१]

विविं आवेस एक तन होत ।

कबहुँ इत कबहुँ इत उत भीर परी ओत प्रोत ॥
 उमगि सुधा रस अबत नैक विधि सरस सुरत सर्वोपर सोतर ।
 नागरीदास सब रस अलट पलट राजत तन उछोत ॥

[१४२]

राग-केदारी

गोरे गोरी हाथ ढंडा खयेउ उघरत,
 कुंवरि भोरी भोरै खेलत तलप रसु भीने ।
 परिरंभन चुंचन आँलिगन सुभग अंग साँवल मुज दीने ॥
 छूटे केश आवेस सुरतसुख चिवुकटटोरि निहोरि नवीने ।
 नागरीदास बलि झुकि रदै अध रंगहि परसत,
 पीडरी जब उरजही पीने ॥

[१४३]

राग-सारंग

आज अधर सुधा प्यावे परसावे कुच मानौ घन दामिनि मोल लयौ ।
 करत निहोरो तोहि नहि ओरनि जामैं पूरन काज भयो ॥
 तुम मेरौ अबलंब सपथ करौ याही ते यह पूरन ठाठ ठयौ ।
 कहि नागरीदास आस मन क्रम बच पाऊ आनंद तेरौई दयौ ॥

[१४४]

राग-रामकली

कनक सुकंजरू नील नव हिलिमिलि होत दुरंग ।
 सौरभ अब कल कोश तै मेटत मद सु कुरंग ॥

१-युगल, २-स्नोत, ३-दशन, ४-बादामी या ताँसड़े रंग का हिरन

मेदत मद सु कुरंग त्रिविधि घन सार सार को ।
 केसरि सरि क्यों करै सकल सौगंध अंग को ॥
 सुमुख बमत मकरंद उदित अद्भुत सुकिय परस्पर गिलान ।
 सरस मेचक छवि कनक की सुरत समर अरे सूर सुजान ॥
 तलप खेल कल माड़े खाड़े अधरन पुलक उमगि रतिदान ।
 अबनि प्रहार करत उपजत छवि मुरत न छैल अमोर अमान ॥
 कोक कला कुशली प्रबली गति पलु पलु बढ़त करत मधुपान ।
 जोवन नव उभं जोधन की विरचि बढ़ी दुहुँ ओर समान ॥
 कोटि-कोटि भावन की भाँवरि नागरीदास किलकि किलकान ।

[१४५]

राग-आसावरी

भानुजा पुलिन वृषभानुजा क्रीडती ।

भानुनंदनि[★] आनंदकारीकुंवरि रमित निरसंक न अनंगरंग ब्रीडती ॥
 पुलकि कामिनि चलति ललितगति भेदसों अबनि मदमेदनी भेदवासे ॥
 कोक कौशल रूप निधि अंगमें असित रंग वर्तिसी जोति भासे ॥
 लंपटी भेद भरि हाव भावन चितै मटक भृकुठिन मटकि मुखमोरे ।
 नागरीदास बलि रोकि हुग केलि बलि विमल निगमन अगम मैंड तौरे ॥

[१४६]

सुन्दर बदन निरखि वोई कीजै इहि सुख जोजै मेरी आली ।
 सेज समाजे भूषण बाजे तेही तेही ताल नचत बनमाली ॥
 हरखि कुंवरि हुरमई लेति हिय और भेद चन्द्र भ्रुव चाली ।
 अंग अंग संगम अभिअन्तर मद रस पीवत नाभी नाली ॥
 रोम रोम प्रति उदित सरस रस जुब अवराज लाल मुख लाली ॥
 उमगि उमगि धुरि मिले मिथुन मन नागरीदास प्रान पति पाली ॥

★शाठान्तर-भाम नंद नंद ।

[१४७]

नेति नेति मधु सुंच मुंच रव ।

कुंवर किशोर कसिपु कुसुमन पर रति विनोद करत राधा धव ॥
रोष परसि करि भुज पुलक सकल तन,

उभगि मिले मद छाड़ि अबनि अब ।

आसन गसि बस होत परस्पर तरलित तनन मनन अति अरुजव ॥
मारे झार निरमाइ रमित फिर उकति अनेक चित्त गुन नवनव ।
फूल न मात गात अलिजन के बात सुनत काननि मुख परिभव ॥
नागरीदास निरखि न्यौछावर इहि जीवन जो जोजै निमेष लव ॥

[१४८]

राम-सारंग

पलटि पलटि परे रति भेदन में ।

उठे अभूत बहु भाँति अनोखे अति आनंद उदार अमीते ॥
फिर फिर लेत उपज नाना विधि सुभग जघन सिहासन बैसे ।
कबहुं कबहुं रस मगन होत मन राज सुरत सुख बूढ़ि उठे ॥
येहि न्यौर त्योर दिन दिन प्रति दंपति अलि हिय जियनि बसे ।
नागरीदास अनुरागी नागर अधर दसन गहे रंग रसे ॥

[१४९]

वर अनुराग खेल माडे है ।

अवधि अरुकि अडग एक ही तक निरवधि आरजपथे छाडे है ॥
जा आभास अवन भवननि भरि उज्ज्वल लज जुब घर भाँडे है ।
नागरीदास उपासक सोंवा सुहृदी धोष प्रेम ठाडे है ॥

[१५०]

हलहि चलहि नहि भजनी घंड ।

वे परबाही धीर बस्तु गहें बहे फिरत जग भरमी बंड ॥

१-प्रियतम, पति, २-कामदेव, ३-आर्य पथ ।

भक्ति वान करि कपटी कुचिछित^१ परि है कठिन काल के दंड
नागरीदास बाहाल विकारी पकरि विगोये जम परचंड।

[१५१]

सखी की पीठ साँ सीस टिकायौ दुहुँ करनि कंधा पकरै ।
लटकि आवत खोरि साँकरी अँडे बैडे चरन परै ॥
रह्यौ लाल दे देह पाँवडे समै ठौर गहि घात करै ।
हा हा करि सहचरिहि मनावत सोइ करि हिय पाँय धरै ॥
रोम रोम पिय हरषत तन मन आइ गई उर पर उलरै ।
नागरीदास प्रगट भये हँसि निहारि मुख लगो गरै ॥

[१५२]

राग-कान्धा

सोइ नाइक रस लंपट रसीलौ जा तन नाइकता ठहराइ
विथकै नहीं भेद भाइन में पल पल गर्व गुननि गहराइ
उपजै और और मद शूटे लहलही उरसि ललक लहराइ
नब नब चौपनि बलित ललित जति^२ गति अलात^३ में चित ठहराइ
सरस सुरति सनमान दान रति रोम रोम सुख उठे लहराइ
छिन छिन प्रति नब नब छवि नागरीदास नासा जलज मन थहराइ

[१५३]

बढ़त हित नित नित रति त्यौनार^४ ।
नब नब चौपनि बलित ललित गति छवि पावत मुख मधु ज्योनार।
ओरे और तरंग तननि तैं तरलित होत तरन बर जोर
इहि सुख मगन रहत निसि वासर जानत नहीं नैक निसि भोर
स्यामा स्याम धाम आनंद कौ जुब जन निर्तन करत सदाई
बजत जहाँ नोसान समर कौ नागरीदास बर विपिन बधाई।

१-कुत्सित, २-उमडन, ३-ठहराव ४-आभा, या तेज पुञ्ज का धेरा ५-ढंग,

[१५४]

राग-सूही

दंपति कौ धन कानन चारु ।

धनुष धरें अपने पर कर सौं सावधान सेवत नित मारु ॥
जामें नाना भाँतिन राजत राज केलि बैभव विस्तार ।
गुन लच्छन नव भेद माधुरी अवगाहन कौ बार न पार ॥
मुख में मुख करें पान अधर मधु सोहत सुभग कंठ भुज हार ।
झूम्मी रहत सेन सजनी गन नागरीदास पीजे रस सार ॥

[१५५]

राग-कान्हरी

छाजत आज छाम कटि छोम ।

उपज्यौ अमित स्वाद अँग अँगनि पसर्यौ ललक लख गुनौ लोम ॥
मैथुन मिथुन मथान दान रति वरखत सुखनि अनंगी खोम ।
नागरीदास निज हेत की कर वर निकर किये तन थोम ॥

[१५६]

राग-केदारी

रहि औंगी मोंगी रो नाना नेह रचन दै ।

तब कौतुक देखियेगी नैन भरि सेजढार ढरि खेल मचन दै ॥
लालन पालन भाँति भाँति के वर विहार अंग अंग खचन दै ।
नूपुर किकिनी धुनि अवनन नागरीदास मन फूल सचन दै ॥

[१५७]

राग-कान्हरी

अरज्जी सुरक्षत कैसे बैठी विमल लाल उर ऊपर ।

झनक झमक कटि किकिनी नूपुर सुन मंगल धुनि छाई कुंज घर ॥
जैसे वामिनि धन पर चमकत छूटि टूटि गिरे भूषण अंवर ।
चमकत वसन अधर हुग कुंडल बैनी फैली फूल प्रकास उरज वर ॥
लालन पालन बहुविधि चुंचन स्वाद सद छकी मदंधी चौंप उर ।
रोम रोम सुख बरखत अति रस नदी बड़ी केलि आनंद झर ॥
विरमावतै विरमत नहि प्यारी वर विहार विहरत नागरि अररै ।
नागरीदास अमजल कन पौछत पिय चरननि जागि गहै ठोड़ी कर ॥

[१५८]

दोऊ पारस भारी अतिलड़ ।

नहीं निकोर किशोर जोर चुरी परी सुरत स्वादनि गढ़
बदन अमीदे बूढ़ि उधारत तोरत परम सुहङ्ग निगमनि अड़
नागरीदास निज दासो दिनहीं दिन निरखत रहे सहचरि भागनि बढ़

[१५९]

एकामेक तोरि तन मैंडे ।

मुख मधु पान सवाद गुमानी गरबोली डुल मन की उमेंडे^१
हिये अनूप राग भाग निधि फवि पिय लटकि चाल पग ऐँडे बैंडे
रोम रोम हरखित अकुलाहट मरमनि भेदत उरज उलैंडे^२
बगरी मंगल दशा न संभारत बहरावत^३ पति पाँय पलैंडे
महा मत्त निरधोप^४ निरंकुश गज न समाई छेंडी छेंडे
उपजै दाव उपाव कही सखि अब यों कौन पार है पंडे
नागरीदास छल बल गरे लाई अधर दसन गहें तमकि^५ चचैंडे^६

[१६०]

उर में उरज वर उदौ किये ।

अति अनुराग समात न अन्तर उमगि कढ़े गहवरे हिये ॥
श्याम सुभग छतियाँ अनुगत हूँ रूप विवस आदर सौं छिये ।
रति की गति कष्ट अकह अटपटी लीन अधीन सुट्टिविये ॥
रस की बूढ़ि असूझ अबूझ है प्रेम मगन मादिक सौं पिये ।
नागरीदास गुन पलट कंठ लगि सौंभरावत है मुखमधुहि लिये ॥

[१६१]

राग-केदा

अद्भुत कौतुक नृत्य होत है ।

कुंवर किशोर रंग रचि माते उमड़त पानिप प्रेम पोत^७ है

१- उमंगे, २- उठाव, ३- निरस्त्र, ४- आवेश पूर्वक, ५- आलिङ्गन कि
६- हुवकी, ७- मोती । ⋆ पाठान्तर—विरमावत ।

सिद्धान्त

कुङ्डल लोलै ललित नासा मणि झवि समूह मुख हास उदोत है ।
 बिव अधर श्याम वसनावलि जगमगात अति ललित सोत है ॥
 झमकत हार उरज थीफलै बिच लचक छाम कटि गति निगोत है ।
 नागरीदास विलास अकह गति सौरभ सत सद मदनि^५भोतु^६है ॥

[१६२]

सौरभ सार सुकुमार कलेवर अंग अंग रंग-रंग हिले वर ।
 उमड़ी छवि फैली समूह सुबास झिले उर ॥
 नव नव मन अहिलाद^७स्वाद सदमद किकिनि कंकन पग नेवर^८ ।
 नागरीदास घनघ्रान^९धूम घट चले जात लच्छन तन तेवर^{१०} ॥

[१६३]

हो हो हो करि अब टकटोलैं प्यारी के मद माते ढोलैं ।
 आलिगन चुंबन परिरंभन चसक रसिक आनंद रस लोलैं ॥
 कबहुँक जकि थकि रहत निरख मुख परिधान फिर विगत निचोलैं ।
 नागरीदास रसरासि बड़ी उरलै बलाइ^{११} बयार^{१०} अंचल ज्ञालोलैं ॥

[१६४]

अधरनि अधर मिलत अदभुत रस फैलि परे रुव^{१२}पावक नाई ।
 मैन मई भई रोम रोम प्रति एते पर नव उकति^{१३} उठाई ॥
 रमित अमित गति बूँड़ि उद्धरन पैरनि^{१४}की इनही बनि आई ।
 अवनि सुगसि सुंदर नाना विधि कितहूँ की कितहूँ अरुआई ।
 कही न परत रति प्रीति परस्पर जोई जोई करी सोई सोई भाई ।
 जल अरु जल तरंग एक हैं न्यारे न्यारे कहे न जाई ॥
 कोक^{१५}संगीत ताल छुत निर्तन गान सुतान घरी मन भाई ।
 भूरि भाग अनुराग नागरीदास व्यास सुबन बानी में पाई ॥

१- चंचल, २- नारियल, ३- बहुत, ४- आळाद, ५- नूपुर, ६- नासिका, ७- चितवन, ८- धारण कराते हैं, ९- वलैया, १०- पवन, ११- रुई १२- उक्ति, युक्ति, १३- तैरना, १४- काम । ^५ पाठान्तर—मननि ।

[१६५]

जब ते जावकै चरन दयौ ।

तन मन चित वित तहों कौ ज्ञ भयौ ॥
हियरा हिलग फिरत संग लायौ जियरा ललक रहयौ ।
नागरीदास तन मन धन जीवन मंगल यह बिठयौ? ॥

[१६६]

भोर भवन में मंगल साजु ।

कुशल कुंवर कमनीय केलि बलि कोलाहल कल कौतुक आजु ।
नूपुर कंकन किकिन की धुनि सुनि मिलि जिलि वर बाजु ।
अधर पान आलिगन आशिष नागरीदास बलि सुखद समाजु ॥

[१६७]

सुरत श्रमित राजत कोमल तन ।

पिय उर ऊपर लसत लाड़िली अधर अदनै जुरै उभै बदन ॥
निसि के चतुर जाम जागर करि वर विहार बढ़े ललित मन ।
ईषद हास चाह चल भृकुटी आनंद उभगि हियैं मृदु बचन ॥
नूपुर किकिनी कल धुनि उपजत सूचत सुपनै केलि कला गन ।
यह सुख सावर सखी निहारत नागरीदास सर्वस जीवन धन ॥

[१६८]

दोऊ कुंवर रमीले आजु नीके कै पाए ।

सुधारत विथुरी अलकि चमकि अंग अंग दुराए ॥
हम साँझ हो ते दीपक साज्यौ इक टक जाम गवाए ।
उधरि उभै अब देखे जबते नैन लगाए ॥
अब कहा गोबहुै हमते अरगजा छिरकि जगाए ।
सर्व विनोद मोद मद आछे कैडव दिखाए ॥

१- महावर, अलता २- लैठा लिया ३- अपर पान, ४- छुपाते हो।

होहु उजागर नागर हँसि कहा बदन दुराए ।
 चरचौजौ यहि ओर चैलै कौने पहिराए ॥
 अब पान कपूर अह मिथी लेहेंगी मन भाए ।
 के पिय देहु लड़ती औरङ्ग नहीं उपाए ॥
 अपनी अपनी फगुवा आके अब ही मँगाए ।
 वारी प्यारी तब हम उठि हैं सबकौ भलौ भनाए ॥
 तब वृषभानु कुंवरि जू मोहन लेहि छिड़ाए ।
 गहने धरि है ललिता जी जो तवाहि मिलाए ॥
 ऐसे झूमि रहे कोङ्ग इहाँ ते जाए ।
 चित चित इतही अटक्यो मन रहौ लोभ तुझाए ॥
 सबकौ सर्वस चोरत मंद मृदुल मुसिक्याए ।
 आई हीं कछु चाहन हमहौं गईं बिकाए ॥
 हास हुलास विलासहि देखत कौन अधाए ।
 राज सुरत कौ समाज साज उर रहे समाए ॥
 दिन दिन ऐसे ही विलसौ हरखित है गुन गाए ।
 वरखत सब सुख★ अंखियनि लीला बढ़ाए ॥
 चिह चिह नव यह जोरी ऐसे ही समुदाए ।
 नागरोदास निछावर पल पल लगौङ्ग बलाए ॥

[१२८]

राग-विहागरो

अंखियनि में सुकुंवारी गड़ी है ।

तन मन रोम रोम गुन उमड़त भाँति भाँति सुख लाड़ लड़ी है ॥
 जहाँ तहाँ पूरन गुन पूरित तदाकारता रूप अड़ी है ॥
 नेह नौहरी कुंवरि केलिनिधि नागरोदास चित चाइ चड़ी है ॥

[१७०]

सब निसि रहे सुरत रन साजै ।

उमगि उमै तन चाह चढे मन भूषन वर नीसाननि बाजै
अबहों निपट भोर पल लागे अमित सुलसै सुख सेज समाजै
नागरीदासि बलि देखि ललित छवि अधर दसन गहे बदनविराजै

[१७१]

राग-सा

अबहों हिये में उरज उठे हुलसि ।

स्थाम सुभग सुकुंवार कलेवर तदाकारता तन मन रही बसि
अभिअंतर को हिलग प्रगट भई सैमरावन कौं अब न काहू कौं बत
नागरीदास बलि तुमही पै भले सधे

छतियाँ लाय लीजे पति भुज बीच कसि

[१७२]

राग-मला

स्थाम सुभग तन पीत वसन छवि कुँवरि गहल रंग कसूंभो सारी
लहँगा पीत रुत हारावलि चौकी कुचनि बिच कंचुको कारी
हैसि हैसि बन रितु संपति देखत लसत अंकरै अंशरै भुज सुकुंवारी
दोऊ मुदित मलार निबाजत नागरीदास दरस दुति बारी

[१७३]

यहई कुँवरि जू कौ कल खेल ।

वर बरसाने खोरि सांकरी सखियन संग सब सुखनि सुहेलै ॥
सहचरि वेष धरै मन मोहन ललित लालन कौ छल मेल
लडावन बहु विधि बाही रसनिधि नागरीदास आनंद रस झेल ॥

[१७४]

उरज की जोट पै कहु न जान ।

हृष्टि परत ही मार लेत हैं नहीं साहस कौ बानै ॥

१- सुजोभित, मनोहारी, २- गोद, ३- कन्धा, ४- मंगल गीत, ५- बानिक, अवसर ।

चिदान्त

कुच जुग तकै धकधकी हिये फुरे न उत्कि सयान ।
नागरीदास प्रानपति^१ बसि हँ पकरचौ कान ॥

[१७५]

रति अलेलै जोबन मद लेलि ।

लेत समाइ रोम रोमनि में रस लंपटी पीय बन वेलिः ॥
रस सागर में रहसिः रसिकनी मैनै तरंग मोन इव लेलि ।
खुलित बसन बल अंग-अंग चल उठत अमित गति पति कल केलि ॥
मुरत न मनकी अनी६ रेनदिन उमगि रसन७ पिय मुख मधि मेलि ।
कहत न बनै सुरत सुख वैभव नागरीदास निरखत बनै हेलि ॥

[१७६]

नवल छबीली सुंदरी मम मन कौ मंगल रूप जू ।

चितवत ही चित वित हरधौ बानिक सुखद अनूप जू ॥८८॥

सोस फूल सिर गूँथि कै सुभग श्रीमंत^९ सेवारी जू ।

बंदा भाल जरांड कौ मृगमद आड़ै अन्यारी१० जू ॥

खुटिला११ ताटंक१२ श्रुति लसें नैन ढरारे१३ लोल जू ।

बैनी सुगंधनि सगवगो१४ पहिरे नील निचोल जू ॥

इयाम दसन चौका१५ दिये मुख मधु ईषद हास जू ।

झलकत मुस्तका नाक कौ भृकुटिनु भेद विलास जू ॥

चिबुक चखौड़ा१६ जगमगै कंठ कंठश्री१७ पोति जू ।

मधि नाइक मोतिन लरे फैल रही जग जोति जू ॥

कंचुकी कैसूभी खयनि१८ खुभी१९ उरज अन्यारे और जू ।

१- अवलोकन कर, २- असीम, अपार, ३- श्रीप्रिया, ४- एकान्त, ५- काम, ६- नोंक, सेवा, ७- रसना, जिह्वा, ८- माँग, ९- आङ्डा तिलक, १०- अन्यारा, नोंकदार, ११- कर्णफूल, १२- कुंडल, १३- चलायमान, झुकेजुके, १४- भीगी हुई, १५- सामने के दर्जनीय चार दीत, १६- डिठोना, १७- कंठाभरण, १८- वाज, १९- गसी । ***पाठान्तर-**प्रकास पानिप निषि ।

५२]

तिनके मधि चौको१ हिये भेदत जोवन जोर छू ॥
 रतननि खचित विजाइडे२ ललित भुजा मृद गोल जू ।
 ढंडारे ढरारे पहुँचियाँ चारि चारि चुरी निरमोल जू ॥
 अंगुरिनु मुदरो दमकहीं चलती बाहु रुराइ जू ।
 मन लंपट संग ही किरे तन निरखत हीय सिराय छू ॥
 त्रिवली नाभि गंभोर है कुश कटि किकनी जाल छू ।
 प्रगटित है मधु माधुरी प्रान प्रिया वर बाल जू ॥
 लहेगा लाल नितंबिनी करम४ कदली उनिहार छू ।
 उपमा जघननि देस को रहीं विचारि विचारि जू ॥
 चौ पहलू चूरा बने नग रेंग रेंग रतन जराइ जू ।
 भरं केयूर५ लसें इकसरे चितवित रहे समाइ जू ॥
 नील मनिन में धूंधरी जावक जुत पद चारु जू ।
 गौर हृद में रसि रहे यहै उपासन सारु जू ॥
 सुनि सुनि घंरारॆ आपत्ती लीने छतियाँ लगाइ छू ।
 अधर पीयूष पिवाइ के मिली मुदित सुख पाइ जू ॥
 रस सज्जा नव कुंज में वरखत हरखि विनोद छू ।
 आलिगन अंग अंग सने भीज रहे ढुहैं कोद छू ॥
 तान गान मिलि सुर छये भयो उभय जिय चाव छू ।
 मते राज अनुराग में कल रसनावलि राव छू ॥
 सहज समाज सुरंग सने सुरत विहार चिलासी जू ।
 पिय प्यारी वर केलि पर बलि बलि नागरोदासी जू ॥

[१७७]

मेरी ललित लड़ती उर रसी तन में बरी९ गुन रहे पूरि ।
 रूप रसीली हिय लगी जिय की रो सखो जीवन मूरि ॥टेक

१- गले की चौकोर लटकन, २- अंगद, वाजूबन्द, ३- कडे, ४- हाथी
 वज्जा, ५- आभूषण, ६- उपालम्भ, शिकायत, ७- शेष्ठ ।

सिद्धान्त

आलिंगननि सेज लसें हसित वरी सलोने बोल ।
 अधर सुधा पाने करै मैंन मते औंग अंग सलोल ॥
 चुंबन चौप चिहुँट खुभे भाँति भाँति के मुख मधु स्वाद ।
 विवि वरराज कंठनि गसे झूमत गर्व भरि प्रेम प्रमाद ॥
 दरस परस रस अपुन में नेह भीजि देह सिहात ।
 नई रति सुख गटकावत अति नव नव भावनि रंग रहात ॥
 गौर स्याम अवअवै सने कोमल कलेवर नगनि जराइ ।
 ललक लपेट परस्पर रंगनि कौतुक राज केलि कौ चाइ ॥
 अमित भेद कढ़ि कढ़ि परै बाढ़त पलु पलु विमल विहार ।
 खेल सुहेल चसक विधे कीड़ा कोविद कुंवर उदार ॥
 सीतल सीकरे श्वम हरे सौरभ सचेरे समीर ।
 याही तें आनन्द अवधि नहीं कल कर्लिद तनया॑ कौ तीर ॥
 जमुना बन हित वितु सदा ललना लाल विलास भंडार ।
 दीरघ लोभ दुहँ दिसि परे उदित उछाहन मोद अपार ॥
 याही सार ढार संतत रही भंगल बृन्दावन घन बास ।
 नागरीदास निकुंज तलप की निकट प्रबीन बढ़ी रही आस ॥

[१७८]

राग-गीरी

पिय जिय की जीवन मोहनी सर्वस जीवन प्रान जू ।
 दरस परस पद लालना सकल सुखनि निधान जू ॥
 करत रहैं परछाया जैसे फनि५ मनि संग जू ।
 मीन६ वृत्ति तन की भई झूलत छवि जलधि तरंग जू ॥
 रचना रुचिर जावक७ रचै मनि धुंधरू पहिराइ जू ।
 नखनि चंद्रिका चरचि के राखत कंठ लगाइ जू ॥

१- अवयव, अंग अंग, २- जलकण, ३- युक्त, ४- मधुना, ५- सर्प, ६- मत्तनी।
 ७- अलता, महावर ।

कबहुँ चूँमि लोचन दिये कबहुँ परसत भाल जू ।
 जानि विवस अनुराग में अंक भरे बर बाल जू ॥
 देत अधर मधु माधुरी प्रमुदित पुलकित देह जू ।
 आलिगन अँग अँग सने भीजि रहे दोऊ नेह जू ॥
 बाढ़ी केलि सुहावनी ललित कलित कल कुंज जू ।
 नव नव कोकै कलनि भरे बरखत आनन्द पुंज जू ॥
 हरखित रति भई भाँवती राज विलास सुठान जू ।
 कुंवर मनोरथ दाइनी उदित उदार जु जान जू ॥
 नूपुर कलरव किकिनी वलय कंकन झनकार जू ।
 मृदु मंगल धुनि मननि बढ़े चारु चल अंग विहार जू ॥
 चपल हृगनि अलके हरें कवरी छूटे फूल जू ।
 श्याम दसन हँसी कमोदिन फूले आनन्द मूल जू ॥
 कुडल लोल कपोलनी भृकुटि गरब इतरात जू ।
 अहन अधर पूरन सुधा वैभव मुख न समात जू ॥
 वैदा धसि नासा झुम्हे मुक्ता मनि मद ढोर जू ।
 मृग मद तिलक विशाल विच नैन पैन अंचल छोर जू ॥
 साहस सुधि न सम्हार बलु रहे न चितवत भाँति जू ।
 कंत ललक बढ़ी लख गुनी चिबुक चखोड़ा काँति जू ॥
 गलितरे भयो पट सीस तै दरकिरे कंचुकी बंद टूट जू ।
 अमित लब्ध लोभी पति पर्यो लेत अमोलक लूट जू ॥
 उर प्रकाश जगमग रह्यो रहे घूमत झूमत हार जू ।
 प्रबल चौप अहुटत^४ नहीं लचकत कृश कटि भार जू ॥
 सहज समूह सुलभ करे सबै गुपति गुन साज जू ।
 सुरत स्वच्छ सुधानिधे अतिरस विवस-समाज जू ॥

१- काम, २- सरक गया, ३- फट कर, ४- हटना, कम होना ।

स्वेद जुक्त मुख तन भये सखि अंचल ढोरत वायु जू ।
 राखि कुंवरि लै अंक पर विहरावत चित चाब जू ॥
 सौंचत श्रमित जमुना समै सीतल सीकरै वारि जू ।
 सकल सुगन्ध समीर लै गुदरै निकट सुधार जू ॥
 विविध विनोद निसा गई कीरति विमल बढ़ाइ जू ।
 ऐसे खेल दिन दिन करौ नागरीदास बलि जाइ जू ॥

[१७६]

आज नैनन भरि देखिये नव लाडिली,
 मेरी नव नव नेह हुलास । नव लाडिली ॥१॥

कुसुम सुरंग सज्जा रघी नव लाडिली,
 लाडिली मेरी सुभग समूह सुबास ॥२॥

ललित लता घह में लसैं नव लाडिली,
 लाडिली मेरी तलप सलौने खेल ।

हेसत मुजा कंठनि धरै नव लाडिली,
 लाडिली मेरी दरस परसि रस मेलि ॥३॥

आलिगन चुंबन करै नव लाडिली,
 लाडिली मेरी मत्त अधर मधु पान ।

झड़ि झड़ि सुख में उठैं नव लाडिली,
 लाडिली मेरी नई रति उक्ति उठान ॥४॥

कौतुक अवधि कुंचर दोऊ नव लाडिली,
 लाडिली मेरी कोलाहल बड़े चाउ ।

गोर स्याम तन छवि छटा नव लाडिली,
 लाडिली मेरी कहत न बनै बनाउ ॥५॥

१- छोटे छोटे जल कण, फुहारैं, २- प्रवाहित हो रही हैं, प्रस्तुत कर रही हैं।

मंगल मंजुल कुंज में नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी मोहन धुनि मंजीरै ।

सुनत चाइ हित चित चढ़े नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी गमित गुन गम्भीर ॥५॥

रीझ भोझ अंग अंग सने नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी भिदे हियनि मधि भेद ।

पियत मुदित मुख माधुरी नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी पल पल प्रेम उमेद ॥६॥

ललकबलक कल केलि को नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी मैनमते मृदु बैन ।

चिविर आनन अलके रुरे नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी दीरघ हुग चलै सैन ॥७॥

कुण्डल लोल कपोलनी नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी श्रमित बदन मृदु जोति ।

चरच चतुर चौपै चढ़े नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी नौज्वी रुचि अति होत ॥८॥

श्रीफल कुच उच ऊपरे नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी झलकत हार हमेल ।

सनभुख पिय लालच लगे नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी उदित उरज उठेल ॥९॥

रूप अलेल अलेलनी नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी रोम रोम रस पूरि ।

कोमल कोक कलनि भरे नव लाड़िली,
लाड़िली मेरी कुवरि संजीवनि मूरि ॥१०॥

१- नूपुर, २- युगल ।

विविध विनोद विमल परे नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी अब अब अमित सवाद ।
 गरब गरुर गहेलरे नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी मैंमदै मोद प्रमादरे ॥११॥
 क्रीडा कोविद किलकहीं नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी झलकत पानिप देह ।
 सदि ठाठनि ठेलैं ठिलैं नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी अतिहि अगाध सनेह ॥१२॥
 सीत मंद मारत बहै नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी सौरभ अति भरि चाव ।
 मोर मराल बधावने नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी नचत सचत लै भाव ॥१३॥
 खग कुलमिलि चहचरिरेकरे नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी चातिक पिक जस गान ।
 अलिगन गुंजत मिल छए नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी कीरति कीरै बखान ॥१४॥
 जमुना जल सोंकर बहै नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी तोषत पोषै विहार ।
 सचल सधम नहिं परसहीं नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी महल टहल निस्तारै ॥१५॥
 समे समे की सम्पदा नव लाड़िली,
 लाड़िली मेरी तरनिसुता^३ के काज ।

१- उन्मत्त, २- भ्रांति, आलस्य, ३- चहचहार, ४- तोता, ५- तुष्ट पुष्ट कर रही हैं, ६- छुटकारा, ७- यमुना ।

५८]

कमल पराग वरखे हरखे नव लाड़िली,

लाड़िली मेरी रोचक छचि सजि साज ॥१६॥

इह समाज संतत रही नव लाड़िली,

लाड़िली मेरी दम्पति प्रान अधार ।

नागरीदासी बारनै नव लाड़िली,

लाड़िली मेरी ढिग लागी ढंगढार ॥१७॥

[१८०]

दीपक आज सफल भयी नेननि निरछि सहेलि ।

बिलसत बिल पीय हिये पाई है अलबेलि ॥

मद मंथर गति मैमत गुन गन गावत गर्व गहेलि ।

गौर बाहु पति प्रीवा सुन्दर निसि बन खेल ॥

श्याम तमाल लाल हिये लसत कनक की बेलि ।

नृपुर कंकन बलय किकिनि धुनि सुनि श्रुति मंगल हेलि ॥

महा माधुरी संपति अंग अंग सुभग सुहेलि ।

यह अद्भुत कौतुक में सब सोभा पग पेलि ॥

अब अब लोल कपोलनि आनन्द सिधु सुख झेलि ।

मन अहलाव प्रसादी उर उरजनि ठेला ठेलि ॥

प्रेम प्रचंड पराक्रम प्रीति प्रतोत उथेलै ।

कोविद कुंवरि कुंवर की छतियाँ छिन छचि सेलिर ॥

विपिरति मति साधें क्रीडत भीर गम्भीर अकेलि ।

नागरीदास निषट निज साचीर सखी सुकेलि ॥

[१८१]

वृन्दाविपिन सुहावनौ बहु विधि फूल ।

रचना सहज सेवारी श्रीजमुना के कूल ॥

१- ऐद की बात को गुप्त रखने वाली, २- वरछी, ३- एकत्रित की।

नव नव ललित लता द्रुम नाना रंग ।
 अपनी अपनी बानी ढोलत विविध विहंग ॥
 अटबीै कुसुम विछाए झूलत गुच्छ ।
 विविध पवन सुखदायक बहत दिन सुच्छ ॥
 चतुर माँति के विगसित जल थल कंज ।
 मत्त मुदित भृङ्ग गन मोद मन रंज ॥
 कोकिल कल आलापति नाचत मोर ।
 रोझ गहत जनु डोलत चरन चकोर ॥
 मान देत मनौ हंस सारस चहुँ कोद ।
 ऐसी अमित मंडली विविध विनोद ॥
 देखौ कुंवरि कानन छवि तुम्हरे हेत ।
 प्रात बधौ हौं पीय सौं कुंज संकेत ॥
 सुरत करौ हौं बारी चातक लाल ।
 जाँचत तुव पद पदबी रसिक रसाल ॥
 सुहथ सेवारी सेज सुगन्धनि पूरि ।
 मारग जोवत कुंवर सजोबन मूरि ॥
 रसना रट घट रूप जानि यह रीति ।
 उर लगाइ अधर मधु दै करि प्रीति ॥
 सुनत सखो के बैन नैन जल हँधि गये ।
 कहु न फुरत मुख बात बाहु ग्रीवां दये ॥
 सेननि माँझ जनायी बेगि मिलाड ।
 अँखियनि कल पिय प्यारौ तुरत दिखाड ॥

[१८२]

राग-कान्हू

उपधिरं देत मधुपान मुख में धरि ।

आलिगन अंग अंग मिलावत दावत उरसौं उमगि उरज वर ॥

रूप विवस भरि स्वाद स्वादिले बबलि दसा छवि लसत हिये पर ॥

उमगि परत विवि चोखरे चसक रस नागरीदास केलि कौतुक कर ॥

[१८३]

श्रीहिताष्टक

रसिक हरिवंश सर्वंश श्रीराधिका,

राधिका सर्वंश हरिवंश वंशी ।

हरिवंश गुरु शिष्य हरिवंश प्रेमावलि,

हरिवंश धन धर्म राधा प्रशंसी ॥

राधिका वेह हरिवंश मन राधिका,

राधिका हरिवंश मम श्रुति वतंशी ।

रसिक जन मननि आभरण हरिवंश हित,

हरिवंश आभरण कल हंस हंसी ॥१॥

रसिक हरिवंश रस लाड़िली लाल बस,

लसत बन अंग इक रंग रंगी ।

श्रीराधिका बल्लभो बल्लरी प्राण धन,

सुधन निरखत रहों सुरत रंगी ॥

ललित सखि कुञ्ज सुख पुञ्ज वरषत युगल,

ललित मन एक तन चार गौरंगी ।

रूप लावण्य अनुराग अँग माघुरी,

केलि कल कलित तरलित तरंगी ॥२॥

१- छल, २- तीव्रता, वेग ।

सिद्धान्त

रसिक हरिवंश मन लाड़िली लाल तन,
 ललित अनुराग वपु करनि लीने ।
 बाम भुज लाल दक्षिण भुजा लाड़िली,
 ललित गति चलत मल्हकत प्रबीने ॥
 रसद बृन्दाविपिन मोद मकरन्द सद,
 माधुरी प्याय पीवत नवीने ।
 युग युगल इक रंग चतुरंग पुलिन स्थली,
 यमुन कल कुंजरति रंग भीने ॥३॥
 रसिक हरिवंश मन एक तन चार हाँ तो,
 वेणु बाणी विमल मोल लीनी ।
 बाँह छहूँ छाँह करि छहूँ पद रज सिरधरि,
 अँखियाँ छहूँ छको छवि रहों अधीनी ॥
 अल्प पल ओट सत कल्प बीतत जिन्हैं,
 दिव्य कैशोर हृदि हष्टि दीनी ।
 नागरी नवरंग निकुञ्ज हित कल्पतरु,
 तीर छवि भीर भृङ्गि न नवीनी ॥४॥
 रूप हव लाड़िली लाल लावण्य हव,
 नेह हव हरिवंश विपिन आसक्ति हव ।
 वैसंघि इक वर्ण ऐन वर्ण वरनत बने न,
 तरुण शैशाव विभ्रो विलसे सौदर्य सद ॥
 नैनामृत मंजरी मृदुल अलिराज युग,
 युगल एक रंग रँगे पुलिन कालिद नद ।
 नागरी नवरंग निकुञ्ज हित कल्पतरु,
 पत्र फल फूल सर्वांग गोरांग पद ॥५॥
 युगल रस सिधु सेवे पुलिन रस सिधु कों,
 नलिन हरिवंश अलन्द लहरी ।

६२]

ललित वाणी विमल वार अर पार नहिं,
थाह कहूँ नाहिं अति निपट गहरी ॥

अनन्य जन मीन आधीन है अनुसरें,
प्रेम अंजन दियें हृष्टि ठहरी ।

नागरी नवरंग निकुञ्ज हित कल्पतरु,
पलक पल ललक परी रूप दहरी ॥६॥

रसिक हरिवंश वर विमल कल कल्पतरु,
प्रेम फल कलित अनुराग वाणी ।

केलि कल कलित अति ललित आमोद वन,
अबन पुट पिवत नवरंग रानी ॥

रसिक मंडल विमल झूमिका झूमि रहे,
श्रीराधिका बलभ अमान दानी ।

परमहंस अधार रस सार धारा अवत,
भजन एकान्त जिन मन समानी ॥७॥

रसिक रस सरस सर हंस हरिवंश जू,
केलि मुक्ता चुगत मन नैन दीने ।

प्राणवि के प्राण मेरे प्राण जीवन सुधन,
हृष्टि प्रति हृष्टि आलिगन नवीने ॥

सकल सुख धाम विश्वाम वन विलसि हंस,
यमुन कल कूल अंग अरगजन भीने ।

दिव्य आभरण वसन ललित अंग माधुरी,
प्रेम पर्यंक सुअंकनि में लोने ॥८॥

[१८४]

ये कर्लिद कुंवरि वर कुशल किशोर करुना कर ।

ललना लाल विलास संपदा सौरभ सोकर श्रम समूह हर ॥

तिवाल

मेल सुहेल खेल बहु भाँतिन केलि बेलि पोखन सब सुखकर ।
 हुलसि हुलासनि ललक लालची प्यारी प्रिया विहार सार सर ॥
 नव नव लाड़ चाढ़ चतुराई उभड़त विसद विनोद विपिन भर ।
 नागरीदास निज नेह देह सन क्रीड़त पुलिन नलिन सज्या पर ॥

[- १८५]

उपजी चौंप अपार सार रति नाइक उतनै दावि बल लीनी ।
 बैठी सुभग सिंहासन आसन अधर अदन मधु मादक पीनी ॥
 मदन मान मलि गरब किकिनी डिडिमै नदित जयति कटि छीनी ।
 फैल छैल मरम भेदनि रस जीत कीर्ति पति गति सब कीनी ॥
 कोक संगीत मीत मद पोखत राजत राज साज रंग भीनी ।
 नागरीदास बंभव विलास रस विलसत सकल कला परबीनी ॥

[१८६]

राग-विहागरी

वर विहार चित चाइ चढे ।

प्रमुदित फूल न समात परस्पर परिरंभन चुम्बननि बढे ॥
 फैलि परे हुग अब छवि खग मानो बाज राज जुग कुलहंकडे ।
 नागरीदास विवि प्रेम परावधि निज सजनी सुख सुजस रढे ॥

[१८७]

ओकोरति नृप बृषभानु की चेंदुली४ ।

लाड़ गहेल लली अलबेलो विलसत पिय हिय चेंदुली५ ॥
 हैंसि हैंसि दुरकि दुरकि लगे छतियाँ परिरंभन पतिप्रेम समेंदुली६ ।
 फैलि फूल मद मोद बढ़ावत नागरीदास दारिद्र मेंदुली७ ॥

१- उस ओर, २- डमरू, ३- शिकारी पक्षी का सिर डकने की टोपी, ४- रटती-
 हैं, ५- लाड़िली, ६- कंठ लगने वाली, ७- समेटने वाली, ८- मिटाने
 वाली

[१८५]

झलमल झलके झलक सौं ।

पूरन पानिप्रे भ्रम प्रकासिक अब अब नचैं मद मलक सौं ॥
अलक लूम लियैं लबधि१ लाल उर पलक न लागैं पलक सौं ।
नागरीदास दुर्लभ दुलरावत आनेंद आवेसी ललक सौं ॥

[१८६]

आज सखि कौतिक झूमक झूमत ।

कंकन किकिनी बलय घूँघूँ बाजत कुंज सदन घन घूमत ॥
अलि पिक मोर मराल सहित सखिगन कोलाहल में महिर खूमत३ ।
पानिप्रे भ्रम प्रवीन लाडिली लै बलाइ मोहन मुख चूमत ॥
हँसत दसन दुति चौंधि मगन मन दै अधर पान आलिगन टूमत४ ।
केलि कुशल निधि नागरीदास बलि नौखौ अलिक५ अलोलकु६ रुमत७ ॥

[११०]

किसोरी कहत न बनै सतभाव ।

प्यावत अधर सुधा सुख कंतहि बर बिहार मन चाव ॥
झूमत अलक हार उर झमकत लचकत कटि किकिनि राव ।
नागरीदास सेज रस भीजे लसत अंग रंग ललित बनाव ॥

[१११]

सजे कुंवर सज्या पग धारे बाजत भूषन कल रत्न तूर८ ।
सुरत सूर तन बोर चढ़यौ धीर उमगै मननि प्रे भ्रम परिपूरि ॥
जोर रहे उठि परे लरे रंग रति संग्राम बानेंत९ सुसूर ।
नख प्रहार रद१० धात सहत धर११ नागरीदास मुख महा गरुर१२ ॥

१- प्राप्ति, २- भूमि, ३- खूँदना, ४- उकसाना, ५- ललाट, कपोल, ७- अचैं
चल, स्थिर, ६- झूमना, ८- तुरही, ९- योद्धा, १०- दाँत ११- धारण करने
लाला, १२- अभिमान ।

[१६२]

राग-चर्चरी

कलिद नंदिनी सुतीर विलसत नव कुंवर

धीर नंद नेदन मुदित श्रीबृषभानु नंदिनी ।

उमे कंठ भुजनि धरे अधर सुधा पान करे

गौर स्याम अंग मानों जलद चंदिनी ॥

कोमल जनु कनक बेलि राजतनव रेगनि^४ केलि

गात पिय के लपटि रही आनेद कंदिनी ।

सरस सुरत सुखनि भरे अधर सुधा पान करे

नागरीदास न्यौछावर रसिक बंदनी ॥

[१६३]

गौर स्याम अब अब प्रतिविवित सुरत सुखनि भरकरत कलोल ।

वर विलास रस हुलसि छूटि कच उरझी चंपकली डोल ॥

जाधे सोस फूल अटकी छवि अंचल चल ताटंकनि झलक कपोल ।

मृकुटिन पर बैंदा धसि झूमत रुचिर जलज मनि नासा लोल ॥

हेसि हेसि अधर सुधा पी प्यावत अलबेलो काम केलि कलोल ।

नागरीदास बलि विचित्र बानक पर इत गंभीर धुनि उत मृदु बोल ॥

[१६४]

पेने नैना चलत झपकत पलक तऊ छलत ।

चपल कुँडल विलुलित रेकच आनन पर हलत ॥

चुंबन परिरंभन भर ललित लाड अंग लुलित ।

नागरीदास अधर पान प्रिय प्रान पलत ॥

राग-भेरों

[१६५]

चलत सुदेस^५ लटक मदमाती ।

गरब गंभीर गहिल गुन गन गति छैल फैल छवि छई पति छाती ॥

^५ पाठान्तर—नवरंग नवेलि । १- खटकना, २- झूमते हुये, ३- पलते हैं,

४- मुद्दर ।

६६]

लोचन धूरनै मद रस पूरन पानिप प्रकासित प्रीति प्रभातो
नागरीदास भोर कीतिक अब अब सुख लूटें सखी न अघातो ॥

[११६]

जीवत परस्पर रूप रहृचटे० २ ।

विविवसन भूषन जुत अब अब छवि परस सरस सेज समाज ठटे० १
भोग संजोगी भोगी विलसत प्रभुदित पुलक अनुराग अटे० २
चुंबन चख५मुख मधु पी नागरीदास लोभी लाल ललक न घटे० ३

[११७]

मस्त इन इरान चुम्बन दान मधुपान सुहृद सनमान
प्रबल प्रकास सुवास समूरि श्वे द्रवत महा मकरन्द अमान
रूप अनूप अनौखे कल कढ़त बाढ़त चौंप शिरोमनि जान
पोष संतोष परस्पर पूरन ठान बान उपजत गुन गान
मोद मुदित प्रबल प्यार ठौर ठौर पानिप मंगल निधान
अब अब रमि तन अमित माधुरी नागरीदास विलसत पिय प्रान

[११८]

बेलि बिटप६ तह७ किसलय८ सैन९ ।

अदभुत रीति समीति समागम विलसै सुधर सुख सुरत चैन ॥
बर विहार लसै ईखद बदन गरब मते मृदु मैन बैन ॥
नोखी चोखी खेल मेल निज निरखत नागरीदास सफल करि नैन ॥

[११९]

मोहि काज याही एक जीय सौ० ।

सर्वसु अपि निषट मन अटक्यौ प्रान भाँवती प्रीय सौ० ॥

१- टकटकी, २- छसके में, ३- सजाते हैं, ४- पूरित हो रहे हैं, ५- नैन
६- झाड़ी, ७- वृक्ष, ८- कोमल पत्ते, ९- शेया ।

विद्वान्

मम विद्या मम उर की सजनी गुदरि१ चतुर वर तोय सौं ।
सुनत सजल लोचन नागरीदास उमगि लगावत हीय सौं ॥

[२००]

ताड़ हठोल हठ आधी बतियाँ ।

देखत ही बनै कहत नहि आवै अनहोते अद्भुत सुख छतियाँ ॥
प्यार प्रहार पराक्रम परिरंभन गर्वालो उपजत गुन घतियाँ ।
नागरीदास प्यार की परावधि महा मनोहर मैन मद मतियाँ ॥

[२०१]

अधर मधु माते रे मतवारे ।

प्रान प्रबीन परम रस लंपट निमिष होत नहि न्यारे ॥
विद्यकित नाहि विवस रस अति रति पल पल पी निसि दिन नहि हारे ।
नागरीदास चित चाइ चढ़ि रहे स्वाद रमै उतरत न उतारे ।

[२०२]

राग-सारंग

सुभग बहत सचि२ सीतल पवन ।

पुलिन नलिन मकरंदी बहुरंग निकट प्रवाह निकुंज भवन ॥
ज़कोरत लहर अंडुकन बरसत सौरभ मावत सुख शमन दवन ।
नागरीदास विलास पोखियत फूल परस्पर लाड़िली रवन ॥

[२०३]

सुधर सिंगारनि को यह खेवौ ।

मुख मधु पान चुंबन के विच विच सुधा सौरभी रीझ अचैवौ ॥
दवन मिठास और ठौर ठौर सुभग सवाडु सदु मदु अरजेवौ ।
सवा सतृष्ण सरस ये लोभी नागरीदास आतुर३ अकुलैवौ ॥

[२०४]

परस्पर मुवित समात उरनि में ।

अति आसक्त आलिंगन चुंबन ललक४ बिकाने री मवन दुरनि में ॥

१- कहाँ, प्रस्तुत करो २- सखदाई, ३- अधीर, ४- आसक्ति ।
Digitized by Vasshtha Tripathi Collection.

६८]

हास विलास हुलास मते मन अगनित नव नव भेद जुरनि में।
नागरीदास राग रंग कौतिक नूपुर किकिनी बलय सुरनि में॥

[२०५]

राग-नौणे

नागरि नितंत केलि सुधंगी१

पिय के सुभग अबनिर आँलिगत अति हरखत गुन गननि अनंगी॥
चुम्बन करत पुलकि परिरंभन लटकत मटक भ्रकुटि-धूभंगी॥
अभिअन्तर रस उमड़ गात दुति रति रस बरखत उरज उतंगी॥
छाजत छैल कोक विद्या वर फरकत सुघर गरव डेंग अंगी॥
नव नव उकति गतिन विलसत बलि नागरीदास नेह नवरंगी॥

[२०६]

राग-अडाले

उनए नये घन उदमदे।

अति मन भावन सजल सुहावन उमड़ि उमड़ि अहलाव लदे॥
पिक पपोहा गान केकि कल नचैं ठौर ठौर भरि प्रेम प्रमुदे॥
नागरीदास वरखा विलास सुख दृग चकोर मुख चातिक नदे३॥

[२०७]

दोङ पावस बसंत भये रहें।

विच विच फूल विच विच वरखा प्रमूदित

पुलकि रति रंग छये रहें॥

सौरभ समीर समह स्वास तन झपक झकोर झर दाउ४ दये रहें॥

हास हुलास विलास प्रकासी सरद निसा

कोटि उदौ पानिप परे रहें५॥

चुंबन परिरंभन परस्पर अति सावर दरसन मान लये रहें॥

नागरीदास संपदादि समागम औरौ रितु रति बीज बये रहें॥

१- अच्छा ढंग, २- अज्ञों को, ३- शब्द कर रहे हैं, ४- दाव।

५- पाठान्तर—ये रहें।

[२०८]

तेरे वदन चटक की मटक मत्यौ प्रेम प्यारी ।
 माँति अनौछो अनूप दरस सुख रूप गरब गुन गारी ॥
 यह गोरी सुकुंवार कलेवर प्रिय हिय जिय आँखनि को तारी ।
 नागरीदास बलि नेह निरन्तर कुच बिच राखि सम्हारी ॥

[२०९]

ललित विलास निपट दोऊ भोर ।

उदित उजागर पानिप अब अब दरस परस रति रसनि अमोर ॥
 गरब गंभोर धीर लगे लाहके सौरभ स्वाद अब तननि ज्ञकोर ।
 ठौर ठौर टक टोलति नागरीदास बाढ़त प्रबल काम कल रोर ॥

[२१०]

माँति भाँति छवि सौरभ भभक ।

पान करति नित प्रति लोभी पिय बाढ़ी ललक लभक ॥
 मोइमुदित लै मकरंदी मधु चाँप चिहुठ चख चसक चभक ॥
 विमल परे मन मैमत नागरीदास अनुराग खभक ॥

[२११]

राग-विहागरी

पियको प्रीति समझि सयानी री ।

अद्भुत रूप अनूप अनौछो लगि हिय अकथ कहानी री ॥
 सुभग सुसील नेह निधि देखत तन मन मुदित गुमानी री ।
 नागरीदास अप जतनि रौकियत ढरि न मिले पिय पानी री ॥

[२१२]

मूल फूल की झूल यहै है ।

जामहि अद्भुत आनन्द अविरल उभय स्वाद सद संगम रहै है ॥

१- अमोल, २- ग्राहक चाह, ३- कोलाहल, ४- चाह, ५- चाह, ६- अभि-
 नाथ । OC-0. Vasishtha Tripathi Collection.

५०]

हिये अधार सार रस सजनी ललना लाल कल सुखनि सिहैहै ।
अध उरधरेंग हुलसि मुसकि रति नागरीदास रमि रजनी चिहैहै ॥

[२१३]

गरव गहिल गुन गति साँ खेलें ।

ललित चलित तन फूल न समात मन विमल बाहु श्यामल गर मेलें ॥

अभिअन्तर की उमड़ि भेद भर गूढ़ गरूर लाड़ अलबेलें ।

अद्भुत अब झकोर झूमत मद नागरीदास मकरन्द अलेलें ॥

[२१४]

दीजे चुंबन प्रान बान ।

पायें रोम मरम पुष्टै अधर अमी पान ॥

प्रनत पाल प्यारी कृपाल पद अनुचर जान ।

नागरीदास हँसि हिये लागो परिरंभन सनमान ॥

[२१५]

लाड़ गरव गंभीर मान सर ।

याको सहज समाज साज इह जल थल मंडित वर विहार भर ॥

मोद विनोद भेद बहु भाँतिन अद्भुत मंगल अविरल सुख कर ।

लाडिली लाल प्रीति की परावधि सुभग सरोवर केलि कुशल धर ॥

सादर साधै अगाधन पोषनि कुंवरि कुंवर कामना कलपतर ॥

सागर अमृत सेवत नागरीदास गौर चरन सहचरि नारो नर ॥

[२१६]

राग-गौरी

गहवरि गिरि साँकरी गली ।

कछु न सेँभारि देह सुधि बिसरी मिली औचकै वृषभानु लली ॥

दच्छन कर गेंदुकै कुसुमनि की बाम अंश भुज सुहृद अली ।

अंचल ढारं आधे सिर छवि मत्त दुरदृप गति आवति चली ॥

१- सराहना करोगे, २- नीचे ऊपर, ३- बीत जायगो, ४- पोषित होंग,
५- कामना, ६- अकस्मात्, ७- गेंद, ८- हाथी ।

गुन प्रयोग सहचरि सेमरावत हृदे रूप मूर्छा सलीै ।
नागरीदास मिटाइ ललक रति मिलत उरज उर गति बदली ॥

[२१७]

कुंज कुसुमित महल उदित आनन्द चहलरे
सुरत सुख सार ढरि लाल ललना मिले ।
रीझ दोऊ तलप रस उदित मन ललक बस
उमगि अंग अंग अनंग नेना हिले ॥

चौप चुंबन भरै अधर मधुपान करै
शूल रति फूलि अति गर्व गुन गन जिलै ।

हरखि हठि हियनि बढ़ि चतुरचित चाइ चढ़ि
नागरीदास बलि उभै अब अब मिले ॥

[२१८]

सार साज समाज वृन्दारन्य बैठो बनि विमल पति हीय ।
रोम रोमनि भरम मरमनि मरमो लाड सुवस लोभी लालनु जीय ॥
बाहन स्याम कर प्रिय पद बाहक पोर भीर भर ठाठ ठँयौ पीय ।
निरवधि खेल सुहेल सुधानिधि नागरीदास निज नेह भरे घट बीयै ॥

[२१९]

राग-कल्पान

गौर स्याम तन दिपत पटनि में ।
नोल पोत धरै खेलत रंग भरे दरस परस रीझ कटनि४ में ॥
चुंबन परिरंभन मुख मधु पीयै फैलि फूल सुख ललक अटनि५ में ।
नागरीदास अब अब दुलरावन भेद मिदे भीतरी दटनि में ॥

[२२०]

मोहन मूरति अरु मदन चढ़ी ।
याहो तें रूप अनूप अनौखे विशद विहार विनोद विपुल बढ़ी ॥

१- गड़ी हुई, २- दलदल, ३- युगल, ४- आसक्ति, ५- अटारी, ऊचाई ।

७२]

नितं गान गुन कुशल कंत उर सुधर विचिन्ता कहाँ धों पढ़ो ।
सहजसाजसब बदलि नागरीदास ठौर ठौर छवि सुधर फेरि गढ़ो ॥

[२२१]

तलप कुशल मेल आनेद बेहद ।

विलसत विमल लाल उर ओहठी मद मंथर गरबीली गति सद मद ।
चुम्बन अधर पान परिरंभन गौर बाहु गर रोपन सुख हद ।
नागरीदास सुनत श्रुते मंगल नूपुर कंकन वलय किकिनि नदे ॥

[२२२]

राग-काढ़ी

मेरो सूमत हथिया मद कौ ।

पिय हियहिलग परी पग सांकर मैं मद अपनी सदैकौ ॥
सुरत नदी मरजादा ढाहृत मान गुमान अनुराग उलदैकौ ।
नागरीदास विनोद मोद मृदु आनन्द वर विहार बेहद कौ ॥

[२२३]

विलसत तलप सुखेल आदरी ।

दोऊ हरस रस रीझि परस्पर हिलगै हेत को ढोठिऊ सादरी ॥
नूपुर कंकन वलय किकिनी श्रवननि मंगल नेह नादरी ।
नागरीदास आलिगन आदर फूल न समात तन प्रेम प्रमादरी ॥

[२२४]

जकि जकि थकि थकि रूप रस मैं परैं ।

कबहुं चौप चाव उमड़त मन कबहुं सुख सुध बुधि विसरैं ॥
कबहुं चोखा चोखी विहरैं कबहुं भुराई मैं भजरैं ।
कबहुं परस्पर लालन पालन कबहुं रुखाई भौन धरैं ॥

१- समा गई, २- कान, ३- शब्द, ४- प्रकृति, ढंग, ५- झड़ी, ६- उत्कण्ठा,
७- दृष्टि, ८- भ्रमित हो जाते हैं ।

कबहुँ जकराै लगत खेल कौं कबहुँ रीझि रीझि अंक भरे ।
 कबहुँ सचरे आवेस विथकिताै कबहुँ केलि कौतुकी फैल परे ॥
 कबहुँ गान गुमान गर्व भरि कबहुँ निवरि बिच अम पकरे ।
 कबहुँ सुहृद होत छिन भीतर कबहुँ कोटिक कपठ से करे ॥
 कबहुँ आपु में हिय छुसि यैला कबहुँ छुवत अब रोखै मृकुटि लरे ।
 कबहुँ सुद्ध सरल सत भावक कबहुँ नितुर से देखि डरे ॥
 कबहुँ लालन रागी भागी ह्रै कबहुँ शुकि शुकि हैसि झगरे ।
 कबहुँ करनि सौं कर गहि ज्ञारत कबहुँ लाङ्गलपटाइ उर ढरे ॥
 कबहुँ विविधि उदार दान दै कबहुँ रंचै रंच कौं लरे ।
 कबहुँ बेपरवाह छैल छकि कबहुँ सकुच समीतै से करे ॥
 कबहुँ सुरत सिन्धु छोलरै सौं कबहुँ बूँद बूँदन टकटरे ।
 कबहुँ व्याकुल ज्यौं अकुलाहट कबहुँ औहठो अमिठु उघरे ॥
 कबहुँ विथकि मधु सौरभ स्वाद सद कबहुँ मोद मात बगरे ॥
 कबहुँ चुम्बन चिन्ह दरस हेत देत आदरस दुहैं करे ॥
 गरबोले अरबोले दोऊ फूले पति छतियाँ अचरे ।
 नागरीदास जुगल औरेठीन विशद विहार विमल विहरे ॥

[२२५]

कड़ि बड़ि परत सुख उमड़ि हिये ।

कबहुँक मगान होत रस अति रति रोममरम रम पुरबैं फूल फैल जिये ॥
 मद मंथर गति भाहा मदंधी मकरन्दी मधु अधर अमीै पिये ।
 नागरीदास ललक लालच रति लाहूक लाङ्गलपटै मृडुल मननि विये ॥०॥

१- धुन, २- सुख, ३- शिथिलता, ४- रोष, क्रोध, ५- अत्यत्प, ६- छिलता,
 थोड़ा जल, ७- फैलते हैं, ८- विभिन्न प्रकार से, ९- अमृत, १०- दोनों के ।
 उ पाठान्तर—समात सकरे ।

[२२६]

राग-केदारी

कोमल कुश कटि लचक किकिनी नद ।

नूपुर कल कंकन चलय धुनि पूरित मंगल अवन सुखद हृद ॥
चौप चाइ चित अदभुत गुन गन गरब गहिल गति मृदु मंथर मद ।
नागरीवास प्रेम को परावधि पल पल पानिप केलि विशद सद ॥

[२२७]

दोऊ और दोऊ मिठास महा मधुर ।

उमड़त अध उरध रस अदभुत भेद भौतरी नई नई फुरै ॥
जुगल घटन में जुग रस संगम मुदित परस्पर प्रेम प्रभा प्रचुरै ।
नागरीवास अधर अदनादिकै स्वास समूहन प्रति रति अमुरै ॥

[२२८]

कूजत कुंज कोकिला बचनी ।

सुनि सिरात अवन हिय री अमृत बैननि सुख सचनी५ ॥
ठौर ठौर दुर्लभ दुलरावन लगि रही पिय जिय जक६ जचनी ।
चातुर चातिक पति अति रति रट लाहुक ललित ललक लचनी७ ॥
फैली फूल कंत८ कल हियरा विमल विहार रंग रचनी९ ।
अंग अंग प्रति अमित सुधंगी नागरीवास नेह बचनी ॥

[२२९]

राग-बिहारी

पहिरै कल शूमक सारी शूमि रह्यौ लोभी पिय कौ मन ।
शूमत कंचन चलदल धूघट नैननि पल लागें न लीनौ पनै० ॥
श्याम दसनि हँसि चौका सित दुति फैलि रही सोभा संपति धन ।
नागरीवास तोरै तुन प्यारौ वरतै११ यौं जोधन सर्वस धन ॥

१- स्फुरणा, २- पर्याप्ति, ३- भोजनादिक ४- न मुड़ने वाली; ५- देने वाली,
६- लगन, ७- सचकनी, ८- प्रियतम, ९- रचना करने वाली, १०- प्रतिशा,
११- न्यौछावर करते ।

[२३०]

राग-लखित

विलसत निपटै निवटै दोङ मोर ।

उद्दित उजागर पानिप अब अब दरस परस रति मोर ॥

गरबगंभीर धीर लगि लाहुक सौरभ स्वाद अवैर तननि झकोर ।

ठोर ठोर टकटोलनि नागरीदास बढ़त प्रबल काम कल रोरे ॥

[२३१]

राग-विलावल

पिय हिय सिंहासन बनि बैठी ।

पानिप प्रेम प्रबीन प्रान प्रिय तन मन भरि अभिभंतर पैठी ॥

गहिल गरूर गंभीर गरब गति अंग अंग छवि लाड अमैठी ।

नागरीदास अरबीली औहठी विलसत मद माती ऐठी टैठी ॥

[२३२]

तलना लाल विलास सिंगारी ।

सब सुख भरन लाड विस्तरनी सूरसुता^३ मृदु मंगलकारी ॥

सौरभ सीकर आलस अमहर कोलाहली केलि कलधारी ।

नागरीदास भवन बन बोथिन कीरति उज्जल प्रीति पसारी ॥

[२३३]

नाहुए निहोरी नोषी चोषी ।

हेसत लसत मृदु मुख तै निकसत बतियाँ कुशल काम की पोषी ॥

मन भावन हिय जियहि सिरावन रोम रोम रमि मरम सेतोषी ।

अलभ लब्ध लूटत लोभी पति नागरीदास आन सब सोषी ॥

[२३४]

राग-आसावरी

भायो री मेरी बीर मास असाड अति सुहावनौ मन भावनौ ।

उमड़े री मेरी बीर उनमद मत गरजे जलधर सावनौ ॥

१- अस्यन्त, २- निवृत्त, ३- झरता है, ४- कोलाहली, ५- स्थित हो गई,

६- इठी हुई है, ७- यमुना, ८- नाथ ९- शुष्क हो गई ।

७६]

बरसे री मेरी बोर कीरति गांव जनियत उवतन^१ अथावरौ^२ ॥
 गरबैरी मेरी बोर हिताज्जू के लाड गहवर गिरिगली सांकरी ।
 उल्हर्यौ^३ री मेरी बोर सजल सुपोष महाराज वृषभानुपुरो ॥
 तामे री मेरी बोर दामिनि प्रकास बरननि गुन बदरा चले ।
 हिलिमिलि री मेरी बोर अंबुद चंद छवि प्रकास उघरें शपै ॥
 मंगल री मेरी बोर कोकिल गान आतुर रति चातिक रटे ।
 नाचत री मेरी बोर बरहि^४ अनुराग महा महोष्व पावसी नटे ॥
 सहचरि री मेरी बोर उर सरसरिता पूरि भाग भूर कौ पैषनो^५
 रसनिधि री मेरी बोर जलद विलास सुवेलत दंपति रङ्ग घनी ॥
 सौरभ री मेरी बोर जमुना के तीर जल सीकर मारुत श्वै ।
 नागरीदास निरवधि^६ निज केलि आलस षेद न परसे द्रवै ॥

[२३५]

लाडिलो लड़ावन सरवंगी^७ समरथ ।

रोत समीत जीत मन भजनहि को बपुराद चलि जानै यह पथ ।
 श्रीवृषभानु राज कुंवरेली हित वितु सर्वस प्रान जीवन गथ^८ ।
 श्रीहरिवंश सुबचन नागरीदास को छ्वं सके रंग रस ऊलथ^९ ॥

[२३६]

मृदु नलिनी दल कमल तलप रचो ।

निकट प्रवाह निधि जु मंजु मैं कोमल पुलिन नव कपूर चूर सचो ॥
 तापर लाडिलो लाल हरषभरि कोलाहल कल केलि कुशल मचो ।
 त्रिविधि समीर अंबु कन बरसत लहर झकोरनि पति न कहैं बचो ॥
 विविधि विनोदनि विलसत बोंग बेंग प्रति अमित सुधंग नचो ।
 गरब गहेल मद मंधर गुन गति नागरीदासि पति हृगनि मांझ षचो^{१०} ॥

१- कंचा, २- अबाई, बैठक, ३- उमड़ आया, ४- मयूर, ५- हृषय, ६- नित्य,
 ७- सब प्रकार से, ८- बेवारा, ९- सम्पत्ति, धन, १०- उछाल
 ११ जड़ी हुई है ।

[२३७]

हृप्रकास जोति निकसी ।

बंदी भाल भाँग मुकता मनि वेनी छवि सिर सारी घसी ॥
 लोचन लोल कपोल तरोना॑ स्याम दशन दुति अधर बिब हँसी ।
 मद मंथर गुन गति गरबोली छेल छबोली विमल विलसी ॥
 दरकि कंचुकी उरज प्रभाकर झूमत हार बिच बनक प्रान बसी ।
 उधरि नाभि पुट सोभा सागर सुकुमारी कटि कसनि धसी ॥
 लाड़ गड़ गँठर पूरि पानिप तन अधर अमी पिय रंग रसमसी ।
 उदित उदार दालिद्र दवानल॒ नागरीदास पति हियैं लसी ॥

[२३८]

रतन घचित मणि धूंघरिया वाजे पाइन ।

झ झुन किकिनि शब्द करत कुश कटि,

कंकन वलय सुरनि मिलि चले चाइनि॑ ॥

गरव गहिल गुन गति भद्रमाती वरषत विविधि दिनोद भरि भाइन ।
 नागरी दास रीक्षि कौ औसर सुन्दर सुभग सुदाइ बचाइनि ॥

[२३९]

आरति जानि मौन प्रभु हौ ।

तुम प्रीति समीति रीति रति रंगी कौतिक कुशल प्रनय द्रुम हौ ।
 पावस प्रबल प्यार परिपूरन समझै कौन प्रेम कौ उमहौ ।
 नागरीदास वलि व्यास सुवन जू भजन भेद भरि अकलुम हौ ॥

[२४०]

रितु पावस रति रसीली थगै है ।

रोमनि मरमनि रमति भीतरी बरी कठिन अहलाद५ हिलग६ है ॥
 उदमद७ वरषा मन मत्त उमहृत८ हठन हठीली अनुराग की लग है ।
 मेघो९प्रीतिसमीति रीति धकै०नागरीदास मति मैमति जक जग११है॥

१- कण्ठभूषण, २- बन की अग्नि, ३- चाव भरे, ४- समा रही है, ५- प्रसन्नता
 ६- लगन, ७- उन्मत्त, ८- उमड़ रही है, ९- गाढ़ी, १०- स्तव्य, ११- जाग रही
 है।

७८]

बाजी थीनेही नागरीदास जी महाराज

[२४१]

प्रात ठाट कल केलि फैली ।

विलसत विमल विनोद लाल उर पल पल प्रति रति पानिप सैली^१ ॥
 ठौर ठौर ठिक अलभ लड़ावन गूढ़ गहिल गुन गरब अधैली^२ ।
 मद मंथर गति रीझि सुवस पति नागरीदास छाजते छवि छैली ॥

[२४२ .]

राग-भैरो

भोर केरि भरि ठाढु छट्यौ है ।

सेज समाज राज क्रीड़ा कल रजनी गति रति बेल न घट्यौ है ॥
 नव हुलास नव चाइ दाइ बड़े लाड़ लड़ावन रंग बट्यौ है ।
 प्रीति प्रबोन प्रात पूरन सुष नागरीदास नेह निबट्यौ^४ है ॥

[२४३]

फैल फूल रस प्रात लपटात ।

गौर स्याम अब अब प्रतिबिवत उघरि उघरि आवत ढकि जात ॥
 कबहूं होत निपट न्यारे न्यारे कबहूं परस्पर उरनि समात ।
 कबहूं दरस परस रस विद्यकित कबहूं अंक भरत अकुलात ॥
 कबहूं होत महा मदमानी कबहूं अंग लालन^५ ललचात ।
 प्रीतम प्रीति प्यार की परावधि नागरीदास बेलत न अधात ॥

[२४४]

ललक भरे परे न रहे ।

लष गुन चाइ दाइ भाइनि बड़े अंग अंग रति रंग नहे^६ ॥
 लाड़ गरूर धूट पानिप तन अरबीले^७ गुन गरब लहे ।
 चोषा चोषो चौप चौकसो नागरीदास इक तक^८ निबहे ॥

[२४५]

परम प्रबोन प्रिया पन पारत^९ ।गरबोली गति छंल छबोली सुष समूह स्यामल उर भारत^{१०} ॥

१- थैली, प्रकार, २- छकने और छकाने वाली, ३- शोभा पा रही हैं, ४- पूर्ण
 ५- दुलराने के लिये, ६- भोगे, ७- गर्व भरे, ८- एक रस, ९- पालन करती
 हैं, १०- भरती हैं,

गहर गंभीर धीर धक लाड़ गहर चरण वर धारति ।
 गुपुर कंकन धुनि बलय किंकिनी कुशल कुंवरि कौतिक विस्तारत ॥
 पिय मन पकरि चित चलन न पावे-विथक बूढ़ जक बाधा टारति ।
 कठ बाहु कल मुख मधु पोषत नागरीदास पति अति रति आरति ॥

[२४६]

अद्भुत कौतुक मंडित पति उर ।

गरबोली गुन गति रति में भृत लाड़ गहिल कल केलि फैल प्रचुर ॥
 सोद विनोद भेद अभिअंतर तन मंडितर नई नई फुर ।
 तलित लड़ावन उत इत सुषनिधि आनंद मानंद मंगल जुग जुर ॥
 लटकि लटकि लचकतसु देसकटि विलुलित अलकावलि मुष पर रुर ।
 नागरीदास विलास जकर४ जिय औहठ हठी अमी अति अमुर५ ॥

[२४७]

बावनौ भावनौ छवि छतियाँ छेल ।

मन मुकुलित६ तन फूल पूरि फुरे अंग अंग प्रति लाड़ फेलु ॥
 मद मंथर गुन गति पति उर पर गरब गंभीर उदार गेलु ।
 रोम मरम पिय पोषत नागरीदास फूली सधी सुष सहद बेलु ॥

[२४८]

राग-केदारी

बाज रजनी घटी कल बेल न घट्यौ ।

जुम्बन चाच चौप पलु पलु प्रति अधरसुधा पिये नेह निबट्यौ ॥
 नाकर नागर करि इक तक निसि वर विलास मनौ केरि ठट्यौ ।
 मूषन वसन गत कुशल केलि रत दरस परस अब लालच बढ़चौ ॥
 हुन रावन मिलि अलभ लड़ावन ठौरठौर अति रति रोजि मन कढ़चौ ।
 निवडित नाहिन हेत नागरीदास अंतरावृत झाँझक७ सो कट्यौ ॥

1- विधिक मात्रा में, 2- शोभित हैं 3- चंचल, 4- पकड़ लिया, 5- कम न होने वाला, 6- खिला हुआ, 7- झाँझका, 8- रुर

बोणी ओनेही नागरीदास भी महाराज

८०]

[२४६]

कर वर निकरै विलास शम न परसे ।

निसीथरे सुरत समय भोजन की भाती,

दशा अलभ लड़ावें अदरस दरसे ॥

अद्भुत ठौर ठौर की लबधि फबो जाकाँ कुशल कामनी तरसे ।

उभे स्वाद सद संग महा सुष नागरीदास रोम रोम रस बरसे ॥

[२५०]

अबहो भए भानी ठौर ठौर परचे ।

लालन दुलरावन सौरभ लिये बार बार लालतु अब अरचे ॥

छिन में मगन होत गुन कहूँ लै विलसत चातुर चित चरचे ।

पल पल प्रथम भेट अंग अंग प्रति नागरीदास पति सर्व सुष रचे ॥

[२५१]

प्यारीके पाइनि लगे लाल जावक देन चरनकमल चित हित लगाइ ।

सोक सनेह सेवार स्याम धन लिष्ट चिन्न बहु विधि बनाइ ॥

नष मनि जोति निरषि विथकित भए सिथल भए रंग रंग्यो न जाइ ।

नागरीदासि हँसि कहत कुवरि यो रहो ज्ञ रही पग रहो है छिपाइ ॥

[२५२]

सुनि प्यारी प्रोतम बस तेरे ।

सहज मान धरि लेत हिय जियमें आदर आतुर प्रनय रेकरत हरितेरे ॥

इनके सर्वस प्रान तुम ही गति एक गांठ सौ केरे ।

उमग भई अंशनि भुज दोने नागरीदास कुंज तबही हँसि हेरे ॥

दोहा—बड़ भागी जाय्यो हियो, कुवरि उदार उदोत ।

दुलरावन लाड़न बढ़त, अद्भुत सुषओत प्रोत ॥

१- राशि, २- अद्वं रात्रि, ३- प्रेम प्रार्थना, ४- प्रकाश ।

[२५३]

कह्यो न परत आज हुलास अखियनि कौ ।

बलित अहन डोरे रति सुषरस बोरे। सूचत,

सुहाग भाग नेह नखियनि॒र कौ ॥

मोपै न दूरत चोरी मेरी गरबीली गोरी अनभतौः ३

आवे बासै कल क्षियनिै कौ ।

नागरीदास बलि तलप सुफली देखनि कों आज,

भाग जार्यौ सखियनि कौ ॥

[२५४]

पह रित यह बन सजनी री साजनु यह समाज कहाँ बनि आवै ।

किलकि नच्चत मोर गहिल घन की धोर कोकिल गन मंगल गाव ॥

पल पल प्रेम पपीहा बोलै निरवधि नेह विपिन वन छावै ।

कंवर कंवर रति केलि समागम नागरीदास हिये जिये भावे ॥

[२५६]

उरजन करि अचरा की फेट ।

नोबो किकिन कशि कृशि कटि तट विमल विलस बर केलि अभट ॥

चम्बन दान पान परिरंभन आलिंगन रस प्रेम समट ।

बंग अंग अरजि परजि नागरीदास ठोर ठोर सद स्वादनि सा भट ।

[३५६]

रहे वपु पांचडे विछाइ ।

पोरि सांकरी इतनौई मारग हीये परे जा पाइ ॥

बार साकरा इत्यादि
अली अंश पर विविकर दीने पीठ सों सीस टिकाइ ।

मला अश पर विवक्षा ॥
मजनी सकचि निहोरि निवारी पहले ही हा हा खाइ ॥

सजनो सकुच निहार निवार ।
मा एवं यारी पहिचाने बँठि गई अकुलाई ।

नागरीवास मुख में मुख दे रही छतियाँ रहीं लपटाइ ॥

१- इब्दों दिये बाबले, २- नखनों की खराँच,

५२]

बाणी श्रीनेहो नागरीदासजी महाराज

[२५७]

प्रेम पपीहा की बलि होंरी ।

रटत रहत मेरी सुभग सांवरौ इक टक तेरी सों री ॥
 मगन भयो तन मन गुन गावै परी है रूप उर आौरी ॥
 नागरि छिनक परी है कैसे तो बिन कल कहिं धोरी ॥
 इतनो श्वन सुनत आतुर वै लली अली संग दौरी ॥
 नागरीदास मिलो प्रीतम सों लता ललित प्रह मौरी ॥

[२५८]

सुनइ आई नागर रितु ।

चातिक रट पिक गान नचत केकी कुल कल कोलाहल,
 कौतिक किलक काम ललक वाढ़यौ चितु ॥
 ललना लाल लड़ाइ हरष हिय लगाइ नव नव,
 अनुराग वन भूमि छयौ हितु ॥
 नागरीदास नव नेह घन उनै३ आए विय अंक,
 लाए देखें फूल्यौ न माइ४ चितु ॥

[२५९]

विराजत लाड़ गहेली चाल ।

उर मंडित कल कंत कौतिकी दुलराई रति लाल ॥
 अगनित गुन गन मद मंथर गति बारे मतंग मराल ।
 कर कंकन बलय चाझ मिलि नदित किकनी जाल ॥
 ललना लालहि चली लड़ावन रस रसमसी५ रसाल ।
 नागरीदास विलास नेहनिधि पिय हिय हित वर वाल ॥

[२६०]

राग-मेरी

अलक लड़ी लाड़नि ढोलै ।

अति ही गर्व भरी गरबीलो विपिन विनोद निकुंज कलोलै ॥

१- ब्रह्मन, २- फूल गई, ३- उमडना, ४- समाना, ५- रस भीगी ।

इष्ट छास मनोहर माते आधे आधे बैननि बोले ।
चतुर सखी चित चौप बढ़ावत नागरीदास विवस्तारे थोले ॥

[२६१]

अपरस्पर मुदित समात उरनि में ।

जति आसक्त आलिंगन चुम्बन ललक बिकाने री मदन दुरनि में ॥
हास विलास हुलास मते मन अगनित नव नव भेद जुरनि में ।
नागरीदास राग रंग कौतुक नूपुर किकिनि वलय सुरनि में ॥

[२६२]

देवि री नव केलि अधिकाई ।

चारों जामर विहार बोत गये अजूँ अवधि न आई ॥
प्रेम मुदित चुम्बन दान पान मधु महा मत्त पूजते न अधाई ।
हैसि हैसि रंग अँग चंचल उपजत भूषन धुनि रुचिदाई ॥
अति सुकुंवार सुरत रस भीजे हास विलास सुधा बरवाई ।
नागरीदास उदार लाडिली सर्वसु सुष संपदा लुटाई ॥

[२६३]

राग-सूहो

सुनि सखी उरज अनियारे कोर ।

मम वक्षस्थल भेदि छेदि के निसरत धेने छोर ॥
कहि कथों प्रेम सुमारे४ समारे५ चपल नेन चित चोर ।
अधर सुधा पावत ही चेत्यौ औरहि नही निहोर ॥
हों न्यौछावर देगि सुनौ नूपुर किकिनि की घोर ।
देषौ मद गज चाल छबीली अलबेली बैस६ किशोर ॥
मृदु मुसिक्यान चुभि रही जिय में नाक जलज मनि ढोर७ ।
नागरीदास उठि मिली अचानक पोषे पिय तुषित८ चकोर ॥

१- संकोच दूर कर दिया, २- प्रहर, ३- बन्दन करते हुए, ४- सुन्दर काम,
५- सजाये, ६- अवस्था, ७- ढुरन, ८- ढोलन, ९- प्यासे, ⋆ पुनरावृत्ति पद
पैं २०४ की ।

वाणी श्री नेही नागरीदास जी महाराज

८४]

[२६४]

नेना केलि के गदे१ ।

अति गंभीर भार भरे सोभित मैमद मोद लदे२ ॥
रमें समाज साज सजि संपति तेई सदै३ न सदे४ ।
नागरीदास बलि अधर पान मधु उमगि ऊमडि प्रमुदे५ ॥

[२६५]

राग-घनाशं

सिटपिटात किरननि के लागे ।

उठि न सकत लोचन चकचौधत औंचि औंचि ओढ़त बसन दोऊ जाए ।
हिय सौं हियौ मुष सौं मुष मिलवत हैसि लपटात सुरत रस पागे६ ।
नागरीदास निरवि अंखियनि मुष मति कोउ बोलौ जाहु जिन आगे ।

(२६६)

राग-रामकल

अबही नेंकु सोए हैं अलसाय ।

काम केलि अनुराग रेंग भरे जागर रेंन बिहाय ॥
बार बार सुपने हैं सूचत सुरत रंग के भाय ।
यह सुख निरवि सखी जन प्रमुदित नागरीदास बलि जाय ॥

[२६७]

आजु सधी अद्भुत भाँति निहारि ।

प्रेम सुहृद की ग्रंथि परि गई गौर स्थाम भुज चारि ॥
अबहों प्रात पलक लागी हैं मुष पर अम कन वारि ।
नागरीदास रस पिवहु निकट छै अपने बचन७ निवारि ॥

[२६८]

मोपर कछु करत हैं सखि नेहु ।

हों तो जब उर धरौं मृदुल पद मानत धनि करि वेहु ॥
तू कहि मो अनुचर आरत कों अधर सुधा दै लेहु ।
नागरीदास अकुलाइ अंक भरि औंखियनि बरछ्यो मेह ॥

१- कहने वाले, २- परिपूर्ण, ३- सत्, धोर, ४- सदना, करित हुये, खाली हुए
५- मानन्दित हुये, ६- उद्देश्य, ७- बचन कर।

[२६६]

मेरी तू चतुर चितामनि ।

सुनि सुकुंवारि मम सुकृतै पुंजरे फल पल

पलकनि की ओट होहु जनि ॥

सर्वंसु प्रान अधार रसिकनी याही तें मानत आपुन घनि ।

नागरीदास यह मंत्र मनोरम रसना श्रीराधा नाम छचिर गनि ॥

[२७०]

ये कुच कमल हमारे प्रान ।

इनके बल मेरे प्यारे लालहि उपजत नव नव उकति सयान ॥

जिनके दरस परस ही सरस मन अतिमद मैमद मान गुमान ।

नागरीदास बारो उरजनि पर पटतरै कों नहिं प्रान ॥

[२७१]

पल पल पानिपै अधिक बढ़ी री ।

हास हुलास आलिगन चुम्बन नव नव चाइ चड़ी री ॥

बर बिहार के रस समाज सजि गुन गन केरि गढ़ी री ।

नागरीदास बलि कौतिक कोविद यह विधि कहाँ धीं पढ़ी री ॥

[२७२]

राग-नट

चंचल सखी नैन कजरारे ।

सुभग सुपान सलौने लोइनै अति ही विशद ढरारे ॥

मेरे हिय जिय मांझ चुमि रहे एकौ पल टरत न टारे ।

नागरीदास समात न धूंघट करनाइत अनियारे ॥

[२७३]

राग-भैरो

प्यारी जोर करजै तन मोरत ।

बंक विशाल छबीले लोचन भ्रुवै विलास चित चोरत ॥

१- पुण्य, शुभ कर्म, २- समूह, ३- समानता, ४- लावण्य, ५- लोचन, नेत्र,

६- अंगुलिया, ७- भींह ।

55]

ਵਾਣੀ ਅੰਨੇਹੀ ਨਾਗਰੀਦਾਸ ਜੀ ਮਹਾਰਾਜਾ

कनकै लता सी आगे ठाड़ी मन अरु हृषि अगोरतर।
उघरी वर कुच तटीै पटी तें छवि मरजादहिं फोरत॥
अति रस विवस पियहिं उर लावत केलि कलोल ज्ञकोरत।
नागरीदास ललितादि निरवि सुष लै बलाय तून तोरत॥

[२७४]

जुगल लाल लाड़ चाल उर वर सुकंवार बाल,

कनक माल लसि रसाल मुदित घोहनी।

कर नाइत नैन लोल कुण्डल चल अलक डोल,
मधुर हसन दसन लसनि मु
किकिनि कल वलय बाजु नृपुर कुनिध ललित साज,

शुभ समाज नाहु^५ कंठ बाहु रोहनी

नागरीदासि दरस वारि सुकृतो सिर भार भारिद

[२७५] राग-विहाररे

लाड़ गरब की फूल गात्व में ।

ईषद्दे स्थाम दसन मुख दमकत उदित उदोत सुभग उरजात १० में।

चंचल हार अलक हुग कुण्डल मत होत मन हृषि पात में

नागरीवास लाल उर आसन बैठी चिमल अनेक घात में ॥

→ [Page 1]

नव मन अटक आज कष्ट और ।

बसो सुहागिल की अवसर जलि दिमार उड़ी इ होइ।

अति दृचिते सूचिते सबों पहल महान् वैन रीन दीन ?

करी कहा पायो महावासि निर्वाचने तौरे १३।

१- स्वर्ण, २- रक्षा कर रही है, ३- कंचुकी, ४- छवनि, ५- नाथ, प्रियतम के कंठ में बाहु जारोपित करने वाली ६- दमन करके, ७- पिरोने वाली, ८- बंग ९- थोड़ा, १०- स्तन, ११- विभोर होकर, मत्त ढोकर ?१- निकट ।

अपनी ओर तें बदन उधारचौ पुजई मनोरथ दौरै ।
नागरीदास सहचरि पग पकरे रसिक कुंवर सिरमौर ॥

[२७७]

नैननि में नैन मिलि मन में मन सखि तन सों तन रूप छयौ ।
जिय सों जिय हिय हिय लसि गसि हँसि हँसि मुख मधुपान दयौ ॥
रीझि भीज छवि दरस परस्पर नेह सहज सब ढाँकि लयौ ।
बिमल विनोद मोद मति दोऊ नागरीदास गुन पलटै भयौ ॥

[२७८]

एक सर चूरा अरु घूंघरु जावक जुत लागत पग नीके ।
गौर गरब गंभीर गुनवते मण्डन मम उर मञ्जल जीके ॥
उदित उदोत मन नैन सखी री नष छवि पर ब्रलि नगरंग फीके ।
नागरीदास चरन जुगै जीवन प्यारी के,

रोम रोम रमें प्राननि पीके ॥

[२७९]

छुटी चुरी एक सर चूरा नूपुर मंडित जावक जुत पग ।
अब अब अमित रूप गुन सागर छवि आगर मेरे मन हिलग ॥
गौर चरन जुग चाल चंद्र नष अति रुचि रचि पचि चित चातुर धगै ॥
नागरीदास ज्यों फनिमनि जीवन पाइ प्रिया परकासक मम जग ॥

[२८०]

परत प्रेम निधि पांय रुचिर जहाँ ।

सुनि री सखी मेरौ ज्यों जानत जीम धरौं किधौं आविनि तहाँ ॥
चित चित तरहनै तरै व तिरीछों तन तकि कियैं फिरत छहाँ ॥
नागरीदास चरन जुग जीवन यह सुष मोक्ष अनत कहाँ ॥

१- दोढकर २- विपरीत, ३- दोनों, ४- प्रियतम, ५- गड़ गया, ६- सर्प,
७- चरण, ८-जिय, ९-प्राण, १०- तरनुप, ११- तिरछा ।

८८]

[२८१]

पल पल प्रबल केलि पसरी॑ ।

पल पल अधर पीयूष॒ पान करि पल पल परे हैं प्रेम के वसरी ॥

पल पल मुख मधु स्वाद नये नये पल पल चौंप चसक की गसरी॓ ।

नागरीदास तलप सुष पल पल नव रति कसर निकस री ॥

[२८२]

राग-केदारी

सद्गी सिंगार सेज दोऊ आने ।

हास हुलास केलि गरबीले प्रबल ललक नागर मन जाने ॥

अति आतुर अकुलाइ परसि पद सुभग सुठान अंग अंग साने ।

अवमुत छनक ठनक कल किकिनि बजन नूपुर भूषण सहदाने४ ॥

महा भृत सुकुंवार मते मन नई नई कोक कलनि अधिकाने ।

कोमल किरन निरवि नागरीदास निकट करनि अंचल पट ताने ॥

[२८३]

ललित भाँति करि छाम डगति है ।

नूपुर किकिनि बलय बाजु५ सों ठौर ठौर रचि चौंप घगति है ॥

मुख मधु पान प्रान विय पोषन हुरि हुरि हँसि हँसि कंठ लगति है ।

बिबाधर स्याम बसनावलि पति प्रकास मनि जोति जगति है ॥

अग्नित गुन गन दशा भेद विधि पल पल पानिप प्रेम पगति है ।

अमित सुधंग६ अंग अंग बारी नागरीदास मद मंथर७ गति है ॥

[२८४]

आज सुरत की उड़त परत है ।

कहनासिद्धु उदार लाड़िलो हँसि हँसि मुख मधु सुधा भरत हैं ॥

अङ्ग अङ्ग लावन्य ललित छवि गुन गन रति सों चरन धरत हैं ।

नूपुर किकिनि धुनि कोलाहल नागरीदास कौतूहल करत हैं ॥

१- फैली हुई है, २- अमृत, ३- जकड़, ४- निशान, ५- छवनि, ६- सुन्दर ढंग,
७- मन्द ।

[२५५]

सुखनिधि हिय भरि रंग हिलोरत ।

अमी पान परिरंभन चुम्बन बार बार मुख सों मुख जोरत ॥
 पति समाज कल काज कुशल वर रूप गुननि गन मेंड़ै१ छोरत ।
 दबी२ दशा पिय की सुधि नासी विवस विनोद अवनि३ टकटोरत ॥
 लगत कंठ कल किलकि कुलाहल लाड़ चोचली४ बतियनि भोरत५ ।
 चिबुक ढुलाइ अलक आकरषत अधर दशन गहि हैंसि झकझोरत ॥
 माँति भाँति के बानि बनावत ठौर ठौर मिलि ललक बटोरत५ ।
 बिसराई६ बलि बानिविमल वलि छिनछिन रचिश्चिं चोंप हिरोरत७ ॥
 परति प्रकास उरज उर भीतर दिये सबाद बूढ़ि टकटोरत ।
 नागरीदासि निज दासिनु बांछित 'प्रथम बोध तें गाइ बहोरत'८ ॥

[२५६]

पीय हीय अनुराग दुरी ।

जगमगात गरबोली गुन गति अव अव चल मङ्गल माधुरी ॥
 कुण्डल लोल नैन करनाइत बदन छूटि अलकावलि ररी ।
 परमानन्द प्रेम परिपूरन पति सुश्रीती पानिप सों जुरी ॥
 सेज समाजे बाज साज सों नूपुर किकिनि कंकन चुरी ।
 हिलग हेत की चेत चातुरी चाइ चौंगुने सिधु न मुरी ॥
 कोलाहली केलि कल चहलें९ ठौर ठौर रति उकति फुरी ।
 नागरीदास ढुलरावन लाहक१० लालच लाड़ ललक१० प्रचुरी११ ॥

१- मर्यादायें, २- विवस, ३- बंगों की, ४- नखरीली, ५- भुला रही हैं,
 ६- इकट्ठा करना, ७- हिलोर रही हैं, ८- विषय ज्ञान की ओर से इन्द्रियों
 को दिव्य युगल केलि की ओर मोड़ने का संकेत है, ९- दलदल में, १०- इच्छुक
 ११- प्रबल अभिलाषा ॥ Vasantha Tripathi Collection.

[२८७]

राग-ईम

माई चातुर रुचिर चलत अब चिलकते ।

भंगल बाज राज साज सजि कौतिक कुशल केलि कल किलकत ॥
मृदु माधुरी सुकुंवार कलेवर लाडु दसा में लोचन सिकलतरे ।
नेह नोहरोऽ नागरीदास बलि नव रंगनि गुन पर गुन मिलकते ॥

[२८८]

धूमत झूमत जात चली मद ।

पुलकित तन पिय अब आलिगन मुख मधु पान किये अधरा छदै ॥
अति रस उमड़न मात राज रति अभिअंतर की चबक साद सद ।
धूरन मान नेन की सेननि जुलित भृकुटि लट मुसकनि ईषद ॥
लटकि लटकि मटकि श्रोणी६तट किकिनि कल प्रति धुनि पटकत पर
छवि की फैल छैल बर राजत नागरीदास बिलसे उलधें७ है ॥

[२८९]

राग-कान्हो

इतहि कुंवरि उत कुंवर सिंगारे ।

सजे साज बानैत८ धीर दोऊ बोर खेत सज्या पग धारे ॥
सुरत चाइ रोमावलि फूली दुन्दुभि बर भूषण झनकारे ।
मुहु मिल होत चाँपि भृकुटिनि तें छुटत कटाक्ष बान अनियारे ॥
जोर परत दुहु ओर रंग भरि चरचत छंद बंद कर झारे ।
अभिर भए झुकि लरे अगावझ प्रेम मुवित तन मन न सेमारे ॥
विरचे प्रवल जुगल जोधा ज्यौं दुन्दु जुद जुरि टरत न टारे ।
नवरै उरोजनि ऊपर उन इन अधरनि रिस करि दसन प्रहारे ॥
काम कलह मचि रही सुरस षचि सनमुख लगत न गात उबारे ।
अभिअंतर रस उमगि निरषि सखि लतनि ओट सब कहत पेंवारे ॥

१- प्रकाशित हो रहे हैं, २- मिल रहे हैं, ३- अनोखी, ४-प्रकाशित हो रहे हैं
५- खत, ६- कटि प्रदेश, ७- सीमा तोड़ रहे हैं, ८- योद्धा, ९- नाथून ।

देखत कोमल कृश कटि लचकत चरन पकरि लालन पचिहारे ।
नागरीदास बलि लै उछञ्चरि धरि तन मन प्रान प्रिया पर वारे ॥

[२६०]

राग-विहागरी

श्री हरिवंश सुकर भोजन करे ।

मकरंदी मुख मधु मृदु मिथित या विन कौर न वदन धरे ॥
चुम्बन चसक चष भोगी नख शिख पोषे,

उभय स्वाद सद संगम सुव में परे ।

कर वर निकर विलास नागरीदास अलक लड़ते विमल विहरे ॥

[२६१]

दोहा—श्री हरिवंश के भजन की समझ न होई खेलु ।

तन मन गुन लगे वस्तु सों खरो कठिन है मेलु ॥

कठिन मिलन रस रीतिसों प्रीति समीति समाजु ।

चाल सु श्रीहरिवंश को जा पाए कल काजु ॥

श्रीबृन्दावन निधि मधुरिमा मृदु मकरंद सवाद ।

रस समूह हरिवंश की बानी में अहलाद ॥

बानी विन नहि पाइये बृन्दावन रस सार ।

मुख कद्यौ श्रीहरिवंश के सुख समूह निरधार ॥

बानी रस पहुँचे नहीं कोटि जतन दे दाव ।

श्रीब्यास सुवन पद पछलगा ताही को समवाव ॥

ऐसौ समरथ सेइये जाके सुजन सेमार ।

भजन सु निधि सोंचत इन्हें सोंचत बारम्बार ॥

मंगल निधि उदोत करि रसिक नृपति हरिवंश ।

सुजन जननि वर पोषिकं तिमिर किये सब छवंस ॥

गर्वोले गुन गर्व तन भेद भीतरे फैल ।

वर विलास मन बढ़ि परे लाल छबीलो छैल ॥

१- यकित हो गये, २- अंक, गोद ।

वाणी श्रीनेही नागरीदासजी महाराज

५२]

गर्वोले गुन गननिपुनि छैल छबीली साजु ।
 पानिप स्थामल उरउदित पति प्रतिपालन काजु ॥
 लाड़ लपेट चपेट चपि विथकि बूढ़ि गई भूलि ।
 प्रिया प्रीति पालन परम विलसन सम दोऊ फूलि ॥
 अजुषित अति आनंद है निसीथ सुरत समे मेलि ।
 भोजन सेज समाज के चाढ़त अविरल खेलि ॥
 बड़भागी जाग्यौ हियौ कुंवरि उदार उदोत ।
 दुलरावन लाड़न बढ़त अद्भुत सुख ओतप्रोत ॥

[२६२]

निसीथ सुरत समे भर भोजन में प्यार है ।

भाँति भाँति के लाड़ लड़ावन कर निकर

विलास विचित्र विहार है ॥

उमे स्वाद सद संगम सर्वं ठौर ठौर रति अद्भुत निहार है ।

हस्तामलक मेल नागरीदास रस रसिक-

सिरोमनि हाथकौ हथ्यार है ॥

[२६३]

निसीथ सुरत समे भर भोजन लाड़ कौ ।

कर बर निकर विलास लड़ावनो उमे स्वाद सद संगम चाड़ैकौ ॥

महा मिठास उमड़ि अध ऊरध अभिअंतर

रस सुख अमिठ आड़ कौ ।

प्रेम चहलरे बिच गज मन नागरीदास कठिन

कड़िवौ है रति की गाड़ कौ ॥

[२६४]

भोजन तलपै तन आलस अम भगै ।

चुम्बन चसक चष मुख मधु संजुतै सौरभ स्वादनि देह जगै ॥

१- प्रवल, २- दलदल, ३- शंया, ४- मिला हुआ ।

रोम रोम पोष्ट संतोष मरम भरे सेज समागम महा मिठास लगे ।
अदल बदल ग्रास नागरीदास हुलास

पुलक परिरंभन प्रमुदित प्रेम पगे ॥

[२६५]

जीम की उठेल खेल की खेवौ ।

चुंबन चसक चष बिजन सौरम मुख

बिच बिच अधर सुधा मृदु पैवौ ॥

रोम हरष तन मननि फूल रति

परिरंभन आदर भरि लैवौ ।

नागरीदास बलि परसि परस्पर

उमड़ि हरष हिय मढ़ि समैवौ ॥

[२६६]

उथल पुथल^२ रति पलटत ग्रास ।

भोजन अधर अमीसद संजुत चुंबन चसक चष लाहक हुलास ॥

चूसत रसनि रस रीझि भीजि प्रीति

बस उमड़त मुष मृदु सुभग सुवास ।

घूमि रहे घन ब्रान प्रान मन पिवत हैं प्यास निरवधि नव आस ॥

रोम रोम पोष्ट मरम संतोषत मुदित परस्पर घूंटत उसास ।

पावत शेष सखी सनमानी नागरीदास घिरी आस पास ॥

[२६७]

कर वर निकर बिचित्र विलास है ।

निसीष सुरत भर भोजन को समयो

उभय स्वाद सद संगम हुलास है ॥

तन मन पोष्ट रोम रोम सुख थगे

अब अब अबत समूह सुवास है ।

बाणी धीनेही नागरीदास की महाता

६४]

हस्तामलक मेल मंगल में सजनी

कुल घेरे आस पास है ॥

भीर गम्भीर लड़ावन लालन तामें छिन छिन प्रेम प्रकाश है ।
श्रीहरिवंश समाज सेज को नागरीदास विलास सिर उपास है ॥

[२६८]

राग-बद्धाव

निसीथ सुरत भोजन तुम्हीं बनि आवै ।

अपनी हित सुकुंवारी कारन को अंसी उपजें उक्ति उठावै ॥

जामें आलस वेद न परसे करवर निकर विलास लड़ावै ।

उभय स्वाद सदसम सुष सर्वं सु कौन भीतरे भेद दिवावै ॥

महा मिठास उमड़ि अधं करध अभिअंतर रमि मरम सिरावै ।

नागरीदास रसिक मणि व्यापक अद्भुत मति अदरसरेदरसावै ॥

[२६९]

यहै तुम्हारी लाड़ ठिक ठोर ।

निसीथ सुरत समें भोजन को औसर तलव समाज न समरथ और ॥

लालन दुलरावन दुर्लभ अब कर वर निकर केलि कल सौररै ।

पति परबीनै रीति नागरीदास श्रीहरिवंश रसिक सिर मौर ॥

[३००]

अधर सुधा बिन भोजन केसौ ।

यह वर बानि परी प्रीतम कों मुख मधु सौरभ बिन रहै चैसौ ॥

बदन बदन में मेलें हीं जैवत सुधर सवादिलै भोगी अंसी ।

नेह नोहरी नाहु नागरीदास सुहृद सनेही कोउ वियोन न तेसौ ॥

१- शीतल करते हैं, २- अनदेखी, ३- शौयं, शोर, ४- कुशल, ५- उदास चैसे,
६- स्वादी, ७- अनोखा, ८- दूसरा ।

सिद्धान्त

[३०१]

निसीथ सुरत समें भोजन को ठिक^१ पर्याप्ती ।

चुंबन चौप चिहुठ चतुरता उभय स्वाद सद संगम भेद भर्यो ॥

अभिअंतर रमि भटक भोतरी अध उरध सुख उमड़ि बगर्यो^२ ।

यह वर बानि^३ विलास भोग की नागरीदास हित^४ मूल पकर्यो ॥

[३०२]

निसीथ सुरत समें भोजन को परनाली^५ ।

उभय स्वाद सद संगम अद्भुत कर वर निकर केलि कल चाली ॥

रीति समीति प्रेम परपाटी श्रीहरिवंश प्रीति प्रतिपाली^६ ।

हस्तामलक मेल नागरीदास चाल लाल लिये रस दरसाली^७ ॥

[३०३]

निसीथ सुरत समें भोजन में फबायो ।

उभय स्वाद रस संगम अद्भुत कर वर निकर विलास लड़ायो ॥

पूरन किये मनोरथ मंगल ठौर ठौर दुल्लभ दुलरायो ।

हस्तामलक मेल नागरीदास भाँति भाँति कल खेल खिलायो ॥

[३०४]

निसीथ सुरत समें सभार भोजन को दाउ^८ दियो ।

हित निधान^९ हरिवंश चंद जू कर वर निकर विलास कियो ॥

उभै स्वाद सद संगम अद्भुत रोम मरम उठत भरि हियो ।

नागरीदास चुंबन चख चसकनि मुख मधु सुधा प्यार सों पियो ॥

[३०५]

निसीथ सुरत समें भोजन आस पास घिरो ।

करवर निकर विलास लड़ावन हिलग हिये दिये सब अभिरी^{१०} ॥

१- ठिकाना, २- फैल गया, ३- बान, बाणी, ४- हित का आधार, ५- प्रणाली,
६- निर्वाह किया, ७- दिखाने वाली, ८- अवसर, ९- खजाना, १०- सेवा में
भिड़ गई ।

६६]

वाणी भीनेहो नागरीदास जी महाराज

एकनि पानि गौर अबलीने एकनि के स्याम अंग बटी विरी१ ।
 रहसि बहसिपर खेल खिलावत उभय स्वाद सद संगम सिंधु तिरी२ ॥
 निरवधि आनंद अभिनय रति रस परस प्रकासनि३ दसा फिरी ।
 हस्तामलक मल मद लाहुक नागरीदासि बलि अजरै जिरी४ ॥

[३०६]

भोजन धरम को मूल सरम५ को ।

निसीथ सुरत समें सेज लड़ावन हित सजनी के कुशल करम को ॥
 चुंबन चसक चष मुख मधु मृदु पीये

फैलि परे उम्म स्वाद मदन रमकौ६ ।

अघ उरध रस उमड़ि नागरीदास

अद्भुत सुष गयौ दारिद्र जनम को ॥

[३०७]

रजनी कर निकर खेल होतु है ।

निसीथ सुरत समें भोजन लड़ावन माँहि मनोरथ मेलि योतु७ है ॥
 प्रेम प्रकास हुलास उदमदे अद्भुत पानिप अंग उदोत है ।
 गर्वित गुन घन८ द्वानप उमड़ि घटदे

नागरीदास तन मन मननि भोतु९ है ॥

[३०८]

निसीथ सुरत समें भोजन को भर फूल ।

कर वर निकर विलास लड़ावन अति हुलास मन हाहर१० हूल ॥
 उम्म स्वाद सद संगम रसावेस गरब गंभीर मदमातो मृदु झूल ।
 अतुलित आनंद मानंद मंगल नागरीदास और रंग बन सम तूल ॥

१- छोटी बीरी, २- सखियों की भाव मुद्रायें, ३- अमर हो रही हैं, ४- संकोच,
 मनुहार, ५- इतराहट, तरंग, ६- मोती, पिरोना, ७- अधिक, ८- नुगन्ध,
 ९- घटा, १०- वहूत, ११- नागरी का कालाहल ।

[३०६]

निसीथ सुरत समें भोजन कौ बड़ौ पोष ।

चुम्बन चसक चख मुख मधु मिथित उभय स्वाद सद संगम सुख संतोष ॥
कर वर निकर विलास लड़ावन हित सजनी के औसर बन्धौ मोष ।
नूपुर कंकन बलय किकिनी शबननि मंगल मंजुल मृदु घोष ॥
अति आवेस अजब अद्भुत रस अगरोँ अगरा परस्पर चोष ।
घूंघट अधर सुधा रति रंग लूटत नागरीदास आनन्द अजोषै ॥

[३१०]

निसीथ सुरत समें भोजन सबै खेलं फैरै ।

चुम्बन चसक चख मुख मधु मैमत उभय स्वाद सद संगम सुख दैरै ॥
अद्भुत मकरंदी मधु घूंघट उमड़ि उकति उपजे अजबैरै ।
अब अब दरस परस नागरीदास पावत लवधि पल पल बढ़त लवैरै ॥

[३११]

हिये हरखि हित हिलग जैबनी५ ।

निसीथ सुरत भोजन सुख पोषक व्यास सुबन जू को समयो सेवनी६।
जहाँ धरम निरधार निवट७ रस रसिक सिरोमनि मग मन नेबनी८।
नागरीदास विलास सार सच्यौ नेह नोहरे रंग मन भेबनी९ ॥

[३१२]

निसीथ भोजन सुरत मते कौ ।

कर वर निकर विलास लड़ावन हित सजनी जू के प्रेम पते कौ ॥
अधर अदन श्चि रोचक पाचक बदन सुधा मकरंद बसते१० कौ ।
पिवत हू त्रिपति न नेक नागरीदास लाड़िली लाल ललक अनेक११॥

१- आये बढ़कर, २- अतुलित, ३- अनौखी, ४- लगन, ५- भोजन करना,
६- सेवन करना, ७- विशुद्ध, एकमात्र, ८- झुरना, ९- भिगोना, १०- बसे हुए,
११- बहुत-सी ।

[३१३]

निसीथ सुरत समें आज भोजन कौ बन्यौ दान ।

चुम्बन चसक चख मुख मधु व्यंजन बीच बीच अधरामृत पान ॥
 अदभुत भेद मिठास अपरमित उभय स्वाद सद संगम जीवन प्रान ।
 अध उरध रस उमड़ भीतरी भेट रोम-रोम रस रमि पुष्टे १ रंग निधान
 प्रीति परस्पर केलि फूल मन रीझि लपटात सुभग सनमान ।
 कर वर निकर विलास नागरीदास अविरल २ सुख आनंद अमान ३ ।
 ४ वदन अमी मकरंदी अच्चवत, सब गुन पाचक कोऊ न अघान ।
 निरवधि खेल मेल मंगल भर, गरब गहेलरो लाड़ गुमान ॥

[३१४]

राग-केशव

निसीथ सुरत समें भोजन में लाड़ उछाहु ।

उभय स्वाद सद संगम अदभुत रस, रोम मरम सुख फूलत नाहु ॥
 चुम्बन चसक चख मुख मधु आसिथ जुगल कंठ गसि चतुर वाहु ।
 हस्तामलक मेल खेल परपाटी नागरीदास परचौ कौन निवाहु ॥

[३१५]

कर वर निकर विलास कुत्थह ।

निसीथ सुरत समें भोजन कौ औसर गर्वित गुन गन गरब गवह १ ॥
 मुख मधुपान दान चुम्बन चख उभय स्वाद सद संगम सुख समूह ।
 हस्तामलक मेल नागरीदास वरषत आनन्द रति रस त्थह २ ॥

[३१६]

निसीथ सुरत समें भोजन मीठे ।

चुम्बन चखक चख मुख मधु पीये उभय स्वाद संगम न उबीठे १ ।
 खात अघात न रुचि रुचि पाचक भेदनि भेदी परस्पर डीठे २ ।
 कर वर निकर केलि निसंक न ब्रीड़त नागरीदास लाहक दिल ढीठे ३ ।

१- पोषित हो रहे हैं, २- घना, ३- असीम, ४- पाठान्तर ४- गोरब, ५- दृढ़,
 संतोष, ६- अघाये, ७- देखना, ८- साहसी ।

[३२७]

निसीथ सुरत समें भोजन में मंडी मंड ।

चुम्बन चत्तक चख मुख मधु रस न्यारे न्यारे

उभय स्वाद संगम सुख प्रचंड ॥

इक तक इक संवदै इक मन मिल

इक मत चलत ललित भूज दंड ।

कर चुर निकर विलास नागरीदास

गन गन भेद विनोदनि ठंडे ॥

[325]

राग-सारंग

जगह्यौ वदन वर भोजन भावै ।

अधिरसधा जत रसना उलैड़ें यहै प्रोति करि प्रीतम पावै ॥

महाराजा भी मड़ मधु मद्द हँसि हँसि मुख में मुख दिये प्रिया जिवावे ।

नेह नोहरे भोगनि भोगी नागरीदास और कैसे हिय आवे ॥

[328]

राष्ट्र-विहारी

निसीय सरत समें भोजन मंगल लसें ।

जस्तु जसक जख मख मध मैमत उभय स्वाद सद संगम सुख में बसे ।

झाँड़ि झाँड़ि के लाड लडावन कर वर निकर केलि बिलसे ।

क्षमापनक सेव दिव मजनी ज नागरीदास खेल रस रसमसे३ ॥

[330]

निम्नों अमरत में भोजन में सभग बान ।

चंबन चसक चखः मख मध् प्रमुदित

जभय स्वाद सब संगम सुखनि खान ॥

डौर होउ दर्शन इलगावत कर बर निकर विलास सुठानि^४।

श्री रसिकसिंहोमनि मत्त नागरीदास अपनी हित सुकुवारी जानि ।

१- बातचीत, २- सीरलना, ३- रस में भीगे हुए, ४- सुन्दर।

१००]

वाणी औनेही नागरीदास जी महाराज

[३२१]

निसीथ सुरत भोग बल फल पूरो ।

चुंबन चसक चख मुख मधुपान करि

उभय स्वाद सद संगम सुख समूरो ॥

कर वर निकर विलास लाड़िली गुननि गंभीर गरब लाड़ सूरो ।

हस्तामलक मेल मंगल मई नागरीदास मद गरब गरुरो ॥

[३२२]

अधर दशन मिले भोग अंसोई कराइये ।

निसीथ सूरत समें तन मन पोषक रोम मरम संतोष पाइये ॥

इहि औसर यह समौ भोजनी उभय स्वाद सद संगम लड़ाइये ।

चुंबन चसक चख अदल बदल ग्रास नागरीदास हियनिहित छाइये ॥

[३२३]

निसीथ सुरत समें भोजन सुख सम्हार ।

चुंबन चसक चख मकरंदी मुख मधु पिये

उभय स्वाद सद संगम रस अपार ॥

भाँति भाँति के लाड़ लड़ावन कर वर निकर विलास खेल पसार ।

हस्तामलक मेल नागरीदास हित सजनी झू की लाड़ सुढार ॥

[३२४]

राग-नौरी

कुल मंडन^३ हरिवंश चंद ।

वैसाख वर ग्यास उजियारी सीतल सकल सुख प्रगटे व्यास नंद ॥

बजत बधाई सब सुखदाई प्रफुलित रसिक जननि आनंद ।

तारा झू जायौ जग चमकायौ नागरीदास भजन मकरंद ॥

१- मूल सहित, सम्पूर्ण, २- योदा, ३- शोभा ।

[३२५]

राग-गौरी

प्रात समें उठे दोऊ प्रजंक^१ पर सौरभ सरस स्वाद लपटात ।
 लोचन ललित अरुन निसि जागे सुरत अंत पुनि पुनि ललचात ॥
 अति रस भृत्य सुरत रस सागर बचन रचन कहि मृदु मुसिकात ।
 नागरीदास दम्पति सम्पति विलसि विलसि सुख ये न अधात ॥

[३२६]

राग-आसावरी

व्यास सुवन खेल ऊधम घौरा ।

अमित रूप गुन दशा अनभती पल पल प्रति सुख औरहि औरा ।
 भाँति भाँति के लाड़ लड़ावन विलसत लाल रसिक सिरमौरा ।
 रीति सभीति कहा कोऊ समझे नागरीदास बाँके मन की दौरा ॥

[३२७]

राग-चर्चंरी

मुकट बढ़ुन कुँबरि रासमण्डल लसी ।

कसूंभी तन कंचुकी पचरंग काछिनी

नील उपरेनी कल किकिनि कटि कसी ॥

अंग अंग रंग उदित मुदित मुख माधुरी

दसन दुति बंक अबलोक ईषद हँसी ।

लाल लोभी ललक अधर मधु पान की

बारि बृन तोरि लै अंक भरि उर गसी ॥

कोक गम्भीर गुन नेह नव नव निपुन

केलि कोविद दोऊ मननि अति रति बसी ।

नागरीदासिनि हास उकत गतिनि हुलास

सुविलास जोरी रास रस रसमसी ॥

[३२८]

निसीष भोजन सुरत वर मँडे ।

करवर निकर विलास महोत्सव अंग अंग प्रति आनंद उलडे ॥

१०२]

उभय स्वाव सद भेद भीतरी अध उरध अद्भुत सुख उमडे ।
महा मिठास रोम मरमनि रमि नागरीदासि मद मेल अषडे ॥

[३२६]

निपट निरसंक निरधोप२ बेपरबाहि ।
गरब गम्भीर धोर हठ औहठ चल्यौ उलेङ्डे भजन अवगाहि ॥
श्रवन हृषि पथ और न आई अपनोय रीति समोति निवाहि ।
सर्वोपरि वर मुवननि बंदित कौन उझकिर सकिहैगौ तराहि ॥
कृत्य६ वृत्य७ कल व्यास सुवन जू की

सुहूदो सुजन जिय हिय यह चाहि ।

नागरीदास या रस बिन सब भसुप्सुहङ उपासन हियौ सिराहि ॥

[३३०]

बिना कृपा राधारानी की क्योंब सरन हितजू की पावै ।
जाको नाम सुनत परबस हैं स्याम सहित स्यामा उर आवै ॥
दम्पति रूप रसासब पीवत धर्मी धर्म बिन और न भावै ।
नागरीदास श्रीव्यास सुवन बल नित्य बिहार औरनि दरसावै ॥



२- निरंकुश, ३- उमड़ कर, ४- लौन होकर, ५- सिर उठाकर देखना,
६- कायं, ७- स्वभाव, ८- निरर्थक ।

* जय श्रीराधे *

❀ श्रीनेही नागरीदासजी महाराज ❀

कृत

दोहावली

जब लगि सहजै न बदलई, पुरे न जहें तहें भाव ।
 पंथ पावनौ कठिन है, कीने कहा बनावै ॥१॥
 पावन प्रबल प्रताप बल, डारौ इन्द्री बारिए ।
 फिर ढंग लागै भजन के, औघट-घाटै सुधारि ॥२॥
 इन्द्री सबतें रोकिकै, भजन माँहि मुकराइै ।
 जैसे ही जैसे सधै, तेसे हो दै दाइ ॥३॥
 जब मन भजनहि लागि है, इन्द्री भोगन खोइ ।
 तो लगि पंथ दुहेलरौै, दशा पलट नहीं होइ ॥४॥
 सुगम सुगम सब कोऊ कहें, अगम भजन की घात ।
 जो लगि ठौर न परसि है कहि आवत है बात ॥५॥
 अपने अपने स्वाद तें, राखें इन्द्री खेचि ।
 रसद विसद गहि भजन केॉ, ठौर-ठौर हो खेचि ॥६॥
 विषे वासना जारि कै, जारि उड़ावे खेहै ।
 मारग रसिक नरेस के, तब ढंग लागै देह ॥७॥

१- वहिरङ्ग स्वभाव, २- उपाय, ३- समर्पित, ४- अटपटी दिशा, ५- मुक्त रूप
 मे लगाओ मोड़ो, ६- दूषिता पूर्ण, कठिन, ७- भजन के समस्त छिकानों पर
 विक कर, ८- राख ।

मारग रसिक नरेस के, क्रम क्रम मनहाँह सजाइ ।
 सावधान साधन करै, वेहऊ समझि खटाइ ॥८॥
 जामें मन की गति नहीं, तामें काढ़े गात ।
 श्रीव्यास सुबन पद पाइ बल, इहि विधि निकस्यो जात ॥९॥
 सावधान सबहो फिरै, जग कौतुक नहि भूल ।
 रीति छू रसिक नरेस की, मन दै तामें फूल ॥१०॥
 तन मन साधे हो फिरै, झूठे लोभ न देइ ।
 हिये हृष्टि संग भजन के, जहाँ तहाँ सुख लेइ ॥११॥
 सहज रसहिं जब मन परै, चौकस इन्द्री होंहि ।
 तब कारज ढंग भजन के, तजे आपनी गोंहि१ ॥१२॥
 इन्द्री चौकस देखि जो, छाढ़े अपनी घात ।
 परे मामिलेर जानिये, फर्वे भजन की बात ॥१३॥
 इन्द्री अपगून त्यागि कै, जो भजन माँहि ठहराइ ।
 जहे तहे सुख विलसत फिरै, तो कहुँ टोटो नाहि ॥१४॥
 भजन बल इन्द्री हाथ जो, फुरिवौ करिहै भाव ।
 सब गुन वस्तु विलोकि है, नब नब नित चित चाव ॥१५॥
 काचे मन की इन्द्रियैं, सिकलें३ न बांके घाट ।
 भजन सवादी होइ कै, लग्यौ रहै जो डाट ॥१६॥
 औरहि जब मन लागि है, हँ है औरहि चित ।
 जहे तहे भजनहि देखि है, फिरि है तित ही तित ॥१७॥
 फिरत रहे मन में मतौ, छाड़ि संतापड़ू सोक ।
 हृष्टि भजन में फिरि परी, तब औरहि हँ गयो लोक ॥१८॥
 हृष्टि पलटनो कठिन है, जो कहुँ बदली जाइ ।
 श्रीगुरु प्रताप पद पाइ बल, भजनहाँह हाथ बिकाइ ॥१९॥

१- स्वार्य को, २- वास्तु प्रपञ्च, ३- एकत्रित ।

को वपुरा चलि जानि है, श्रीरसिक नृपति की बाट ।
 कठिन कठिन है निकसिबौं, बाँके बाँके घाट ॥२०॥
 परे मामिले जानिये, चौकस देखि बनाइ ।
 अनत बटाऊ ना चपै, अपनीऊ पीर पिराइ ॥२१॥
 अपनौ कवहुँ न विगरि है, इहि विधि निधरक ढोल ।
 कोमल करुनावंत अति, निरबाहैं सब बोल ॥२२॥
 मूरत नैनन में रमै, हिय मथि गुन रहै पूरि ।
 दशा न कोऊ समझि है, प्रेम पहुचनौ द्वारि ॥२३॥
 कठिन पहुंचनौ प्रेम कौं, पंथ न निकस्यौ धाइ ।
 तन मन दसा समेट सजि, गाढ़ेर धरने पाइ ॥२४॥
 गाढ़े गाढ़े पाइ धरि, देह दशा करि हाथ ।
 बाँके मारग पहुंचनौ, लागि भजन के साथ ॥२५॥
 मन जु विचार द्रव्यौ३ रहै, चित्त रमीले रूप ।
 तन लागे ढंग भजन के, यह कल गैलै४ अनूप ॥२६॥
 जहें तहें और न सूझई, वस्तुहि लागे दौर ।
 श्रीरसिक नृपति मारग गहै, तब सब आवे सौरै५ ॥२७॥
 वस्तु विचारत ही फिरे, भाँति भाँति के दाइ ।
 तन मन भजनहि सानि तब, गाढ़े धरने पाइ ॥२८॥
 भजन भजन सब कोऊ कहै, मारग लगनौ दूर ।
 इच्छी तन गुन भजन के, जब मिल बंगौ चूर ॥२९॥
 जाहि भजन धेरे फिरे, सो भजनीय विचारि ।
 तो लगि निधरकता कहाँ, परे नहीं जो ढारि ॥३०॥
 ताहि सकेलै६ भजन है, भजन रम्यौ जा प्रान ।
 मन मन ताकं हीं फिरे, यह दुहे कोदृ७ सथान ॥३१॥

१- दोडकर, २- स्थिरता पूर्वक, ३- पिघला हुआ, ४- रास्ता, ५- पराक्रम,
 ६- समेटता है, ७- ओर ।

सहज मिक्रता भजन सों, जब परिहै मन ढारु ।
 सावधान चित चित है, श्रीव्यास सुवन पद चारू ॥३२॥
 चारू चरन कौ विपुल बल, सावधान उर आन ।
 श्रीहरिवंश सहाय जो, जहें तहे बनि रहचौ बानरे ॥३३॥
 जहें तहे बान्धौ बनि रहचौ, जो रसिक नृपति पद हेत ।
 श्रीहरिवंश कृपाल प्रभु, चारू चरन चित चेत ॥३४॥
 चारू चरन चित चितवन, निघरक सब ही डोल ।
 अलक लड़ौरे गाहक मिल्यौ, हँ ही निवर्यौर मोल ॥३५॥
 विकानौर ताही ढंग चलै, जिहि ढंग धनो सुहाइ ।
 तब चूकेऊ बकसिरे है, जिय॑ की मार न खाइ ॥३६॥
 श्रीव्यास सुवन पद विमल तकि, विकाने बिन नहि काज ।
 प्रकृति लिये चलि जानि है, हाथ परे सब साज ॥३७॥
 मारग रसिक नरेस के, निपट विकट है चाल ।
 तन मन औंठि सिराय गरि, वृथा बजावत गाल ॥३८॥
 असिर धारा पथ निवहिनौ, चलि जो राखे चित्त ।
 डग मणाइ पतिरे खोइ है, जीवन जनम सु वित्त ॥३९॥
 धरे हिये मधि डोलि हों, सबकों माथौं नाइ ।
 जाचौं राचौं कहुं नहीं, परिपूरन बल पाइ ॥४०॥
 श्रीव्यास सुवन पद बल बिना, परिहै ओस की सोत ।
 करि विवेक चित आपनै, कहुं सिध खेल के होत ॥४१॥
 यह मन मारि जिवाइये, जियत न आवे काज ।
 गैल जु रसिक नरेस की, चलनौ है तिहि साज ॥४२॥
 संग सहायक भजन बिन, फोको सब बस बास ।
 सोई ठाहरै अन खावनौ, जहाँ न प्रेम प्रकास ॥४३॥

१- मुन्दर, २- बानक, ३- लाडला, दुलारा, ४- सम्पूर्ण मूल्य, ५- विका हुआ,
 ६- क्षमा, ७- मानसिक क्लेश, ८- तलबार, ९- स्वामी, प्रतिष्ठा १०- स्थान ।

ब्रेम प्रकाश प्रभाव चलि, तजि ऊजरै अंधेर ।
 श्रीव्यास सुबन वाणी बिना, जहाँ तहाँ पाखंड फेर ॥४४॥
 जिनके बल निधरक हुते, ते बैरो भये बाले ।
 तरकस के सर साँप हूँ, फिर फिर लागे खान ॥४५॥
 औखियाँ तकै लागी रहें, जकै लागी रहे प्रान ।
 धक लागी काया फिरे, लकै लागी रहे ठान ॥४६॥
 हिये हिलग की पीब की, भरिए सरीर न माइ ।
 मरमी बिनु को जानि है, कासौं कहाँ सुनाइ ॥४७॥
 हिये कपट की नहि छिपे, उघरहि आवे अन्त ।
 मुख करि कहु न जनावई, शुद्ध सुहागिल कन्त ॥४८॥
 दृष्टि भजन छाई फिरे, नई नई रुचि प्रान ।
 मुख गुन कहें लड़ावनों, उपर्युक्त रूप सयान ॥४९॥
 भजन बिचार रहे जहाँ, तहाँ न काज तमास ।
 तन मन अन्तर छाड़िकै, लीने बने धमास ॥५०॥
 महा छुधित इंद्रीनि ज्यों, भोजन दिये संतोष ।
 याते अति धर्मी मिले, तन मन जिय हिय पोब ॥५१॥
 सहज सुहृदता भजन की, कोई न समझन हार ।
 अलक लड़ी वाणी रम्यौ, ताहो के सिर भार ॥५२॥
 श्रीव्यास सुबन वाणी रम्यौ, ताहो में सब लौनट ।
 कुल गुन रूप घिनावनो, तिन तन चितवै कौन ॥५३॥
 कहाँ जाइ मन छाड़ि कै, चरन कमल सन बंध ।
 श्रीव्यास सुबन कहि जानि है, सोई प्रिय आतम बंध ॥५४॥
 श्रीव्यास सुबन पद बिमल सौं, परं हिलगि कौ काम ।
 सब गुन सकल बिलास सहि १० निज उर स्यामा स्याम ॥५५॥

१- उजाड़, उजाला, २- चक्र, ३- टकटकी, ४- धून, ५- उमंग, ६- लगन,

७- ठिकावे पर, ८- आठिहार, समृद्ध, ९- लगवण्य, १०- सहन करना ।

श्रीव्याससुवन पद विमल सचि, चित ज्यों चिहुटे॑ चौपर।
 भजन देलि ऊर प्रेम जमि, नव प्रसून फल कौप ॥५६॥
 श्रीव्यास सुवन बानी रमैं, तब परिपूरन साध ।
 जामैं प्रगट जू देखियत, नव गुन निपुन अगाध ॥५७॥
 बानी श्रीहरिवंश की, ऊर धरि पूरन काज ।
 जगत निवादिल३ स्वाद तैं, पलट परै सब साज ॥५८॥
 पद पंकज हिय आय हैं, रसिक सिरोमनि राज ।
 तब ताढ़ंग गुन काज के, परै भजन मन लाज ॥५९॥
 विमल भक्ति तन मन खच्यो॒, छाड़ि लोक उपहास ।
 तासौं नेह निरन्तरौ, जा ऊर भजन प्रकास ॥६०॥
 श्रीव्यास सुवन पद जुगल मृदु, ऊर रति रमैं हुलास ।
 तबही भजन निरन्तरौ, निश्चयै नागरीदास ॥६१॥
 नागरीदास अविचल सदा, वृन्दावन निधि माँहि ।
 सोई सब भाँतिन सोहियै, श्रीव्यास सुवन पद छाँहि ॥६२॥
 श्रीव्यास सुवन बानी रम्यो, सोई भजन भजनीय ।
 नेह निरन्तर राखि चित, छाए ही फिरि होय ॥६३॥
 श्रीव्यास सुवन पद छाँह सचि, तेई वृन्दावन बास ।
 हस्त परे मुदा॒ सकल, इहि बल नागरीदास ॥६४॥
 जहाँ भजन को भेद॑ है, तासौं कंसी बानि॑ ।
 हियैं विचार विचारि यों, छोड़ै केतिक हानि ॥६५॥
 ऐसौं छाड़े क्यों बने, जाके भजन हुलास ।
 अन्तर दीने हानि है, वरस परस ता पास ॥६६॥
 ताहि विसारैं कठिन ऊर, भजन हियै मुरझाइ ।
 ताते सुहृद॑ विचार चित, हित ले गहनै पाइ ॥६७॥

१- चिपटाना, २- चाव, ३- हानिकर, ४- जड़ गथा, ५- भेद, अभिप्राय,
 ६- मर्म, ७- आदत, बनावट, ८- मिज।

सुहृद सनेही से ईये, हिये भजन को ठौर ।
 वस्तुहि देखि लड़ावनो, काज न आवं और ॥६८॥
 सुहृदी भजनो पाइ कै, उर में हुलसे हेत ।
 ताही ढंग ढरि ढारि भन, भये न बने अचेत ॥६९॥
 सुहृदी को छाया द्रव्यो, राखें ही रहिये देह ।
 बरस परस झूठन लियें, सहज भजन बढ़ नेह ॥७०॥
 भजनो सुहृदी पाइ कै, तहाँ न और विचार ।
 अंतरे छाँड़े खेलनो, यहै भजन निज ढार ॥७१॥
 मन गुन दशा सकेलै सुख, अंबुदै अरुकै सनेह ।
 विमल भजन में६ विमल परि, एक ही हँ गये देह ॥७२॥
 सुहृद प्रेम के चाइ चलि, पाल भजन सुख देह ।
 श्रीव्याससुवन वानी विमल, जतन जतन गहि नेह ॥७३॥
 याते सूधों ना चलों, ऊट ऊट जाऊं ।
 संयाँ मेरो ओहठो, जग मग जगत डराऊं ॥७४॥
 मारग लागे जगत के, साधुहि आवं लाज ।
 भजन विचार हिये नहीं, तो गनिका कौ साज ॥७५॥
 बोऊ कठिन मन कौं भई, मुख के क्यों कही जाइ ।
 मरमी होइ सु जानि है, आवं रोइ न गाइ ॥७६॥
 जगमग लागे को सकुचि, हँसि है खसम घिनाइ ।
 याते मारग जगत के, सकों नहीं धर पाइ ॥७७॥
 श्रीव्याससुवन मुख उच्चरो, सोई तन सुख कौ धाम ।
 कौन काज यह जग भर्यो, मो ताही सों काम ॥७८॥
 रति नाते श्रीहरिवंश सों, मानि सबै मन मूँड ।
 श्रीवृन्दावन सुख उर रमै, गहल८ भजन गुन गूँड ॥७९॥

१- श्रीति, २- आड़, दूरी, ३- समेटन, ४- बाबल, ५- न रुकने वाला, ६- मस्त है जा, ७- उलटा, ८- गंभीर ।

सावधान यह चाल चलि, कछु न करे अकुलाइ ।
 श्रीब्याससुवन बानी चढ़ै, पग डग मगे पति जाइ ॥८०॥
 पग डगमगे जीवन वृथा, पति बिन जतै गति हानि ।
 श्रीब्याससुवन बाणी विमल, गहि गाढ़ी पहिचानि ॥८१॥
 श्रीब्याससुवन ठहराइ है, सोई पति गति गूढ़ ।
 बेपरबाही डोलि है, विमल भजन आरूढ़ ॥८२॥
 सब विधि बाँकी अगम गति, श्रीरसिक नृपति की गैल ।
 बानी गहि चलि जानि है, बेपरबाही छंल ॥८३॥
 श्रीब्याससुवन बानी रमै, तासौं रति चित जोरि ।
 मेरे खाली खलकै सब, काहे लागे सोरै ॥८४॥
 भजन विना खाली खलक, झूठे मारग लागि ।
 श्रीब्याससुवन पद विमल रुचि, जीवन जनम सुभाग ॥८५॥
 श्रीरसिक नृपति कल चाल चलि, बाँकी जियहि प्रबोधै ।
 सावधान चित चरचिकै कै, गहियै तन मन सोध ॥८६॥
 तन मन सोधि सजाइ कै, बाँकी चालहि लाग ।
 सोबत सिंह खेर कै, तब क्यों बचि है भाग ॥८७॥
 बानी रसिक नरेस की, सहसा हाथ न नाइ ।
 किर ज्योंकालौं लागि है, परि है गुदी उपाइ ॥८८॥
 श्रीरसिक नृपति गुन सोधि हिय, चारु चरन चित आन ।
 बानी हित तन मन अरपि, तब लहिये पहिचान ॥८९॥
 बानी श्रीहरिवंश की, जों लों न हिये रमाय ।
 बाँधे वधिक विहेंग ज्यों, हाटे हाट विकाय ॥९०॥
 श्रीरसिक नृपति बानी रमै, तब साँचौ ठिक ठौर ।
 गम्भीर गाढ़े धमं बिनु, नहों भरोसौ और ॥९१॥

१- यति, विधाम, २- संसार, ३- प्रशंसा, ४- सचेत कर, ५- लेप कर, लिप हो कर, ६- ढालो, ७- जोंक की तरह । ⑧०=गोरि=किनारा, करोड़ ।

कोमल करुना कुशल कल, सब गुन रम रमनीय ।
 बानी मंगल मोद निधि, सावधान गहि हीय ॥६२॥
 सुभग सलौनी सरस सुख, सुन्दर सुलस । सुकुंवारि ।
 सब सच समरथ सेइये, सुलस सुधा सर सार ॥६३॥
 जामें सबै सेभार है, सार सुखन की भीर ।
 काज सहज ही आइहै, बानी गुन गम्भीर ॥६४॥
 मृदु सधुरी मंगल महा, मोद मान मकरन्द ।
 कारज बानी उर रमै, गुननिधि आनन्द कन्द ॥६५॥
 मंगल रूप अनूप गुन, बानी सौं मन सानि ।
 तेई वस्तु^२ निरन्तरौ, तै सिये परि है बानि ॥६६॥
 जैसिय भजन की बानि मन, तैसी ताकी कानिै ।
 ऐसे मिलन निरन्तरौ, निहचै यह जिय जानि ॥६७॥
 स्वारथ में जग पातरौ, चर्पै न परिहै भार ।
 जहाँ सुहृदता भजन की, तहाँई प्रेम पसार ॥६८॥
 आनन्द सिधु अगाध गुन, बानी वर विस्तार ।
 कोलाहल कौतुक निपुन, नागर रुचिर उदार ॥६९॥
 तन मन भजनहि दुरि लगै, खर्गै चित्त रुचि राचि ।
 श्रीरसिक नृपति पदविमलजुग^३, पावन प्राननि पाचिद ॥१००॥
 श्रीरसिक नृपति पद विमल जुग, परपूरन आनंद ।
 सेवत निरमै डोलि है, निधरक निषट सुछंद ॥१०१॥
 श्रीव्याससुवन पद विमल बल, कीनी उघरि सजाइ ।
 भजन सुहृद की चाल कल, चल्यो निसान बजाइ ॥१०२॥
 सुहृद चाल चले ही बने, सोस भजन लै भार ।
 श्रीव्यास सुवन बानी गहै, कहा करै संसार ॥१०३॥

१- आकर्षक, सुषोभनीय, २- लक्ष्य, ३- लाज, मर्यादा, ४- संकोच करने से
 ५- बनुरक्त हो, ६- लगाओ। ^४ पाठान्तर—परेम निधि ।

श्रीब्याससुबन वानी अमल, अति गुन अमित अगाध ।
 मोद बिनोद लड़ावने, लोम ललक रति साध ॥१०४॥
 कहिबौ सुनिदौ कछु नहीं, देख्यौ यह ठहराइ ।
 तौ लगि चोभाई ऊपरी, जो नहि पीर पिराइ ॥१०५॥
 सदा सोच हिय में रहे, मन नहीं पकरे धीर ।
 कहा कहिझरि सुनाइयै, हियै हिलग की पीर ॥१०६॥
 श्रीरसिक नृपति वानी अमल, हियै चरण गहि सेवरे ।
 तन मन दसा सकेलि चलि, तब कछु पावै भेवै ॥१०७॥
 रोचक वस्तुहि देखिकै, राख्यौ मन बहरायै ।
 भजन कसक हियरा बसै, सो क्यों हँसै हहरायै ॥१०८॥
 प्रेम सोच मन में जहां, तहां हिलगै की पीर ।
 सोई लगनाहि जानि है, मरमी भजन गम्मीर ॥१०९॥
 मरमी भजन गम्मीर बिनु, को लहै मरम की चोट ।
 तन मन कोरौ हँ गयौ, लिये भजन की ओट ॥११०॥
 सदा सोच मन तैं परे, चर्पै प्रेम भर भार ।
 विमल भजन की ललक के, विरले समझन हार ॥१११॥
 विरले समझैं पेचै यह, प्रेम भजन की चाल ।
 वानी हित चित आइ है, रसिक सिरोमनि लाल ॥११२॥
 भजन प्रेम के पेच गुन, वानी मांझ विचारि ।
 कोलाहल कौतुक निषुन, सुख निधि नेह निहारि ॥११३॥
 अति अगाध आनंद अमल, प्रेम ललक रस मूल ।
 हास विलास हुलास में, वानी में मतिझु फूल ॥११४॥
 वानी जान्यौ जानि है, रसिक नृपति दै दीठ ।
 डरकि प्रेम भजनहि मिल्यौ, सहज ही सब तन पीठ ॥११५॥

१- चुभन, कसक, २- सेवन करौ, ३- भेद, ४- बहला कर, ५- खिल खिलाकर, ६- लगन, अटक, ७- दबना एवं भेद। **पाण्डान्तर—अति ।**

एकहि जिय सौं काज है, काहे लार्ग लाख ।
 श्रीब्याससुवन कहि जानि है, ताही में ललसाख ॥११६॥

सूरौ अपने धरम कौ, पूरौ परि है काज ।
 गुननि समूरौ देखियै, रूरौ रूरौ साज ॥११७॥

सूरौ पूरौ भजन कौ, कायर जग की चाल ।
 संयाँ सुहागिल सोभियै, उपहासै पटघाल ॥११८॥

संयाँ सलौनी सोहिलौ, मोहिल मनहि हिलाव ।
 निहपम नागर नेह निधि, रसिक मणि हियै लड़ाव ॥११९॥

कहा कहि उघरि जनाइये, मरम धरम हृद मेल ।
 श्रीब्यास सुवन रस रीति कौ, खरौ कठिन है खेल ॥१२०॥

बयों करि प्रगट दिखाइये, मरम धरम हृद बाघ ।
 श्रीब्यास सुवन बर कर परे, गुन गन अमित अगाध ॥१२१॥

प्रेम चौप की चाल चलि, पल नहिं ललक बिहात ।
 बरषा रितु हित चित छयौ, ठाले ढौस न रात ॥१२२॥

बरषा रितु बहु भाँति के, मेह नेह आभास ।
 सोई हियरा जानि है, जहाँ प्रेम की बास ॥१२३॥

हाँ श्रीरसिक नरेस कौ, ताकौं कहै न टोट ।
 जहाँ तहाँ पूरो परि रही, श्रीब्याससुवन पद ओट ॥१२४॥

टोटौ सब पूरो परे, श्रीब्याससुवन पद प्रेम ।
 ओछेऊ आछे देखिये, रौँ तत्र कुशल अह खेम ॥१२५॥

सबहो बिधि निधरक सदा, श्रीब्याससुवन पद छाँह ।
 कौतुक मंगल माधुरी, सुख रस जस या माँह ॥१२६॥

एक चाल ऐसी कठिन, जा आगे सब दम्प ।
 सोई भजन सौभार गहि, जहाँ अनभै सुख आरंभ ॥१२७॥

१- ललक, चाव, २- श्रेष्ठ, उत्तम, ३- पदा छोड़कर, ४- चाल, डंग, ५- निर्भय,
 अनुभव ।

वाणी श्रीनेही नागरीवास जी महापाठ

श्रीब्याससुवन वानी रम्यी, विमल भजन करि देह ।
 सबही भाँतिन सोभिये, लाड़ लड़ावन नेह ॥१२५॥
 मुरकि न जानै बाबरौ, जैसे रण कौ धीर ।
 श्रीब्याससुवन पद लाज रज, मरमी भजन गंभीर ॥१२६॥
 श्रीब्याससुवन पद माधुरी, लियैं सुजन सन्तोष ।
 तन मन प्राणन पुष्टता, श्रीरसिक नृपति रस पोष ॥१३०॥
 श्रीब्याससुवन वानी अगह, को पहुँचै इहि चाल ।
 प्रेम भजन रति मन विष्यौ, कहाँ हैं पावै ढाल ॥१३१॥
 आठी उत्तम अनभतीै, उज्ज्वल अति ही अनूप ।
 परम प्रबोन नबोन गुन, वानी मंगल रूप ॥१३२॥
 मंगलकारी सुख मई, नव गुन निपुन सुनेह ।
 वानी हिये हिताइ२ तब, रमें प्रान मन देह ॥१३३॥
 प्रान देह मन जब रमें, श्रीरसिक सिरोमनि रीति ।
 सर्वोपरि वर देखियै, चलौ भजन जग जीति ॥१३४॥
 जगत जीति जिन भजन बल, श्रीब्याससुवन पद नेह ।
 बाकी३ भटकत देखियत, घर घर के भये देह ॥१३५॥
 ठाल४ न पावे मन कहै, प्रेम सुढौरी५ लागि ।
 विमल भजन कल चाल में, परे जगत तैं जागि ॥१३६॥
 जों लौं न जग तैं जागि कें, परे भजन की गंल ।
 तो लगि कैसे निखरि है, विष्वं वासना मैल ॥१३७॥
 विष्वं वासना भजन जर, प्रेम नीर उर धोइ ।
 श्रीब्याससुवन पद विमल रमि, सब विष्वि उज्ज्वल होइ ॥१३८॥
 जग उपहासे भय मिटी, कहा करे कोऊ कोप ।
 जहाँ भजन कौ बल हियें, सोई निसंक निधोंपै ॥१३९॥

१- अनुभव, पूर्ण, २- हित करे, ३- और सब, ४- अवकाश, फुर्सत, ५- सुडौल,
 सुहृद, ६- निरकृश ।

जहाँ भजन को बल हिये, तहाँ न बाधा भीर ।
 असहन निन्दक खल जिते, नैर हँ चलि है नीर ॥१४०॥

निबटर भये जे भजन के, तिन्हें दुख्यहै कौन ।
 स्वामी द्रोही सेवकाहिं, फूटि निकरि है लौन ॥१४१॥

श्रीरसिक नृपति हरिवंश के, पाँय हिताने प्रान ।
 भेद भजन मन कढ़ि परे, उत्तम उत्तम ठान ॥१४२॥

पाँय हिताने प्रान जब, तब सब उत्तम चाल ।
 अनुलित सुख वर भजन के, आगे ठाड़े हालरे ॥१४३॥

चरनकमल श्रीव्यास सुत, जिय में हेत हितात ।
 ततष्ठन बस्तुहि मन मिलै, भये भजन मय गात ॥१४४॥

ताकों कहुँ बाधा नहीं, साध बड़ी रस रीति ।
 वेपरवाही भजन बल, दुस्तर दुर्घट जीति ॥१४५॥

श्रीरसिक नृपति पद जब हिये, तब न कछू परवाह ।
 साध अगाधनि सुख भरी, बानी रुचि अवगाह ॥१४६॥

वेपरवाही सेइ पद, रसिक सिरोमनि राइ ।
 कोलाहल कौतुक कुशल, कोमल सुख समुदाइ ॥१४७॥

नागों नाँचों जगत की, छाँड़ि लाज पति कान ।
 यहै भलैं भयें भजन की, सही जाति नहीं हान ॥१४८॥

जगत भलाई भजन नहि, भजन भलैं जग जाहु ।
 आतम मित्र विछोह के, को बसि है दुखदाहु^५ ॥१४९॥

जहाँ तहाँ काम है भजन साँ, जग डहकै बैलाय^६ ।
 छल बल अपने अंग करि, सबनि लगाई बाय^७ ॥१५०॥

मेले मारग जिन चलै, उज्ज्वल आछैं साग ।
भजन रतन जतननि मिल्यो, घर घर जिन करे साग ॥१५१॥

१- नम्र होकर, २- निवृत्त होकर, ३- तुरन्त, ४- जलन, ५- डहकना, विलाप-
 करना, ६- विपस्ति । CC-0. Vasishtha Tripathi Collection.

सदा सोच मन में रहे, परो जाय जिय झाँखिै ।
 वह चित्तबन कछु और है, प्रेम जु बींधी आँखि ॥१५२॥
 प्रेम गहे मन नें जे, तिनकी चित्तबन आन ।
 जाके हियरा हिलगि है, सोई जानै जान ॥१५३॥
 प्रेम हिलग को दीठि हग, लागि रहे जिहि ठौर ।
 कछू कठिन सौ पेच है, बाके मन की दौर ॥१५४॥
 तन मन दसा बदल गई, हिये हिलग के भार ।
 तिन अँखियत की कठिन है, ढरी प्रेम ढौंग ढार ॥१५५॥
 श्रीब्याससुवन पद प्रेमनिधि, नेकहुँ चित्त समाज ।
 सुहृद भजन जब हिय बसै, सहज सुगम सब काज ॥१५६॥
 श्रीब्याससुवन पद सद प्रबल, ओट लिये आनन्द ।
 भजन सार सुहृदी हियौ, गुन गन सब सुखकन्द ॥१५७॥
 श्रीब्याससुवन पद उर जहाँ, तहाँ भजन परिपूर ।
 संतत सोतल सुहृद सुख, सुकृती सज्जन सूर ॥१५८॥
 मन कौ साहस कहाँ बैर्ध, भजन की चाल अगाध ।
 श्रीब्याससुवन पद बल बिना, कतहिरकरी कोऊ साध ॥१५९॥
 साध अगाधनि क्यों लहै, जो लौं न हिये उपास ।
 श्रीब्याससुवन पद चिमलतरु, करि मन रति निज बास ॥१६०॥
 सार सच्यौरे हरिवंश ज्ञ, रचि अद्भुत रस रीति ।
 तलप लाड लालन सुधर, ललना लाल समीत ॥१६१॥
 श्रीब्याससुवन बानी बिना, जहाँ तहाँ प्रकृति विरुद्ध ।
 अनत न दिखियत भजन के, सुहृदी आतम सुद्ध ॥१६२॥
 तन मन उज्ज्वल सुचि चदा, सुहृद भजन सत भाव ।
 कोमल हियरा वस्तु भरि, श्रीब्याससुवन पद चाव ॥१६३॥

श्रीब्याससुवन पद चाव जहाँ, रोचक रुचिर रमाइ ।
 हिये भजन छायी फिरै, मंगल में दिन जाइ ॥१६४॥
 जहाँ निखालस सुहृदता, कठिन भजन की ठौर ।
 श्रीरसिक सिरोमनि चाल कल, गाढ़े मन की दौर ॥१६५॥
 गाढ़े मन की दौर है, भेद न पावं कोइ ।
 श्रीरसिक नृपति पाछौ गहें, तन मन सहजहि खोइ ॥१६६॥
 श्रीरसिक सिरोमनि भजन तें, गाढ़ी गर्वित घातै ।
 बस्तुहूँ तं अति जगमगै, अलकलड़ै की बात ॥१६७॥
 अलकलड़ैते लाल की, बात न पहुँचो जाइ ।
 कढ़ी३ रहै कल भजन में, सब ता माँहि समाइ ॥१६८॥
 बातहि माँहि समाइ सब, वह न आधर्व आन ।
 भजन बस्तु तामें मिलै, दुहु४ को प्रेम सुप्रान ॥१६९॥
 परम प्रेम पर प्रान प्रिय, श्रीब्याससुवन के बैन ।
 सुख सर्वस शुभ भजन की, कोऊ पहुँच सकै न ॥१७०॥
 बस्तु उछाह छई फिरै, चतुर सिरोमनि बाक ।
 विविधि विलासनि मोद मद, बढ़त बचन बर ताक ॥१७१॥
 भजन भेद बर चातुरी, गुन गन गर्वित लीन ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, बानी प्रेम प्रबोन ॥१७२॥
 बानी प्रेम प्रबोन प्रिय, प्रबल प्रताप प्रकास ।
 सब सुख जामें सोभिये, मंगल मोद हुलास ॥१७३॥
 श्रीब्याससुवन हिय मुख कढ़ै, पढ़ि रड़ि कढ़िजंजार ।
 श्रीबृन्दावन मति रति बिना, बृथा लियो सिर भार ॥१७४॥
 बृथा भार सिर कत५ धर्यो, कर्यो न भजन विचार ।
 श्रीब्याससुवन पद सरन बिनु, सब श्रम और जंजार ॥१७५॥

१- बनसर, २- श्रीहित्तजहू Mausumi Tripathi Collection, ३- युगल का, ४- क्यों ।

पाद पद्म हरिवंश प्रभु, मन मधुक्रत^१ धर राँचि ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल कौ, सदका^२ संतत जाँचि ॥१७६॥
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, सदका ही सब होइ ।
 पद पदवी वृन्दाविपिन, मंगल मनहि समोइ^३ ॥१७७॥
 श्रीरसिक नृपति माती दसा, उमगि कहे मृदु चैन ।
 कोलाहल कौतुक कुशल, भाँति भाँति सुख चैन ॥१७८॥
 भाँति भाँति सुख चैन भरि, भीर गम्भीर गङ्गर ।
 श्रीब्याससुबन कल खेल मृदु, घूमत मन मद घूर ॥१७९॥
 विमल विज्ञाने प्रेम पर, जग जंजालहि दाबि ।
 श्रीरसिक सिरोमनि बल पूरी परे, वानी मधि मन गाभि^४ ॥१८०॥
 वचन रचन महिमा महा, को कहि सके अपार ।
 श्रीबृन्दावन निधि सोभिये, भरि वानी भर भाव ॥१८१॥
 श्रीब्याससुबन पद बल जहाँ, हिये भजन सत भाव ।
 सरस रोति में मन परे, बढ़यो रहे चित चाव ॥१८२॥
 भजन सुहृदता चाइ चित, उर पद रसिक नरेस ।
 तेई वस्तुहि पट्टैचि हैं, और न लेस प्रवेस ॥१८३॥
 लेस प्रवेस न पावई, वस्तु कठिन अति ढौर ।
 श्रीब्याससुबन पदवी^५ दिना, छिसल परे मन दौर ॥१८४॥
 आवर धावर धक लगे, आइय जात है आपु ।
 श्रीगुर चरननि गहि भजन, कब देहैगी दाय ॥१८५॥
 रोति रमे श्रीरसिक मनि, प्रीति हिये विस्तार ।
 वानी विमल वर मन बसे, सुख के सुख को सार ॥१८६॥
 वर सुख सार सबाद सद, सौरफ सुभग समूर ।
 गुननि गहल गम्भीर गति, वानी गर्व गङ्गर ॥१८७॥

१- अनन्य प्रेम, २- कृष्ण, ३- मिलाओ, ४- टकटकी लगाकर देखना,
 ५- गडाओ, लगाओ, CC-0 Vasishtha Tripathi Collection.

भजन सार सम्पति सचो, श्रीव्याससुवन सुख ठान ।

बूरि ठिकाने पहुँचनौ, चलि ढंग तेई सयान ॥१८८॥
तेई ढंग सयान चलि, श्रीरसिक नृपति रस खेल ।

जहाँ द्रवत मकरंद मधु, दुर्घट दुर्लभ मेल ॥१८९॥
उचकयो उचकयो मन फिरं, नेंकु न कहुँ ठहराइ ।

रूप अनूपम इन्द्रियनि, छबि दबि भरि नहिं जाइ ॥१९०॥
रूप अनूप के कूप परि, मन नहिं बूद अघाइ ।

जौंलगि हियौ न भरि उठै, याही तै अकुलाइ ॥१९१॥
धरमी अपनौ ना मिलै, तौ लगि है संताप ।

भजन हिये हुलसै नहीं, कहाँ लौं भरिये पाप ॥१९२॥
जौं लौं न मिलैं प्रियभजन कौ, तौ लगि दुख दारिद्र ।

धरमी मरमी बिनु सबै, ताकी झूठौ छिद्र ॥१९३॥
जहाँ न अपने धरम कौ, तहाँइ जग अन्धेर ।

कासौं मिलि कै विरमियै, जित तित पाखन्ड फेर ॥१९४॥
धरमी मरमी भजन कौ, तहाँ सकल सुख साज ।

विमल बस्तु में मन परै, सुकृती सुहृद समाज ॥१९५॥
सुहृद सजाती बापुरौ, मरम धरम को मूर ।

कौन काज जग जाजरौ?, कुचिछितै कायर कूर ॥१९६॥
कुचिछित कायर कूर में, जहाँ तहाँ भजन सहाउ ।

मनसा बाचा सईये, श्रीव्याससुवन जू के पाँत ॥१९७॥
धरम न भूलै भरमै करि, सरम करम के लागि ।

श्रीव्याससुवन पद प्रेम गहि, पगहि बस्तु में जागि ॥१९८॥
चकरी ज्यों मन जिन फिरं, झूठे जग जंजार ।

विमल भजन में दाबिये, पावै न जान निवार ॥१९९॥

वाणी वीनेही नागरीदासजी महाराज

१२०]

भेद भजन मन डरि परे, चाढ़ि बढ़ि चातुर चाइ॑ ।
जहाँ तहाँ बस्तु विचारनै, ज्यों त्यों दाइ उपाइ ॥२००॥
सोई दाइ उपाइ बल, चित बित हित थित ठौर ।
और सकल जग बूढ़ि है, एक भजन में सौर॒ ॥२०१॥
मन की वृत्ति लगी रहे, रूप चिहुठृ॑ चित चाव ।
भजन स्वाव इंद्री परें, ये सब दाव उपाव ॥२०२॥
सहसा सौर४ सु भजन सौं, एकई परम प्रतीति ।
हरकि लगे मन ऊजरे, श्रीव्याससुवन पद प्रोति ॥२०३॥
जाते मन पूरी परे, सोई दैनै दाइ ।
आन आसरे छांड़ि कन, ओस न प्यास बुझाइ ॥२०४॥
ओस कन्दूका क्यों मिट्टि, प्रीसम रितु अति प्यास ।
श्रीरसिक नरेस संभार मन, पूरन करिहे आस ॥२०५॥
मोमें नाहीं बल कच्छु, चरन कमल की ओट ।
श्रीहरिवंश दयानिधे, बाढ़े गनौ न टोट५ ॥२०६॥
जहाँ पाखंड तहाँ बिगरि है, जहाँ सुहदता काज ।
जब ही है है भजन कौ, श्रीगुरु प्रेम समाज ॥२०७॥
भ्रम जिन भूलौ लोग हो, झूठे जग कौ साज ।
श्रीगुरु चरननि सेइयौ, नहीं भजन बिनु काज ॥२०८॥
गुरु प्रसाद तैं प्रभु भजे, जगत गननिं तैं छूटि ।
तन धरि यह ही काज है, भजन रतन बड़ी लूटि ॥२०९॥
तहाँ न चित मिलाइये, जहाँ मन में अहमेव० ।
देखि विचारहि छांड़िये, जबहि जानिये जेवन ॥२१०॥
प्रेम गह्यौ ज्यों जातकौ, ताहि न और सुहाइ ।
तिनहीं तिन खोजत फिरे, जग कहै लागी बाइ॒ ॥२११॥

१- चाव, २- शोयं, ३- भराकृष्ण, ४- सालसा, ५- सालसा, ६- अभाव, ७- लोगों-
से, ८- अहंकार, ९- शोभा, १०- वायु, हवा ।

भजन सुहृद हिय में नहीं, तौ लगि झूठो मेल ।
 नट की सी बाजी रची, चेटक कौ सौ खेल ॥२१२॥
 सब भाँतिन साँ सोभिये, नई भजन मन फूल ।
 जाके चित हित आय है, श्रीव्याससुबन पद मूल ॥२१३॥
 श्रीव्याससुबन पद मूल बिनु, फूलन भजन परकास ।
 वस्तु संपदा सार सुख, चरनकमल विस्वास ॥२१४॥
 बिनु अपने जिय भाँवते, सब आछे तन पीठ ।
 पर पति देखे पतिव्रता, चितवत लाज दीठ ॥२१५॥
 रबने^१ अति अनखावने^२, तहाँ न सुहृद मिलाप ।
 अपने प्यारे प्रान के, बिन भरियतु है पाप ॥२१६॥
 प्यारौ अपने प्रान कौ, तहाँ सुख सबही भाँति ।
 जगत उजारौ देखियतु, जगमगात कल काँति ॥२१७॥
 तन मन प्राननि अर्प कै, एक नेह की आस ।
 बरखा रितु हिय मन बनै, व्यापै भूख न प्यास ॥२१८॥
 ललक लपेट खिच्छौ फिरै, को पावै यह भेव ।
 निसि दिन तकि लागी रहै, प्रान हिलग है जेव ॥२१९॥
 प्रेम हिलग जियरा गह्यौ, चित में चौपै चपेट ।
 मन में रूप रम्यौ रहै, हियरा ललक खेड़ ॥२२०॥
 रूप इकोरनि मन अपै, बूढ़ि बूढ़ि उछकाइ ।
 अंग अंग पानिप उररमी, ज्यौं जकि थकि अकुलाइ ॥२२१॥
 प्रेम बिहूखे ना बनै, पोखै सकल सदार ।
 ज्यौं त्यौं ही करि राखियै, मन कल कोमल भार ॥२२२॥
 प्रेम दब्यौ स्वादिल सदा, सरस सलौनी वानि ।
 प्यारो नेह विसार चित, बहुते जामै बिहान ॥२२३॥

बाणी श्रीनेहो नागरीदास जी महाराज

काज साज काज न करे, जहाँ तहाँ एक प्रेम ।
 उलटे पुलटे सोभिये, फोट्यौ? नागर नेम ॥२२४॥
 चोखो चाखो चक चकौ, सरस वस्तु मन ठाहरे ।
 श्रीव्याससुवन पद उर धरे, सोहै भजन सिंगार ॥२२५॥
 अलक लड़ते लाल की, को पावंगी बात ।
 भजन वस्तु गुन चातुरी, तन ही माँझ समात ॥२२६॥
 जग गुन पकर्यौ जिन फिरे, छूटि छैल मन खेल ।
 स्वादिल विधि बंधेज है, सुहृद भजन हित मेल ॥२२७॥
 तनक बात में सब मिलै, यह सर्वोपरि तेतरे ।
 बोल जु रसिक नरेस के, भजन वस्तु को हेत ॥२२८॥
 मेल सुहेली भजन की, अमित रमित गति गोप ॥
 श्रीव्याससुवन यद सेर्वये, तन मन प्रान अरोप ॥२२९॥
 श्रीव्याससुवन जुगअंत्रिय अति, आनंद अमल अधाइ ।
 सुधा सुखद सुचि चरन रुचि, तन मन उर अवगाहि ॥२३०॥
 उर अवगाहै चरन जुग, तौ सब हाथ पराइ ।
 श्रीव्याससुवन पद बल जहाँ, कलृकारज न अघाइ ॥२३१॥
 श्रीरसिक सिरोमनि राज गुन, गहि हियहेत रमाहि ।
 भजन विमल विमल्यौ फिरे, चरन कमल जुग छाँहि ॥२३२॥
 टूटि टूटि मन तब परे, बूढ़ि बूढ़ि अनुराग ।
 श्रीव्याससुवन पद आइहैं, हिये हेत बड़भाग ॥२३३॥
 भजनहि नेह छयो रहै, वस्तु प्रान प्रिय चाव ।
 यह सभार कढ़ि भजन की, विरले पाँवे भाव ॥२३४॥
 भजनहि माँड़ौ अति कढ़ी, दसा चतुर मन एक ।
 सब विधि भजनहि सनि रह्यो, तन मन भाँति अनेक ॥२३५॥

१- पंदा हुआ, २- ठहराओ, ३- उतना ही, ४- इन्द्रियजित, गोपनीय, ५- चरण,
 ६- सुन्दर, ७- स्फुरणाये, भाजनाये ।

आगम बादल देखि कै, हिय थरथरी धरकक ।
जैसे बिटिया लाड़िली, साँबन पीर खरकक ॥२३६॥

हियरा सूखत तन तपै, मन पावै अति छोभ ।
ठौर पीर कौ ना लहै, जहाँ बह्यौ मन लोभ ॥२३७॥

भजन सुजन संतोष हिय, सरल सुहृद सत भाव ।
जहाँ तहाँ काज सुप्रेम सौ, तहाँ तहाँ चित चाव ॥२३८॥

जहाँ कनूका प्रेम कौ, तहाँ सुहृद सत भाव ।
औगुन औगति ओट२ दै, भजन माँहि समवावै ॥२३९॥

सबै समाइ प्रताप में, संपुट४ भजन के जोर ।
बलद प्रबल पद उर धरै, श्रीरसिक नरेस किसोर ॥२४०॥

चरन कमल हरिबंश प्रभु, गहि गाढ़े विस्वास ।
तब सब विधि पूरी परै, श्रीवृन्दावन बास ॥२४१॥

सब तै न्यारी चाल है, अलग अडग सज सार ।
भाँतिन भाँतिन सोभिये, ज्ञेद भजन जिहि भार ॥२४२॥

अलक लड़ते लाल कौ, मारग लगिहै कौन ।
अलिं५ हैं तै गति गूढ़ है, पैड़ौ६ सौरभ पौन७ ॥२४३॥

अति लड़ रसिक नरेस कौ, मारग अगम अपार ।
बोहित८ पाये पहुँचिये, श्रीव्याससुबन पद चार ॥२४४॥

अति अगाध यह रीति है, जोति मनहि गहि पाय ।
नागर रसिक नरेस के, चरन कमल चित लाय ॥२४५॥

याही बल निस्तार है, अनतहि सब संकोच ।
बेपरवाही हँ परै, तजि मन सम्भ्रम सोच ॥२४६॥

खोज खोज मन सोधियै, उयौ वासना न बसाइ ।
मरम धरम कौ सहज है, तन उरमी९ न समाइ ॥२४७॥

१- बटकती है, २- हटाकर, ३- मिलो, समाओ, ४- दिव्वा, ५- भ्रमर,
६- मार्ग, ७- पवन, ८- जहाँ, ९- लहर, तरंग ।

वाणी श्रीनेहो नागरीदासजी महाराज

१२४]

तनमानी भये भजन सों, कछु इक परिहै बीचै ।
 श्रीव्याससुबन पद माधुरी, संतत हिवरा सोंच ॥२४८॥
 भजन दसा मन में छई, तन सब कौं सिर नाइ ।
 वस्तु गुमानी पुष्ट हिय, श्रीव्याससुबन मृदु पाँड ॥२४९॥
 भजन गुमानी मन बढ़ै, तन नर्मता नै सॅभारै ।
 दुलंभ नेह दसा छई, जिय हिय वस्तु सिंगारै ॥२५०॥
 श्रीव्याससुबन मृदु पद हियें, सोई कोमल बानै ।
 भीजी झेखियन नर्मता, अंग अंग छई आनै ॥२५१॥
 तनमानी नाहं होहुगे, मन मानी मैमंतै ।
 श्रीव्याससुबन मृदु पद हिये, सोई भजनी संत ॥२५२॥
 बेपरबाही दीनता, लीन भजन परबीन ।
 कोमल कोमल रसिक मनि, चरननि की आधीन ॥२५३॥
 निस्प्रेही औठाइलौं५, ओघट करि है घाट ।
 बल पूरौ हिय प्रबल है, श्रीव्याससुबन पद डाट ॥२५४॥
 एक डाटै६की बाटै७लगि, तन मन निपटै८ निराट ।
 श्रीव्याससुबन पद प्रेम निधि, रमें रमित सुख डाट ॥२५५॥
 नांगौ उधरौ जगत सब, भजन ढके निजदास ।
 निधरक डोलत भक्ति बल, श्रीगुरु चरण विस्वास ॥२५६॥
 भजन भक्त ज्यौं पतिव्रता, जग गनिका की बानि ।
 रागादिक व्योपारि भरि, सुजन भक्ति गति कानि ॥२५७॥
 सुजन भक्ति के बल फिरत, बिमुख भजन नृप चोर ।
 जहाँ तहाँई पीटिये, दादै९ न दया निहोर ॥२५८॥
 बेपरबाही विमल गुन, अलक लड़े लड़े लाड़ ।
 श्रीरसिक नृपति मंगल अवधि, वरबानी सों चाड़ ॥२५९॥

१- व्यवधान, २- अति विनम्र, ३- आदत, ४- विशाल, ५- मत्त, ६- बल,
 स्थिरता, ७- मार्ग, ८- निपटन, ९- अपेक्षा, १०- प्रशंसा ।

साँची चौप अरु चाढ़ यह, और बड़ाई जाहु ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, बानी करहु निवाहु ॥२६०॥
 श्रीव्याससुबन पद रसद सद, गहि गाडे निरधार ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, गिरा निवाहन हार ॥२६१॥
 मंगल रूप अनूप हिय, चरण चतुर मणि चाह ।
 उज्ज्वल तन मन गुन निपुन, सुहृद भजन सिगार ॥२६२॥
 सुभग सिगार सलौन तन, उज्ज्वल मन की चाल ।
 वेपरबाही बस्तु बल, कर्यो रसिक मनि लाल ॥२६३॥
 तन मन उज्ज्वल हिय सुभग, चरन माधुरी रूप ।
 आनन्द अवधि उदार गुन, सरस भजन वर भूप ॥२६४॥
 भजन सुभूप अनूप पद, कोमल कुशल किशोर ।
 हिय में भजन प्रकास जहाँ, मोद विनोद न थोर ॥२६५॥
 कोमल कुशल किशोर कल, बल फल रूप सुचाव ।
 चरण कमल हिय में जहाँ, मंगल भजन पसाव ॥२६६॥
 श्रीव्याससुबन पद सुभग सुख, अपनौ सर्वसु जानि ।
 मन की मन हिय की हियौ, प्राननि है कौ प्रानि ॥२६७॥
 प्राननु पोषन प्रबल पद, श्रीरसिक नरेस उदार ।
 भजन भाव सन्तोष सुख, बानी सुरस सेमार ॥२६८॥
 श्रीव्याससुबन पद प्रेमनिधि, सम्पति सब सुख ठाट ।
 ज्ञानप्रकाश उदोत मन, चल बल कल इहि ठाट ॥२६९॥
 मन की गुड़ी? मिटाईयै, तब आवै सत भाव ।
 भजनारंभ सजाइ जिय, जतन जतन दे दाव ॥२७०॥
 गोंडेर अंडौ त्वे चलै, पेंडौ कठिन अति और ।
 तन मन गुन गन गारिं गहि, हिये हिलग की ठौर ॥२७१॥

१- गांठ, प्रन्थि, २- मार्ग, गाँव, ३- गला कर । **पाठान्तर—प्रान** ।

वाणी श्रीनेहो नागरीदास जी महाराज

श्रीब्याससुवन पद विमल गहि, जों लौं न खेले छूटि ।
 काचर कूचर कौन गति, मन रहे पाढ़े दूटि ॥२७२॥

तेतिक चलनौ बोलनौ, गहे हिये दृढ़े होइ ।
 बेपरबाहो चाल कल, खेल न समझे कोइ ॥२७३॥

आछो अधिक अछामनौ, हिये चतुर मन लाल ।
 सावधान गति पहुँचि है, श्रीब्याससुवन कल चाल ॥२७४॥

श्रीब्याससुवन पद लाल मनि, पाल हिये पन प्रान ।
 सब विधि आछो देखिये, सुकृती भजन सुजान ॥२७५॥

श्रीब्याससुवन पद माधुरी, मंगल मन अबगाहि ।
 तन मन दशाऽव फिरि परे, भजन चाल निर्वाहि ॥२७६॥

भजन चाल तब सुगम सब, जब मन एक बंधान ।
 आनंद कंद अटूट निधि, श्रीब्याससुवन पद प्रान ॥२७७॥

थोरी थोरी चाल चलि, भोरी भोरी भाँति ।
 हिये भजन की पुष्टता, वानी मृदु मन भाँति ॥२७८॥

वानी मृदु जब मन मत्थौ, उर भर भजन हुलास ।
 मंगल भोद विनोद सुख, श्रीब्याससुवन पद आस ॥२७९॥

श्रीब्याससुवन विश्वास पद, कठिन सुगम सुख भेद ।
 भजन चाल हिय सुधि चलै, मन में मुदित उमेदै ॥२८०॥

जाके हिये श्रीब्यास सुल, चरन कमल उल्लास ।
 जूठ खाइ पद सेइये, तासु नागरीदास ॥२८१॥

ताको दासंतन करे, दम्पति सहज अधीन ।
 सेवी रसिक नरेस के, चरन चरच रज लीन ॥२८२॥

ताको भृतृ निभृत हो, हिये चतुर मन लाल ।
 उहै उपासिक सेइये, सुकृती सुजन रसाल ॥२८३॥

देवाक्षरी

बेपरवाही भजन कौ, चलि है निपट निसंक ।
 पाय पलेंड़े जगत सुख, कनहट^१ कुहलरे कलंक ॥२८४॥
 जग के सुख तुस^२ थोथरेऽ, निदरे पाँय पलेंड़ ।
 बेपरवाही भजन कौ, चल्यौ निसंक उलेंड़ ॥२८५॥
 बेपरवाही भजन कौ, चल्यौ जग पाँय पलेंड़ ।
 जगत कपट को चोष^३ लगि, पकरूयौ भजन चचंड ॥२८६॥
 बेपरवाही भजन कौ, चल्यौ जगत पग पेलि ।
 श्रीव्याससुवन पद विपुल बल, तन गुन निदरे ठेलि ॥२८७॥
 श्रीव्याससुवन पद बल जहाँ, तहाँ न बाधा भीर ।
 निधरक बेपरवाह मन, भजनी भजन सरीर ॥२८८॥
 भजनी भजन सरीर हैं, धीर गहें हड़ ठौर ।
 जहाँ तहाँ मन पूरी पर, सरन रसिक सिर भौर ॥२८९॥
 भाँति भाँति दुलरावने, अमित लड़ावने लाड़ ।
 गिरा रसिक मनि लाल की, चौप चातुरी चाड़ ॥२९०॥
 जामहि लाड़ लड़ावने, चौप चातुरी चाइ ।
 कोलाहल कौतुक कुशल, विशद विलास बनाइ ॥२९१॥
 गिरा गम्भीर गुमान गुन, गरव गहिल^४ गति गात ।
 गौर स्याम छवि फवि छई, मधु मकरंद बसात ॥२९२॥
 अवत सुधा मकरंद मधु, सौरभ सार समाज ।
 गिरा गुनवती गहिल गति, सुरगन^५ भूषण बाज ॥२९३॥
 चाव सुदाव बताव जहाँ, रूप अनूप प्रकास ।
 गिरा माँझ गुन जग मगत, रति रस अमित हुलास ॥२९४॥
 भजन अधानी चाल चलि, जिन द्वृह नाँहि ढड़ाहि ।
 बानी श्रीरसिक नरेस की, भेदाहि भेद समाहि ॥२९५॥

१- कलेठा, भेंगा, २- घोखेवाज, ३- भुसी, छिलके, ४- थोथे, छाली, ५- रोग,
 चसका, ६- गम्भीर गहन, उ- एवर राम (गंगीत) ।

बानी भेद समाहि मन, अतुराई असँभार ।
 चतुराई नहों पहुँचिये, बानी प्रेम सुडार ॥२८६॥
 अतुराई अकुलाइ जिन, भेदहि भेद समान ।
 बानी चसवधौ मन पर्यौ, कान आन नहि बान ॥२८७॥
 श्रीरसिक नृपति मृदु चरन चित्त, तबही भजन अधाइ ।
 आन सबाद न सूझई, बानी मन बिबसाय ॥२८८॥
 आन सबादन नहि चलै, मन बानी गहि धीर ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, भजन अधार सरीर ॥२८९॥
 अनत तमासी२ सौ फिरे, मन मृदु मंगल ताक ।
 श्रीव्याससुबन बानी पर्यौ, छूटी कनहटै काक ॥३००॥
 कनहट काक न कहुँ कहू, जहाँ रसिक मन लाल ।
 सुहृद सनेह समार शुम, सुख कृत भजन रसाल ॥३०१॥
 सुहृद भजन के गुन जहाँ, तहाँ आतुरी खोट ।
 मंगल चालनि चित्त करे, अपथ अपसदी४ ओट ॥३०२॥
 बानी श्रीहरिवंश की, ओट भजन गुन नेकै ।
 सुहृद चाल क्यों करि लहैं, कुदरकरै कुमति कुटेक ॥३०३॥
 प्रबल प्रकाश हुलास हिय, जोति जगमगे प्रान ।
 श्रीव्याससुबन पद छाँह चलि, बानी जानें जानि ॥३०४॥
 बानी जानें जानि है, आन सयान अन्धेर ।
 जगमगात मग ऊजरी, महिमा मङ्गल भेर ॥३०५॥
 अमल अनोखो अडग अति, पल पल रस जस फैलै ।
 बानी बल चलि आइ है, रसिक नृपति की गैल ॥३०६॥
 गैल फैल आनन्द गुनि, बिविध विनोद बगार ।
 मोद भेद कौतुक कुशल, सम्पति सार सिगार ॥३०७॥

१-विवश हो जाता है, २-तमाशा देखने वाला (इष्टा), ३-कोबा जैसी हृषि,
 ४-अवम, ५-सुन्दर, अच्छे, ६-महा डरपोक, ७-प्रसार, ८-विस्तार, फैलाव ।
 CC-0. Vasishtha Tripathi Collection.

गोहावली

सम्पति सार सिगार सुख, ढार उदार हुलास ।
 अमल अमित मकरन्द मधु, वर वानी की आस ॥३०८॥

मंगल मैंमत चाल कल, सुधा सुसिधु प्रवाह ।
 मन रति सरिता हूँ निले, वानी सुख अवगाह ॥३०९॥

वानी सुधा समुद्र में, मन ढरि परे सुरीति ।
 तब सबही विधि भजन सौं, संतत सहज समीत ॥३१०॥

रसिक नृपति की गरपरा॑, अलप मन्द मति हीन ।
 समरथ सहज निबाहि हैं, कहणा सिन्धु प्रबीन ॥३११॥

समरथ मेरी खसम है, सबै निबाहन हार ।
 मोसे काहिल कृपन की, बहिहै सब भर भार ॥३१२॥

सुकुंवारे कोमल कुशल, समरथ सब सुख धाम ।
 श्रीब्याससुवन पद सद सदा, मेरे वर विश्राम ॥३१३॥

मेरे वर विश्राम चितु, हितयित चित की मेल ।
 श्रीब्याससुवन पद सद सरन, अबके सुख सौं खेल ॥३१४॥

परमानन्द प्रबीन मन, वानी जाने जान ।
 भजन ढार कोमल कुशल, मेटि देह अभिमान ॥३१५॥

तन अभिमानी छाँड़ि चलि, मन गम्भीर गुमान ।
 सुभग स्वाद चसकौ पर्यौ, वानी मंगल ठान ॥३१६॥

वानी मानी मन भयो, जानी जानी गैल ।
 ठानी ठानी वस्त पर, छानी छाने छंल ॥३१७॥

मन अभिमानी अटपटौ, ऐडाइल इतराय ।
 वानी लाड़ लड़चौं फिरे, ललित लाल ने चाइ ॥३१८॥

रूप सील सिगार गुन, निषुन सबाद सुमाइ ।
 वानी मानी मन भयो, कार्य परे घिराइ ॥३१९॥

वानी हरिहा॑ मन भयौ, मैमत प्रबल उरेरे॒ ।
 स्वाद चसक जक जिय परी, कौन सकंगी घेरि ॥३२०॥
 तनक तनक छिद्रनि कटै, तन संकोच न जाइ ।
 मन गज वानो स्वाद जकरे, घकै नहिं अनत बुझाइ ॥३२१॥
 मन गज जक हिय घक दियें, वानी बन प्रिय प्रान ।
 सुधा सुरति सरिता सुखद, इभै रति रूप गुमान ॥३२२॥
 मन इभ आनंद मगन अति, वानी विपिन हुलास ।
 खेलं अमृत सरोवरनि, सरिता सुधा विलास ॥३२३॥
 रूप रंग रस जस सघन, मोद विनोद हुलास ।
 वानी वर सुख सार में, मन मैमत अदकासै ॥३२४॥
 वानी कानन मन परी, मुदित मत्यौ सन्तोष ।
 छवि गिरि सौरभ सुख अबै, सरिता सरस सुपोष ॥३२५॥
 छेंडी टूटी झाँपरी, मन गज कहाँ समाइ ।
 वानो बन सम्पति सुधा, निधरक पाई खाइ ॥३२६॥
 श्रीब्याससुबन वानी विपिन, सघन सुधा सुख रूख ।
 मन गज तहाँ सद मद रहै, व्यापै प्यास न भूख ॥३२७॥
 वानी बन मन इभ उमड़ि, विनोद विटप घन छाँह ।
 बल्ली तरह तमाल गसि, मैमत मन ता माँह ॥३२८॥
 वानो बन मन इभ मत्यौ, औसर खेलं फूल ।
 गुन घन तरु सुतमाल सौ, कनक लता रही झूल ॥३२९॥
 श्रीब्याससुबन कल चाल में, मन परे उमड़ि प्रबीन ।
 सुधा नोर नौतन सदा, वानी सागर मीन ॥३३०॥
 वानी सुधा समुद्र सुख, मोद माधुरी नीर ।
 खेलं मंगल मीन मन, बस्तु तरंग गम्भीर ॥३३१॥

१- हुरा हुआ, २- उमंग, विशाल, ३- लगन, ४- उमंग, उद्देश, ५- हाथी,
 ६- विश्राम ।

सुधा जलधि वानी अमल, मूटकि मौन मन खेल ।
 गुन अगाध गहरे गरब, भजन भेद बहु मेल ॥३३२॥
 वानी श्रीहरिवंश की, सार सुरति सुख ओघ ।
 मुदित मीन तन खेल कल, सागर सुधा अमोघ ॥३३३॥
 भजन सार सागर सुधा, विमल केलि कल नीर ।
 वानी निधि मन मीन मति, जीवन सफल सरीर ॥३३४॥
 वानी सुधा समुद्र में, मुदित मीन मन भाँति ।
 केलि तरंगनि संग रंग, सद सुख सबही भाँति ॥३३५॥
 सहज भजन सौंढार है, वहई^१ सील सिंगार ।
 जैसे सुकृतिन पतिवृता, शुद्ध सचौटीर सार ॥३३६॥
 जगत जनों ही मत करे, हिय मधि वस्तु विचार ।
 मन को मंगल रूप है, भजन सील सिंगार ॥३३७॥
 सहज सिंगारी मन सदा, वानी ढक्यो बनाऊ ।
 व्याससुवन कल चाल कौ, कुल वधु को सौ चाऊ ॥३३८॥
 अलक लड़ी आनन्द अमल, वानी व्यञ्ज विनोद ।
 मृदु मकरन्दादिक द्रवत, मत माधुरी मोद ॥३३९॥
 श्रीरसिक नृपति रस रीति गति, जतन समझि मनपेस ।
 जामहि मृदु मकरंद द्रव, करनो कठिन प्रवेस ॥३४०॥
 खरे, कठिन ठिक पहुँचनौ, श्रीहरिवंश सेमार ।
 मकरन्दादिक सुख झुमत, धूमत सौरभ सार ॥३४१॥
 सार ढार ढंग एक बै, वानी वस्तु विचार ।
 श्रीरसिक नृपति रीत मति, तबही निज निस्तार ॥३४२॥
 श्रीव्याससुवन वानी बली, समझि समझि मन पूरि ।
 मृदु मकरन्दादिक द्रवत, तहाँ पहुँचनौ दूर ॥३४३॥

पेंडँौ छंडँौ साँकरौ, पैठौ सूछमै होइ ।
 आतुरता तजि तक लगै, वर बानी ढंग सोइ ॥३४४॥
 मृदु मकरन्दादिक ब्रवत, अवत सुधा सुख सार ।
 बानी मंगल पहुँचने, चल ढंग तिहीं सैसार ॥३४५॥
 चलियै जाय संभार मन, बानी विमल विचार ।
 मकरन्दादिक सुख अवत, पहुँचे मंगल सार ॥३४६॥
 मृदु मकरन्दादिक ब्रवत, महा मंगली सार ।
 बानी श्रीहरिवंश की, सौरभ सुधा पसार ॥३४७॥
 तब ही निज निस्तार है, बानी मन परे ठूट ।
 वेपरबाही रीति में, खेले निघरक छूट ॥३४८॥
 सोचत मनहि सदा रहै, जिय में हाहरै हूल ।
 चौप चोभ हियरा गड़ै, क्यों सौवै निरमूलै ॥३४९॥
 निघरक हैं क्यों सोइ है, हिये भजन की चोभ ।
 चवत चकृत चौकत रहै, गह्रौ ललक मन लोभ ॥३५०॥
 भजन ललक जब मन लग्यौ, लोभ रूप की डाट ।
 जिय की बूझक वस्तु रति, चकृत चित्त उच्चाट ॥३५१॥
 भजन चौप जब ज्यौं गह्रौ, नीद उचक उच्चाट ।
 छिन छिन उघरे छिन लगै, नैननि पलक कपाट ॥३५२॥
 जामहि विविध विनोद है, बनक विचित्र बनाइ ।
 बानी रस वर सार सर, सौरभ सुख समुदाइ ॥३५३॥
 सोभा सुखद बनाव जहाँ, रूप रंग रस चाइ ।
 मोद मती गुन अनभती६, बानी विशद बनाइ ॥३५४॥
 मंगल मोद विनोद सद, मद मृदु मधु मंमत ।
 श्रीव्याससुवन पद बल लहै, समरथ सज्जन संत ॥३५५॥

१- सूक्ष्म, २- कोनाहल, ३- मूल रहित, निघरक, ४- चारों ओर, ५- किवाड़,
 ६- अनुभव पूर्ण । CC-0. Vasishtha Tripathi Collection.

समरथ सज्जन संत रस, रीति रसिक मन लाल ।
 बेपरवाही सोभियै, अलक लड़े कल चाल ॥३५६॥
 अमल अमी आनेंद अमित, रमित सील सिंगार ।
 वानी श्रीहरिवंश की, रूप रंग रस सार ॥३५७॥
 सील सहज सिंगार रस, ढार भार मद मोद ।
 वानी बनक विचित्र वर, मृदु मधु मुदित विनोद ॥३५८॥
 वानी विचित्र विनोद सद, लच्छन दसा सनेह ।
 गिरा चतुर मनि लाल की, मंगल रमें मन देह ॥३५९॥
 बेपरवाही आचरै, निषट निसाने मारि ।
 वानी विमल प्रकाश में, खेले मनहि पसार ॥३६०॥
 वानी विमल प्रकाश हिय, मन विनोद विधि केलि ।
 सबही भाँतिन सोभियै, बेपरवाही छैल ॥३६१॥
 बेपरवाही छैल मन, श्रीव्याससुवन पद लाड ।
 निघरक निषट निसंकता, इह बल बोलन आड़ ॥३६२॥
 बेपरवाही छैल मन, वानी विमल उखेल ॥
 तन मन दसा विमल चली, याही ढंग के खेल ॥३६३॥
 ऊँचो नीचो बीच कौ, बोलहि परिहै भाव ।
 जाके हिय की हिलग जहाँ, तेही ठौर बनाव ॥३६४॥
 तेही ठौर बनाव है, चाव दाव उपजाव ।
 ताही सौ मिलि खेलियै, जहाँ हिये कौ भाव ॥३६५॥
 श्रीव्याससुवन वानी प्रबल, हिय में वस्तु प्रकाश ।
 बेपरवाही डोलनौ, अनत तमासे हास ॥३६६॥
 बेपरवाही डोलनौ, देखत कौतुक खेल ।
 श्रोरसिक नरेस किशोर मनि, बर वानी सौ मेल ॥३६७॥

बर वानी सों मिलन जिय, सबही कौतिक हार ।
 इह बल बेपरवाह मन, पर्यौ हिये यह ढार ॥३६८॥
 बेपरवाही हूँ पर्यौ, सरस सवाद समूह ।
 श्रीरसिक सिरोमनि हियरमी, वानी कल कौतूहै ॥३६९॥
 बरवानी कौतूहलनि, रम्यौ देह मन प्रान ।
 अनत तमासी सौ फिरै, चित नहीं आवै आन ॥३७०॥
 मजन भेद बहु भाँति के, हिय नहं आवै और ।
 तन मन घित चित प्रान घित, हितजू कौ हित ठौर ॥३७१॥
 हितजू कौ हित ठौर जहाँ, चित घित घित सतभाव ।
 विमल विलास आराम^२ रति, रमि मन मंगल चाव ॥३७२॥
 धाम ललित दुलरावनौ, हितजू कौ हित पाल ।
 मन मृदु मंगल ठौर ठिक, ललक लड़ावन लाल ॥३७३॥
 ललित लड़ावन लालनें, पालन प्रेम प्रकास ।
 हितजू कौ हित धाम मृदु, मति मन मंगल वास ॥३७४॥
 कौतिक कोलाहल कुशल, कोमल कल सुकुमार ।
 वानी मृदु मंगल मई, खेल सुहेल^३ पसार ॥३७५॥
 भाँति भाँति बहु कुञ्ज मृदु, ललना लाल विहार ।
 प्रेम खिलौननि खेल नित, रसिक नृपति खिलवार ॥३७६॥
 श्रीरसिक नृपति खिलवार जू, खेलं प्रेम खिलार ।
 सेज सुमन हौसनि^४ फर्यौ, लता ललित आगार ॥३७७॥
 लता ललित कुसमित महल, सुमन तलप रति मेल ।
 हित जुग रसिक नरेस के, प्रेम खिलौननि खेल ॥३७८॥
 वानी में ज्यौनार सब, जुग जीवन ज्यौनार ।
 मोद भेद मधु माधुरी, पाल सुवान अधार ॥३७९॥

१- कौतूहल, २- वाग, विश्राम, ३- सुखदायी, ४- चाव से ।

घट रस छचि ज्योनार है, बानी रति रंग पान ।
 अधर अदन अमी सौरभी, पोखन तन मन प्रान ॥३८०॥
 छाजन भोजन सम्पदा, दम्पति रूप सेवार ।
 लाङ लड़ावन ललक रति, बानी रंग विस्तार ॥३८१॥
 बानी ज्यों जीवन जुगल, हितथित ललना लाल ।
 सुख निधि रसिक नरेस की, मधु मति मंगल चाल ॥३८२॥
 भोग विलास सुवास सद, सुधा माधुरी पान ।
 बानी ललक लड़ायती, हृष्ट पुष्ट प्रिय प्रान ॥३८३॥
 बानी प्राननि पुष्टता, तन सिगार सरूप ।
 खेल सुहेल समूह सचु, मंगल खेल अनूप ॥३८४॥
 सौरभ सार समूह शुभ, मन मादिक घन द्वान ।
 अंग सुवास सवाद लै, अचन भोइ मन प्रान ॥३८५॥
 बूढ़ि बूढ़ि तन मन उठे, सौरभ स्वादिल कूप ।
 भाँति भाँति हिय तें कड़े, प्रेम पराण अनूप ॥३८६॥
 सुभग भभूकनि मन भरे, भोइ भोइ रहे प्रान ।
 अमित स्वाद सौरभ सुधा, घूमि रहौ घन द्वान ॥३८७॥
 कुशल कलेवर कल कड़े, सम्पति सुभग सुवास ।
 श्रीव्याससुवन बानी प्रगट, मृदु मकरन्द हुलास ॥३८८॥
 अजब अकहै सौरभ सुधा, बानी विमल बगार ।
 मंगल मृदु मकरन्द द्रव, अमी अमित आधार ॥३८९॥
 सौरभ सुधा समूह रस, बर बानी की रीति ।
 वेपरवाही आचरी३, निवट निरन्तर प्रीति ॥३९०॥
 वेपरवाही रसिक मनि, चलि विखराई गेल ।
 खरी कठिन मनकों परे, छुवत छबीली छेल ॥३९१॥

निधरक वेपरवाह बल, पेंडो प्रेम प्रबोन ।
 तबही ता मन परसि है, औरसिक नृपति मन^१ लीन ॥३८२॥
 चिकुला^२ कारे साँप कौ, अमिठी लगे अजान ।
 ताकों गति नहि गारढूरे, माने मंत्र न मान ॥३८३॥
 चिकुला कारे साँप कौ, गारढूरे मंत्र अमान ।
 देखत ही विष पुरि है, परसन कों कहा बान ॥३८४॥
 बानी अहिवर^३ चैंदुआ, स्वास भूमि पकि जाइ ।
 ताकों मंत्र न गारढूरे, कौन सके करै नाइ ॥३८५॥
 धोखे कोऊ जिन गहो, बानी अहिवर पोड़ ।
 फूंक परसि जरि जाइगौ, झूठी अँग अँग होड़ ॥३८६॥
 तन मन प्राननि चित हियें, गद सद एके भेस ।
 औरसिक नृपति पद ओट दे, जतननि करे प्रवेस ॥३८७॥
 लच्छन लच्छत बस्तु है, रचना हचिर बनाइ ।
 बानी बर पहिचानि जे, ललना लाल सुभाइ ॥३८८॥
 जैसे लच्छन हुलसि मन, तन गुन गवित भाव ।
 विधि बानी विस्तार गति, विलसत सौरभ चाव ॥३८९॥
 जैसी सौरभ चाव चित, सेज सनैं सुख ठान ।
 बानी लालन ललकि लखि, खेल मेल मधु पान ॥४००॥
 जमुना बन सहचरि सहज, सरस सम्पदा बान ।
 औरसिक नरेस कृपाल बर, बानी सों परे जान ॥४०१॥
 बचन रचन मुक्ता मनै, लाल रतन गुन सारु ।
 बानी रसिक नरेस बर, नौखोरे धरि हिय हारु ॥४०२॥
 बानी नौखो हार हिय, नग अनूप बर बैन ।
 धरत भजन उर जगमगै, मधु मंगल सुख चैन ॥४०३॥

१- बच्चा, २- साँप का विष उतारने वाला, ३- व्येष्ठ सर्प, ४- हाथ डालना,
 ५- जनौखा । ^६शाठान्तर—पद ।

बचन चारु चितामनी, बानी वितु हित हार ।
 पहिरं पानिप भजन मन, गुन गन नगनि सुदार ॥४०४॥
 बानी हार हिये धर्यौ, तब न कछू परवाह ।
 बचन विशद नग गुन दियैं, भेद भजन भरवाह ॥४०५॥
 बानी हार हिये लसें, ढार उदार उदोत ।
 अबके जीवन जनम कौ, पूर्यौ पर्यौ है पोतै ॥४०६॥
 बानी श्रीहरिवंश की, हिये अलंकृत हार ।
 नग निर्मलकर जगमगे, बचन माधुरी चारु ॥४०७॥
 बानी कठुला कंठ करि, कौतिक कल मधि जासु ।
 रमित अमित रंग अबलिरे नग, बचन रचन परकास ॥४०८॥
 अवरन सरन सहाइ कौं, समरथ प्रभु प्रतिपाल ।
 श्रीरसिक नृपति बानी विना, अति आपदा अकाल ॥४०९॥
 जहाँ तहाँ आपति काल है, लाल रसिक मनि ठौर ।
 बानी परमानन्द निधि, नहि प्रति पालक और ॥४१०॥
 रसिक सिरोमनि सरन सुख, अनत आपदा ताप ।
 निधरक डोलत हिय धरे, बानी प्रबल प्रताप ॥४११॥
 अँखियन अंजन अमल सुख, मन हिय उज्जल प्रान ।
 रस निधि निरवधि भजन को, बर बानी परमानै ॥४१२॥
 याहो में परमान है, भजन रीति रस ढार ।
 विमल बस्तु बहु भाँति सुख, बानी बर ढेंग गार ॥४१३॥
 अनत कनूकार जगमगत, बानी रस जस ढेर ।
 भाँतिहि भाँति प्रकाश छवि, मंगल मद मन मेरै ॥४१४॥
 मंगल सहज समाज सुख, शुभ सन्तोस सुभाउ ।
 प्रोति रीति फोकी अनत, बानी में समवाउ ॥४१५॥

१- अवसर, दाव, २- अनमोल, ३- श्रेणी, ४- प्रमाण, ५- कण, ६- मेरा,
 ७- मुमेह, ८- नित्य सम्बन्ध ।
 CC-0. Vasishta Tripathi Collection.

तन ओढ़ौ पट जरकसीै, के गूदर गर बाँधि ।
 काज रसिक मनि लाल की, बरवानी हिय साँधिै ॥४१६॥

तन बहु मोलक चौर घरि, के गूदर गर भार ।
 श्रीरसिक नृपति वानी हियें, दुहैं भाँति सिगार । ४१७॥

बर वानी साधैं सकल, सहज सुखद कल काज ।
 रसिक सिरोमनि लाल मन, मंगल चरन समाज ॥४१८॥

षट रस भोजन भोग जो, टूक मधुकरी खाइ ।
 सोई सकल सुख दाइ शुभ, वानी हियें रमाइ ॥४१९॥

कहा विविधि भोगनि करै, कहा माँग भख्ति कौरने ।
 काज हियें वानी रमैं, लाल रसिक सिरमौर ॥४२०॥

पौढ़े सेज प्रजंकै जो, के सैन साँथरें सोइ ।
 काज रसिक मनि लाल की, बर वानी तैं होइ ॥४२१॥

सबै काज वानी सधैं, बैधैं न कौनहु आस ।
 निधरक बेपरवाह हिय, हरखत भजन हुलास ॥४२२॥

वानी सुधा समूह में, तक धक हिय जिय राखि ।
 सौरभ ही दारिद्र भगै, मुदितै कनूका चाखि ॥४२३॥

वानी कनुका अमृत कौ, चाखत रोम सिराँहि ।
 सरस सवादनि पुष्टता, तन मन प्रान अधाँहि ॥४२४॥

वानी अमो॒ अगाध निधि, किनका हाथ पवाय ।
 सबै सवाद फीके लगैं, नित नव रंगनि चाय ॥४२५॥

वानी अमो॒ कनो हियें, रोमनि स्वाद सभार ।
 उर हुलास उठिवौ करै, नौखे सौरभै सार ॥४२६॥

वानी कन हियें पूरि जहाँ, मुख बोलन बहराउ ।
कौन सवादहि जानि है, जेतक हिय कौ चाव ॥४२७॥

१- जरी का, २- संधान कर, ३- चास, दुकड़ा, ४- पलंग, ५- तृण शैया (चटाई), ६- प्रसन्न, ७- अमृत, ८- सुगन्धि ।

तबहि कछु मुखते कढ़त, हिये कनूका पूरि ।
 वानी सूझ असूझ है, हिय की पहुँचनि दूर ॥४२८॥
 वानी श्रीरसिक नरेस की, परं कनूका हाथ ।
 तैसोई सुख जिय जनै, प्रेम प्रकासे साथ ॥४२९॥
 वानी सुभग सुधा कनी, उर में स्वाद समूह ।
 भाँति भाँति सौरभ अबै, कोलाहल कौतूह ॥४३०॥
 तन सूधो हिय बाँकुरी, भजन चाल अति बंक ।
 श्रीव्याससुवन पद उर धरें, जाते फिरत निसंक ॥४३१॥
 हिय बाकीं तन सूधरौ, कहै कौन सों बात ।
 काहूं पैं सुनत न बनै, उसल पुसल हिय जात ॥४३२॥
 तन कोरौ अति मन गरब, चलैज एँड़ी बंड ।
 जित तित तं पूरी परै, वानी भजन उलैंड ॥४३३॥
 गरब गहेली गुनवती, वानी हिय रही छाइ ।
 मन में बस्तु गुमान भरि, तन कोमले सुभाइ ॥४३४॥
 सावधान यहि चाल चलि, कछु न करै अकुलाइ ।
 अपने मन के आतुरे, उचकहि आवत पाइ ॥४३५॥
 मन अतुराई॑ ईतरी॒, पतराई॑ न खटाइ॒ ।
 वानी बर गम्भीर गुन, अलक लड़ी चल जाइ ॥४३६॥
 सद औषद वानी विमल, बैद रसिक मन लाल ।
 तेही ठिक बैठारि है, जहाँ न माया काल ॥४३७॥
 तेही ठिक बैठारि है, जहाँ अगाध अधार ।
 केलि खेल कौतिक मिलन, विशद विहार पसार ॥४३८॥
 तेही ठिक बैठारि है, पाल पोष शसिताइ॒ ।
 जहाँ कछु शम परसे नहीं, कोलाहल समुदाय ॥४३९॥

१- आतुरता, २- ईतराहट, ३- योड़ी-भी, ४- समाती है, ५- विश्राम देकर ।
 CC-0. Vasishttha Tripathi Collection.

श्रीव्याससुवन वानी अमल, पियत माधुरी मूर ।

भजन उदार उदोत उर, रोम रोम भरि पूर ॥४४०॥
रस आलय हरिवंश पद, सद गद जीवन प्रान ।

सेवत मंगल मोद मधु, गुन गन भजन निधान ॥४४१॥
सरसीखहै पद कनक दुति॒, मृदु मधु मंगल चार ।

रसनिधि श्रीहरिवंश जू, चित हित चरन विचार ॥४४२॥
श्रीव्याससुवन आनेद अवधि, पद सद विमल विचार ।

सहज चाव के भजन महि, बूङ्हि बहुत संभार ॥४४३॥
तन मन चित वित प्रान दै, श्रीव्याससुवन पद चार ।

मंगल मोद विनोद मृदु, यामें भजन विस्तार ॥४४४॥
चलन न अचलन ना ढरौं, ऊबट बाट न लाज ।

सो जु कहा मैं ना करौं, लाग तुम्हारे काज ॥४४५॥
कबहूं संघट मिलि चलौं, कबहूं एकाएक ।

डाढ़चौरेपाक्यौ भजन कौ, ताकौं कहा कोऊ छेकै ॥४४६॥
तेतिक वै मुख बोलनौं, जेतिक भजन मन फूल ।

बादै बाइदौरि को रटै, जामें जक यक भूल ॥४४७॥
जे तक सोच विचार है, विविध भजन मन दौर ।

एक नाम सौं काम निज, रसिक कुंवर सिरमौर ॥४४८॥
श्रीरसिक सिरोमनि नाम सौं, साज काज निज प्रान ।

और स्वाद विरमौ नहीं, मन सर्वसु सुख ठान ॥४४९॥
अपने औचक भजन की, सबसौं मानी हारि ।

तिनकौं कहा सताइये, प्रेमहि राखे मारि ॥४५०॥
प्रेम मरम जिन कौं गह्यौं, वह कष्टुं पेंडों आन ।

सोईं पीरहि पाइ हैं, मेरी भजन सुजान ॥४५१॥

१-कमल, २-कान्ति, ३-विशेष, आत, ४-अलग करना, ५-वहस, ६-बायदा,
वचन ।

अपने को अह और को, सिर पर बोढ़ी^१ गारि^२ ।

श्रीरसिक नरेश किशोर मनि, सब विधिलियौ सुधारि ॥४५२॥

सावधान प्रभु सीस पर, सबै सुधारन हार ।

निर्भैं निधरक करि रह्यो, कहणा सिन्धु उदार ॥४५३॥

श्रीरसिक नरेश कृपाल कौ, ताकौं कहु न भीरै ।

बेपरवाही करि रह्यो, अन समझे ते कीरै ॥४५४॥

अनसमझे ते चुप भली, रहिये सोच विचार ।

सुजन भजन सुहदी बिना, फिर माँडेगौरै रारि ॥४५५॥

अनसमझे सौं काम जब, तब छुटियै हरवाय ।

बोलैं बोलैं विरस है, नख सिख उयों करवाय ॥४५६॥

भजन चाल हियैं सुधि चलै, गहि बानी कहु भेव ।

अमित लच्छ^३ लाभै लहै, तन मन सौंपै सेवै ॥४५७॥

बानी रसिक नरेश की, अर्पै वेह मन प्राण ।

मृदु मधु मंगल चाल कल, तब प्रबेश कौ बान ॥४५८॥

बानी लेस प्रबेश जो, करि पावै (आवै) बढ़भाग ।

तन मन साथै खेल है, परं भजन रस पाग ॥४५९॥

कठिन खेल बाँकौ मिलन, पेच प्रेम परबोन ।

तन मन अर्पै उर रमै, बानी नेह नबीन ॥४६०॥

बानी कनिका उर रमै, सूझै भजन पसार ।

हिय उजियारौ ढैं रहै, मन में बस्तु उदार ॥४६१॥

श्रीरसिक नरेश किशोरमनि, चरन कमल वर सेहै ।

इन्द्री गुन मन की दशा, खसम लेइगौ नेहै ॥४६२॥

समरथ सबै सुधारि है, सिर पर रसिक नरेश ।

बेपरवाही बल फिरत, काढ्यौ कर गहि केस ॥४६३॥

१- दमढ़ी, स्वल्प धन, सिर का एक आभूषण, २- नष्ट करके, ३- विपत्ति,
४- तोता, ५- लड़ाई घोरना, ६- ना समझ, ७- सक्षम, ८- सेवा, ९- सुधार ।

काढि जतन अपनौ कर्यौ, समरथ दान उदार ।
 हों बल वेपरबाह मन, खसम लिबाहन हार ॥४६४॥
 जाके सिर पर रसिक मनि, ताहि कछु नहि भीर ।
 करुना कुशल किशोर वर, मेटि रह्यौ सब पोर ॥४६५॥
 सुहृद सनेही सेइहू, श्रीरसिक नरेस अधार ।
 सुजनन कौ प्रतिपाल प्रभु, जाहि लग्यौ भर भार ॥४६६॥
 सुहृद सनेही काजकरि, श्रीरसिक नृपतिज्ञ की वानि ।
 सुजन समाजी संग में, पाखण्ड पूरो हानि ॥४६७॥
 सुहृद भजन की चाल को, यह न बूझिये साथ ।
 अपने अपने मूँडै पर, दै काढें सब हाथ ॥४६८॥
 सुहृद भजन की चाल के, संगी एकहि ढार ।
 वेपरबाही इक मना, सुकृती भजन उदार ॥४६९॥
 सुहृद भजन की संग जहाँ, एक ही चित की ताफि ।
 वस्तु माँझ मन मिलि चले, तामें कसर न काकर ॥४७०॥
 भजन लडावन लाल है, यहई उत्तम चाल ।
 हिय नहीं उपजै दूसरी, जतन जतन मन पाल ॥४७१॥
 जतननि ही मन पालनौ, भजन लडावन लाल ।
 काचें तन गुन इन्द्री सधे, वस्तु हिये में घाल ॥४७२॥
 भजन लडावन मुख कहै, देह अभिरक्त की गाढ ।
 चोखे बादो पे बेधे, विषम६ विषहरी७ ढाढ ॥४७३॥
 भजन लडावन लाल की, लालच एकहि काज ।
 उत जु वस्तु इत अपनपौद, बीच समाइ न साज ॥४७४॥
 भजन लडावन लाल की, खरी कठिन है रोति ।
 एक ही बल तौ अनुसरै, श्रीव्याससुवन पद प्रीति ॥४७५॥

१- माथा, सिर, २- कुछ भी, ३- कच्चे, ४- डाल, ५- लडाई प्रिडाई, सहारा,
 ६- विषरीत, ७- विषहरी, ८- विषम६, ९- विषहरी७, १०- विषत्रीत।

गाढ़ी मारग भजन को, ठाढ़ी॑ नहिं ठहराइ ।
 हिय कोरोर हूँ नै चलै, दृढ़ गहि श्रीगुरु पाँय ॥४७६॥
 लालन मन तब ठिकु रहे, भजन चाल रस एक ।
 खरी कठिन है मिलन को, बाधा बान अनेक ॥४७७॥
 गुरु प्रतीति बस्तुहि गहै, भजन लाल को चाल ।
 खेल न होई मिलन यह, विन बल विषय बिहाल ॥४७८॥
 श्रीरसिक सिरोमनि सीस पर, विन निधरक है खेल ।
 मुख्य मूल हाथाहि पर्यो, सुहृद भजन हित भेल ॥४७९॥
 यहई भजन सौभार है, हिय में बस्तु रमाइ ।
 सावधान चित चेत है, श्रीव्याससुवन जू पाइ ॥४८०॥
 मन पथ जावन भजन को, दे रुचि जतन जमाऊ ।
 फाटे फटि है और को, समिटे सबै बनाऊ ॥४८१॥
 समिट गहै मन भजन पर, एक बस्तु को डाट ।
 दुजो आये छसि परे, खरी कठिन है बाट ॥४८२॥
 श्रीरसिक सिरोमनि चाल कल, कठिन कहाँ मन जाइ ।
 नौखी चोखी रीति रस, प्रीति न और समाइ ॥४८३॥
 होरा सौं होरा बिधै, नहिं पोहै तहाँ आन ।
 रीति चलैं श्रीरसिक मनि, बर बानी को जान ॥४८४॥
 भजन उजारो ऊजरो, भई रहे मन जीति ।
 तब तन धरि पूरो परे, श्रीरसिक नृपति पद प्रीति ॥४८५॥
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, पाछे लगि है कौन ।
 जामहि खेल खिलार को, अति दुर्लभ वह मौन ॥४८६॥
 श्रीव्याससुवन वर कुंवर को, पाछे लगानी दूर ।
 इन्द्री तन मन एक रस, विमल भजन गुन पूर ॥४८७॥

वाणी शीलेही नामरीदासजी महाराज

१४४]

श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, रीति कौन ठहराइ ।
 पूरन पदबी प्रेम की, देखत ही बहराइ ॥४८८॥

विष की कीरा खाँड़ में, परत हो छाँड़ प्रान ।
 श्रीरसिक सिरोमनि रीति में, नहिं काहू कौ बान ॥४८९॥

निमंल नौखी रीति की, गति जानेगौ सोइ ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल कौ, पद सद संगी होइ ॥४९०॥

मन विहंग बर भजन गुन, निमंल चुनि आहार ।
 पान करे आनन्द निधि, वानी अमृत सार ॥४९१॥

मन विहंग छाया बसे, कंचन बेलि तमाल ।
 फल अमृत गुन अमल भखि, वानी रूप रसाल ॥४९२॥

मन खग सुख चहचरि^२ करे, बेली सीतल छाँह ।
 अरुणी तरुन तमाल सौं, बेली कंचन माँह ॥४९३॥

बल्ली कल कंचन ललित, तरु तमाल गसि भेद ।
 गुन घन पंछी मन बसे, निर्भै कछून खेद ॥४९४॥

बल्ली कनक तमाल की, बैठि विमल गुन डारि ।
 मन खग अनत न चितवई, भल भखि वानी सार ॥४९५॥

बल्ली कनक तमाल में, दल फल फूल अनेक ।
 मन विहंग संतोष मति, वानी सौरभ एक ॥४९६॥

सौरभ सार समूह सुख, सीतल सुखग सुमोद ।
 मन विहंग कल अमृत भखि, वानी सरस बिनोद ॥४९७॥

मीठे फल मन खग चखै, जीभ न लागै आन ।
 विमल स्वाद भोगो भयो, वानी अमृत पान ॥४९८॥

और स्वाद सूझे नहीं, वानी सुख रह्यो गीधरे ।
 बेली हेम तमाल फल, रसनि रसि रही बीधरे ॥४९९॥

१- मस्त हो जाय, २- चहचराट, ३- लुठव होना, ४- फसना ।

बेली हेम तमाल की, मन खग भयो गिधैल ।
 बानी फल चसकौ पर्यौ, अनत न विरमै छैल ॥५००॥
 मन खग सबही छैल कल, बानी स्वाद बंधेज ।
 कंचन बेली तमाल के, गुन फल मंगल हेज ॥५०१॥
 बल्ली कनक तमाल तरु, मन पंछो फल खाय ।
 स्वाद निवटि बानी निपुन, गुन सुख कहै न जाय ॥५०२॥
 हाटकै लता तमाल सुख, गुन फल अमी अधाइ ।
 बानी छाँह विहंग^१ मन, किलकत निज निधि पाइ ॥५०३॥
 बानी श्रीहरिवंश की, बेली कनक तमाल ।
 सुजन विहंगनि सुखद सब, प्रगट बताई लाल ॥५०४॥
 कंचन बेलि तमाल तरु, मन खग सुख विश्वाम ।
 गुन गन घन फल फूल दल, बैठ्यौ निर्भय धाम ॥५०५॥
 कंचन बेलि तमाल तरु, बसि हैं सुजन विहंग ।
 प्रगट बताई रसिक मनि, सदा फूल फल रंग ॥५०६॥
 बानी श्रीहरिवंश की, कंचन लता तमाल ।
 सदा फूल फल दल सुगुन, सुजन खग बसे रसाल ॥५०७॥
 कंचन बेलि तमाल तरु, सुजन विहंग बसेर ।
 सौरभ सीतल छाँह सुख, किलकत मंगल मेरु ॥५०८॥
 व्याससुवन पद सुजन विनु, सर्वसु जीवन मूरि ।
 सुखद रसद हियरा बसे, भाग होहि जो मूरि ॥५०९॥
 सर्वसु सौंपे साज यह, पलटि होय सब बुद्धि ।
 तब तन भजन भजन कौ, मन क्रम बचन त्रिशुद्ध ॥५१०॥
 वस्तु भजन के ढार में, कोऊ न खेलै छूटि ।
 जोई डरियारे पकरियै, सोई आवै टूटि ॥५११॥

अलक लड़ी ऐंडाइलौ, सुद्ध साँच आधीन ।

गुरु प्रसाद मन में बसै, मंगल भजन प्रबीन ॥५१२॥

सब मंगल सब सुख जहाँ, गुन गन रस भरवाउ ।

अमल भजन श्रीरसिक मनि, अतुलित आनन्द चाउ ॥५१३॥

झारे रहनौ भजन में, छाँड़ि मान अपमान ।

बीन लीन पद रसिक मनि, गारे गाते गुमान ॥५१४॥

भजन वस्तु के ढार में, निधरक पाऊं जाहि ।

चरन बन्दि जूठन भखौं, गुरु सम मानौं ताहि ॥५१५॥

औहठी हठीले भजन सौं, बने न पाखण्ड केर ।

सुद्ध सचौटी सुधरि है, मन वच क्रम के मेर ॥५१६॥

मन वच क्रम गहि धर्म दृढ़, वानी भजन निधान ।

श्रीहरिवंश लड़ावनैं, वस्तु विविध सनमान ॥५१७॥

वानी श्रीहरिवंश की, जार्माहि वस्तु सन्तोष ।

ठौर ठौर ते कल कढ़त, विचित्र विलासी चोषरे ॥५१८॥

चोष तोष वानी सबै, तामे भेद अपार ।

गिरा रसिक मनि लाल की, वस्तु अनूप पसार ॥५१९॥

सुहृद दसा मन ढरि परे, विमल भजन के मेल ।

ठौर ठौर चरचे फिरे, लग्यौ वस्तु के खेल ॥५२०॥

खेल लग्यौ फिरे वस्तु के, त्यौं चित चातिक ताक ।

अमल भजन नहि सोभियै, हंस समाजी काक ॥५२१॥

चित विये वस्तुहि फिरे, विमल भजन मन मेल ।

गुरु प्रतोति चले रोति सौं, प्रेम समीती खेल ॥५२२॥

खेल मेल वर भजन सौं, हिये वस्तु को सेतै ।

अपगुन अपगति छाँड़ि है, तब मन तू बानेतै ॥५२३॥

मन बानैती पकरि के, अब लटिहै तो लाज ।
 पति॑ जैहै गति हानि है, आगं बिगरे काज ॥५२४॥

बानैती चाबुक परै, सिर पर रसिक नरेश ।
 समरथ बल साँचौ चलै, खोबै ऊट भेस ॥५२५॥

सिर पर रसिक नरेस है, सु क्यों डरै वहलाय ।
 चृत्ति तजै मन वस्तु में, औगुन भगं कहलाय ॥५२६॥

औगुन ताहि न परसि है, श्रीव्याससुवन पद हेत ।
 जहाँ तहाँ विमल्यौ फिरै, भजनी वस्तु समेत ॥५२७॥

भजनी के बल रसिक भनि, अभय चरन बर ओट ।
 अभिअन्तर भरि वस्तु मन, कहाँ सपरसे खोट ॥५२८॥

खोट चोट ताही लगै, जो बल वित अंग हीन ।
 सरवंगी समरथ सरन, श्रीरसिक नृपति परबीन ॥५२९॥

श्रीरसिक नृपति परबीन जू, सरनाई साधारू ।
 साँचौ हूँ सन्मुख परै, सदा निवाहै भारू ॥५३०॥

जाहि सबै अभार है, सरनाए की लाज ।
 समरथ सुहृद उदार प्रभु, भक्ति रसिक सिरताज ॥५३१॥

सरनागति की भीर है, पीर परीयै जाहि ।
 बच्छलै रसिक नरेस जू, करना करहि निवाह ॥५३२॥

श्रीरसिक नरेस सुजान प्रभु, नुकतारै जानन हार ।
 बाजी तासौं ना बनै, ऊट भेषॄ विकार ॥५३३॥

सुहृद भजन तकि सरन गहि, बनै न और अरोग ।
 प्रभु है चोखौ चौकसी, कड़तै बार की मोंग ॥५३४॥

मोंग बारको जहाँ कड़त, तामहि कहा समाइ ।
 कलपो॒५ कलई ना चलै, साँचौ सुहृद खटाइ ॥५३५॥

१- लाज, २- वत्सल, कृपा करने वाले, ३- तत्त्व, सार, ४- बनावट, ५- बाल
 की मोंगी निकालते हैं, ६- काल्पत, झूठी।  शान्तर—पेद

चलि दिखराई रसिक मनि, सुहृद भजन की बाट ।
 विरलेई गहि निवटि हैं, घर्मैं फिरत घ्रम ठाट ॥५३६॥
 कठिन बाट है रसिक मनि, चौकस चल मन प्रान ।
 सुहृद भजन बिनु बूँड़ि है, माँड़ि मंडिनी आन ॥५३७॥
 माँड़ि मंडिनी मुहु मिला, सुहृद बिना प्रभु दूरि ।
 भए बीच के बायदे, मरि है विलपि विसूर ॥५३८॥
 चपि हीं दविहों कहुँ नहीं, बिना भाइ अनुराग ।
 ताही सौं मिलि विरभि हीं, जहाँ हिये की लाग ॥५३९॥
 जहाँ हिये की लगन है, तहाई मन ठहराइ ।
 अनत बटाऊ सुहृद बिन, चलै बातनि बहराइ ॥५४०॥
 बिना भजन की सुहृदता, कासौं कहाँ सतभाड ।
 घरमी मरमी मिलन बिन, कहा उपजै चित चाउ ॥५४१॥
 हिये हरष चित चाव है, भजन भाव सुख साज ।
 पूरन भागनि पाइये, घरमी सुहृद समाज ॥५४२॥
 भूरि भाग श्रीगुरु कृपा, सुहृद सुजन सतसंग ।
 भजन हिये छायो फिरे, बस्तु मिलै मनै रंग ॥५४३॥
 सुहृद पदारथ सुजन बिन, हित करि पकरत संत ।
 भजन भेद सत भाइ बिन, सुख रहो उरे अनन्त ॥५४४॥
 प्रेम भजन सत भाइ बिन, सुजन न कहै समांहि ।
 सुहृद समागम मानसर, भजनी झंस रमांहि ॥५४५॥
 सुहृद भजन सुख सुकृतता, विमल प्रेम रस रीति ।
 प्रगट आचरी व्यास सुबैं, समझै सुजन समीति ॥५४६॥
 सुहृद भजन सत भाइ सुख, श्रीहरिवंश सुरीति ।
 सुहृद सनेहो समझि हैं, सुजन भजन मन जीति ॥५४७॥

तेजावती

सुहृद भजन श्रीरसिकमनि, सुजननि काज पसार ।
 चोखे भजनी समझि हैं, जा हियैं बस्तु बर ढार ॥५४८॥

मरमन पावैं बीच के, श्रीरसिक नृपति जू की बानि ।
 भजनी सुहृदी समझि के, ढरकि मिलैं पहिचानि ॥५४९॥

उवठ्यौ रुखौ ठोठरी, कबहुैं न आवै ढार ।
 मधुर बस्तु परसै नहीं, उलटौ जाइ निवार ॥५५०॥

सुहृदी सुजन सुसमझिने१, ढरैं भजन निज ढार ।
 बस्तु कृपा करि रसिकमनि, प्रगट करी संसार ॥५५१॥

सौहृदता छाई फिरै, कोमलताई नैन ।
 बैन रसिकमनि जस कढैं, सांति माइ उर ऐन ॥५५२॥

सुहृदी सुजन सुसमझिने, सरन तकै हरिवंश ।
 भजन मानसर चतुरमनि, रमैं रसिक जन हंस ॥५५३॥

सोई सुकृती सुजन है, सुहृदी समझनहार ।
 हिये उजारे पहुँचिहै, श्रीरसिक नृपति जू की ढार ॥५५४॥

सबही कौं हित वित सच्चौ, श्रीरसिक नरेस उदार ।
 अमल भजन रस प्रगट करि, पहुँचे समझनहार ॥५५५॥

मुहुमिलि रंजन मंडनी, सुहृदी भजन अतीत ।
 गाँसनि२ कसरनि औगती३, कागा होइ न मीत ॥५५६॥

खाये धोये मन दिये, कागऊ बरु पतियाइ ।
 अपथ अपसदी४ भजन सुनि, खरे५ निवारहि६ जाइ ॥५५७॥

श्रीव्याससुवन पद सुखद सौं, लगे हिलग कौ हेत ।
 निबटि भजन तब हिय परै, सब गुन बस्तु समेत ॥५५८॥

जहाँ न औचक७ भजन की, अनखाँवनो८ सयान ।
 मुहुलगि ओछो योथरी, बिना नैह सनमान ॥५५९॥

१- अच्छी समझ वाले, २- रहस्य, ३- अवगति, ४- पुर्णति, ५- अधम, ६- खड़े खड़े,
 ७- अकस्मात्, ८- विज्ञाने वाला ।
 अथवा पूर्णरूपेण, ©C.Vasishtha Vasishta Tripathi Collection.

सनमानी सुहृदी सुजन, हिये भजन सतभाव ।
 धर्मी मेली मंगली, मिलत वस्तु मन चाव ॥५६०॥
 सोई सनमान सहाउ सुख, मनमेली सौं भेट ।
 विमल सुहृद मन वस्तु में, विमलं भजन समेट ॥५६१॥
 भजन विचारे चौकसी, चोखौ सुहृद सयान ।
 श्रीव्याससुवन रस रीति रति, पहुँचे सुजन सुजान ॥५६२॥
 रति रस रीति समीति में, विमल गैल वई काढ़ि ।
 श्रीरसिक सिरोमनि सुहृदसुख, सुजन मुदित मनबाढ़ि ॥५६३॥
 सुहृदी चोखे चौकसी, सोई लगि हैं बाट ।
 तन मन लच्छन गारि गहि, खरी कठिन है डाट ॥५६४॥
 चाल रसिकमनि लाल की, चौकस चोखे नेह ।
 खरी कठिन है लगन मग, भजन पहुँचे ग्रेहै ॥५६५॥
 सुकृती सुहृदी सुजन जन, वस्तु विमल गुन गाइ ।
 श्रीव्याससुवन बल भजन के, पहुँचेंगे घर जाइ ॥५६६॥
 प्रेम भजन की चटपटी, जाके हिये रमात ।
 खरी कठिन है लगन की, कल न परत दिन रात ॥५६७॥
 प्रेम भजन की चटपटी, ताहि सुहाइ न आन ।
 कल काहे की रेन दिन, रति जब पकर्यौ प्रान ॥५६८॥
 प्रान ललक रति जब गह्यौ, तब कछु धीरज नाहि ।
 भजन चौप हिय वस्तु रति, सोचत जामर विहाहि ॥५६९॥
 खरी कठिन है मोहि यह, बनि है कौन बनाउ ।
 हों हूँ जोव अमंगली, मंगल सौं पर्यौ दाउ ॥५७०॥
 मंगल निधि सौं काम मम, निपट अमंगली जौह ।
 अबकं ऐसीयै बनी, डोठि न आवै और ॥५७१॥

१- गुह, घर, २- प्रहर ।

दोहावली

निषट अमंगली जीव हों, प्रभु में मंगल निधान ।
 पदा पटोरें^१ ग्रंथ ज्यों, बन्यों ऐसोई बान ॥५७२॥
 ऐसिय बान बनाऊ अब, मंगल निधि सौं पेच ।
 जो अमंगली जीव हों, नेठमिर परि है नेचै^२ ॥५७३॥
 समरथ मेरी खसम है, मंगल अद्विल निधान ।
 रसिक सिरोमनि सरन सुख, पाले परम सुजान ॥५४४॥
 श्रीरसिक नृपति हरिवंशजू, समरथ लैंहि निबाह ।
 सरनागतिन कृपाल प्रभु, हों बल बेपरवाह ॥५७५॥
 भजन मनोहर मानसर, रूप सुधा रस बारि ।
 गुन मुक्ता मन हंस चुग, लच्छन वस्तु विचारि ॥५७६॥
 लच्छन वस्तु विवेक करि, भजन मानसर सेड ।
 मन हंसा मुक्ता गुननि चुगि, हिये परत है मेड ॥५७७॥
 रूप अमीजल मानसर, भजन में मनव मराल^३ ।
 गुन उज्ज्वल मुक्ता चुने, प्रमुदित फिरें रसाल ॥५७८॥
 निर्मल गुन मुक्ता चुरंग, भजन मानसर धीर ।
 मन मराल आनन्द मय, अवगाहै छवि नोर ॥५७९॥
 विमल भजन वर मानसर, मन मराल बड़भाग ।
 निर्मल गुन मुक्ता चुनें, वस्तु मांझ अनुराग ॥५८०॥
 भजन मानसर छवि अमी, गुन मुक्ता ता मांझ ।
 मन मराल चुरंग वस्तु रति, प्रमुदित दिन अरु सांझ ॥५८१॥
 भजन मानसर एक यह, बानी श्रीहरिवंश ।
 गुन छवि मुक्ता वस्तु भरि, चुनहि सुजन मन हंस ॥५८२॥
 मन मराल सुजनई चुनें, मुक्ताहल गुन रूप ।
 भजन मानसर रसिक मनि, बानी अमल अनूप ॥५८३॥

१- बड़िया वस्त्र, २- निष्पत्य ही, ३- नीची, ४- हंस ।

बानी श्रीहरिवंश की, भजन मानसर सार ।
 गुन मुक्ता रुचि रूप पगि, सुजन मराल अधार ॥५८४॥
 सुधा भजन रति मानसर, प्यारी विमल विहार ।
 सुजन हंस सेइ सुख लहै, श्रीहरिवंश अधार ॥५८५॥
 बानी निर्मल अमृत जल, रूप सरोवर मान ।
 उज्ज्वल जल सचि रसिक मनि, सुजन जनन के प्रान ॥५८६॥
 बानी निर्मल मानसर, छवि जल अमृत सुवास ।
 गुन मुक्ता मन हंस चुनि, बड़ी रहत रति आस ॥५८७॥
 बानी श्रीहरिवंश की, सुजन हंस वर वृत्ति ।
 समझे 'सुहृदिन काज कल, श्रीव्याससुवन जू की कृति ॥५८८॥
 मुख कहैं हंस न होइगौ, अन्तर लच्छन काग ।
 भजन सुहृदता आय है, श्रीगुरु प्रसाद बड़भाग ॥५८९॥
 भजन सुहृद हिय सचि सदा, निर्मल जस मन भोइ ।
 मत्सर मंडन उरसिर तें, कहैं हंस क्यों होइ ॥५९०॥
 भजन मंगली मानसर, अमृतादिक रस रूप ।
 मन मराल गुन मन विमल, मुक्ता चुगे अनूप ॥५९१॥
 भजन हंस हूँचौ कठिन, बहै न कौन हूँ वाइ ।
 शुद्ध सचोटी जब ढरे, श्रीहरिवंश सहाय ॥५९२॥
 पाखण्ड मंडन जिन करौ, कहत हौं प्रगट पुकारि ।
 काज अकाजी होहुगे, अपजसु खाये मार ॥५९३॥
 शुद्ध भजन की चाल चलि, ऐड़ी बेंड़ी डारिरे ।
 और स्वाद लगें औगती, जनम जायगौ हारि ॥५९४॥
 जन्म जु बाज्यौ हारि है, असव सवादै आन ।
 शुद्ध भजन बिन बूढ़ि है, सौहृद बिना सयान ॥५९५॥

सुहृद भजन हित प्रभु कहौ, रसिक नृपति करि मोह ।
 अबखद अपवथ औगती, ह्रै है साँई दोहै ॥५८६॥
 भजन रतन है सुहृद में, भजनई लेह संभार ।
 सुद्ध सचौटी अनुसरे, पग धरे प्रेम निहार ॥५८७॥
 प्रेम निहारे पग धरे, सुद्ध सचौटी गेल ।
 सुहृद भजन सुजनहि लहै, बेपरवाही छेल ॥५८८॥
 बेपरवाही छेल ते, जिन बल रसिक नरेस ।
 सुकृती भजनहि पहुँचि हैं, सुहृदी प्रेम प्रवेस ॥५८९॥
 प्रेम ही परम प्रवेश जहाँ, निपट कठिन सी ठौर ।
 प्रगटी सुजननि काज हित, लाल रसिक सिरमौर ॥६००॥
 रसिक तिरोमनि लाल जू, गेल दई निबटाइ ।
 पग धरिवौ सबकौ कठिन, सुहृदी सुजन खटाइ ॥६०१॥
 सुहृदी सुकृती सुजन जन, तेई मग पाँई धराई ।
 मारग रसिक नरेस कौ, देखत सब डगुलाहि ॥६०२॥
 मारग ओहरिवंश कौ, दुर्घट छियौ न जाइ ।
 श्रीव्याससुवन पग उर धरें, सुहृदी सुजन रमाइ ॥६०३॥
 मारग बाँकौ रसिक मनि, सुजन सुहृद हित वृत्ति ।
 प्रगट करि प्रिय प्रान पति, प्रेम पोषनी कृति ॥६०४॥
 दीन भजन आधीन है, फिरत तके कहु ताक ।
 वस्तु बचायें डरि चले, औगतियनि२ के धाक ॥६०५॥
 दीन भजन के जतन सौं, वस्तु बचायें जाहि ।
 कपट कुचालनि कौ ढका, लगिहै हियें डराहि ॥६०६॥
 अनख असंगहि नास है, भजनी शुद्ध समीति ।
 वस्तु बचावै या डरनि, कूर कुटील अनीति ॥६०७॥

सौरभ सार समूह अब, पोष संतोष सेभार।
 मन मादक मकरंद मधु, लच्छन दशा उदार ॥६३२॥
 शुद्ध भजन अविश्वद्ध गति, अमल अमित अगहायै ।
 रीति रसिकमनि लाल को, सुनेहौं न समझी जाय ॥६३३॥
 अपहुँच सुनिहौं न समझई, शुद्ध सुभग सुख चाल ।
 श्रीब्याससुवन हिय डीठि दै, चलै भजन मन पाल ॥६३४॥
 हियो डीठि दे रसिकमनि, चरन कमल कल ताक ।
 भजन वस्तु उर पूरि है, संघ्रम भागे धाकर ॥६३५॥
 संघ्रम दारिद्र आपदा, विस्मै विषम विहार्हिः ।
 श्रीब्याससुवन रस रीति के, धाक विघ्न बहि जांहि ॥६३६॥
 कीरति रीति समोति सुख, कीने प्रगट उदार ।
 भजननि हित हरिवंशजू, विमल विहार पसार ॥६३७॥
 विमल विहार सुसार सुख, प्रगट बताए धीर ।
 श्रीरसिक नरेस उदार प्रभु, भजनी सुजननि पीर ॥६३८॥
 भजनी सुजननि पीर करि, दीनी रीति बताइ ।
 करणासिधु उदार प्रभु, रसिक सिरोमनि राइ ॥६३९॥
 श्रीरसिक सिरोमनि राइ जू, करणासिधु सुदानि ।
 गुन गम्भीर उदार प्रभु, बेपरवाही वानि ॥६४०॥
 अलक लड़ो आनेंद अवधि, बेपरवाह सुभाउ ।
 भजन उदार सुसार सुख, वस्तु विचित्र बनाउ ॥६४१॥
 चित्र विवित्र बनाव वर, भजन वस्तु परकास ।
 प्रगटी रसिक नरेस जू, सांद्रानन्दै सुवास ॥६४२॥
 कौन साज की चाल है, रास^१ विलास सुठानै ।
 परिरंभन पूरन सुखन, चुम्बन मुख मधु पान ॥६४३॥

१- जो पकड़ में न आये, २- दवदवा, प्रभाव, ३- छोड़ जाते हैं, ४- बहन-आनन्द, ५- सुन्दर रचना । [★]पाठान्तर—राज

कौतुक कुशली केलि कल, कोलाहली विनोद ।
 प्रगट करी करतूत रति, मति मातो मोद ॥६४४॥
 प्रगट करी हरिवंशज्, हिय बल निर्मल रीति ।
 गूढ उजागर उदित करि, सेवे सुजन समीति ॥६४५॥
 सुहृद सुजन सेवे सुखद, रसद विसद सद रंग ।
 रीति रसिक मनि लाल की, मंगल मोद उछंग ॥६४६॥
 सुजननि हित आनेद अवधि, रीति विमल दई खोलि ।
 भजनी सुख विलसत फिरै, कोलाहलनि कलोल ॥६४७॥
 इक तक ताके धक दये, धीरज धरे छहराइ ।
 इत उत चितये चौध चित, अनत गिरे डगुलाइर ॥६४८॥
 चाल सु श्रीहरिवंश की, गाढ़ी गहनि निहारि ।
 इत उत चितये डगि परे, जीवन जनम बिगारि ॥६४९॥
 इत उत चितये न बनै, बस्तु परस चित डोर ।
 श्रीब्याससुवन पद सरन गहि, आठऊरे गाँठे छोर ॥६५०॥
 मन क्रम बचन विसुद्ध मति, इह मगधरि है पाऊ ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल बल, पूरी परिहै दाऊ ॥६५१॥
 श्रीरसिक सिरोमनि पद सरन, पूरी परिहै ताहि ।
 दुर्लभ दुर्गम चाल में, समरथ लैहि निवाहि ॥६५२॥
 बानी द्यंगै बनाऊ में, मन बाढ़े पहिचानि ।
 श्रीरसिक सिरोमनि रीति रति, सुजन भजन यह बानि ॥६५३॥
 सुहृदी भजनी सुजन जन, तिनके बल यह बानि ।
 शुद्ध सनेही सोभिये, नहों और की कानि ॥६५४॥
 शुद्ध सनेही सुहृद जन, सुजननि काज प्रकास ।
 तेई ठौराहि पहुँचि हैं, भजन रम्यो मन जास ॥६५५॥

१-गोद, २-डगमगाकर, ३-अष्ट पाणः—कुलं शीलं च मानं च जुगुप्सा चेति
 पञ्चमी । षूणां शंकां भयं लज्जां अष्टपाणैरिति सूताः ॥ ४-गूढार्थं, व्यंजनार्थं ।

भजन रसिक मनि लाल कौ, विमल रीति रति भाड ।
 सुजननि कारन प्रगट प्रथु, करि दयौ खसम बनाउ ॥६५६॥
 अपने सुहृदी सुजन जन, तिनकौ बान्यौ बान ।
 गूढ़ प्रगट करि रसिकमनि, भजनी भजन सनमान ॥६५७॥
 भजननि कौ सनमान सुख, पोष सन्तोष सुनेह ।
 श्रीब्याससुवन पद ढीठि दे, धन्य सुजन धरि देह ॥६५८॥
 राज समाजी काज गुन, बानी लाड लड़ाइ ।
 प्रगटे श्रीहरिबंश ज्ञ, सुहृद सुकृत सतभाइ ॥६५९॥
 सुद सुहृद सतभाउ में, भजन तत्तरति वस्तु ।
 श्रीब्याससुवन पाछै लगै, सबनिधि आवै हस्त ॥६६०॥
 हाथ परे निज भजननिधि, श्रीब्याससुवन गहि पाइ ।
 शुद्ध सचोटी सुहृदता, बाधा और बनाइ ॥६६१॥
 शुद्ध सुहृदता भजन बिनु, श्रीब्याससुवन तें दूरि ।
 बाधा और बनाउ घम, जीवन जन्में धूरि ॥६६२॥
 श्रीरसिक सिरोमनि सरन बिनु, घम बाधा न नसाहिं ।
 भजन भाव नहिं सुहृदता, कहाँ हूँ हियो सिराहि ॥६६३॥
 श्रीरसिक सिरोमनि चालसुख, सुहृद सुजन सिर भार ।
 सुकृतिनि सब प्रतिपाल है, बहिहै? खसम अभार ॥६६४॥
 निरवधि आनन्द भार सिर, बहिहै सुहृदी सन्त ।
 श्रीब्याससुवन पद पछि लगा, तेई रस में मन्तर ॥६६५॥
 मंगल रस प्रमुदित फिरै, भजनी भजन सिंगार ।
 विमल वस्तु गुहि रसिकमनि, बानी गुन हिय हार ॥६६६॥
 बानी गुन निरमोल नग, नौखेरै नौहरे४ रूप ।
 श्रीब्याससुवन गुहि द्वचिर रस, सुजनहुँ धरिहि अनूप ॥६६७॥

१- वहन करेगे, २- मस्त, ३- अनीखे, ४- अद्भुत, अलभ्य ।

सुहृदी सुजनाहि पहिरि है, श्रीरसिक नृपति हियहार ।

बानी रंग गुहि विमल नग, गुन गन रूप सिंगार ॥६६८॥

नव नव छवि अबै विमल नग, गुन बानी मृदु पोहि ।

रूप भेद रचि रसिक मनि, सुजन धरे मनि मोहि ॥६६९॥

लच्छन रूप सुभेद गुन, अब नग गुहे बनाइ ।

बानी गुन श्रीव्यास सुत, रचना सुख समुदाइ ॥६७०॥

हीरा अबगुन रूप रंग, गुहे विचारि चित चाइ ।

बानी गुन रचि रसिक मनि, सुजन मुदित हिय नाइ ॥६७१॥

सोई सुजन सुसाधु निज, बर बानी में प्रान ।

तेई निधरक सोभिये, भजन माँझ सनमान ॥६७२॥

बानी श्रीहरिवंश की, निर्मल भजन अगाध ।

जाही के हिय में रमें, सोई सुजन सुसाध ॥६७३॥

सुहृद संतोषी सुजन जन, समरथ ब्राजतर मान ।

श्रीरसिक नृपति हरिवंश की, बानी रचि रमि प्रान ॥६७४॥

तन मन प्राननि में रमें, बानी रसिक बर मनि राज ।

सुकृती सुधर सुसुजन जन, करे देह धरि काज ॥६७५॥

भजनाहि पकरे सुभग मन, सुफल काज धरि देह ।

श्रीगुरु वचन सँभार उर, वस्तु न परिहै छेह ॥६७६॥

वस्तु सँभारे वाइ दै, गुन लच्छन गहि भेद ।

भजन निरन्तर गुरु कृपा, चितहू न परसे खेद ॥६७७॥

श्रीगुरु प्रसाद करना करें, तिन धरि जान्यो देह ।

भजन स्वाद विमल्यौ फिरे, भाज्यो छम सन्देह ॥६७८॥

श्रीगुरु प्रसाद बड़भाग तैं, भजन स्वाद रमें होय ।

मन विमुक्त विमल्यौ फिरे, वस्तु लगी रहै जीय ॥६७९॥

जिय में वस्तु रमी रहै, भजन सबाद मिठास ।
 श्रीव्याससुवन पद सरन बल, सुखनिधि में सावकास ॥६८०॥
 श्रीव्याससुवन पद सरन सजि, निधरक तं सुख लेहि ।
 भजन सबादिल मन परे, संतः वस्तु हृदै देहि ॥६८१॥
 भजन सबादिल मन भयो, वस्तु सचै हिय हेत ।
 बानी प्रगट हरिवंश ज्ञ, गुन गन कौतक समेत ॥६८२॥
 गुन लच्छन अह भेद सद, ये लागे दशाहि अनेक ।
 हिय बल समरथ प्रगट करि, श्रीरसिक सिरोमनि एक ॥६८३॥
 हिय बल हिय सुख प्रगट करि, श्रीरसिक नृपति हरिवंश ।
 गिरा मोद मृदु मानसर, रमिहै भजनी हंश ॥६८४॥
 गिरा गूढ श्रीरसिक मनि, प्रगटी समरथ चाइ ।
 स्वयं भजन सरि मानसर, भजनीय हंस रमाइ ॥६८५॥
 भजन मानसर छवि सुधा, वस्तु भेद भरवाउ ।
 गिरा गुपति प्रभु प्रगट करि, सुजन हंस चितचाउ ॥६८६॥
 भजनी सुहडी सुजन जन, सोई हंस रमांहि ।
 गिरा गम्भीर मानसर, और न छिक ठहरांहि ॥६८७॥
 गिरा गम्भीर सुधीर वर, भजन सरोवर मान ।
 भजनी सुजन मराल हित, प्रगटी खसम सुजान ॥६८८॥
 गिरा भजन गुन मानसर, रूप अमी में नीर ।
 सुजन मरालनि मन रमन, प्रगटी रसिक नृप धीर ॥६८९॥
 श्रीहरिवंश कृपाल जू, गैल चलाई कौन ।
 भजन भेद गुन अकह सुख, वस्तु विनोद सलौन ॥६९०॥
 वस्तु विनोद सलौन गुन, गर्वित भेद प्रकास ।
 मारग भजन गम्भीर गति, चलै सुजन निज दास ॥६९१॥

१- विना मूल्य, सेवत (सेवन करने पर) ।

सुहृद सुजन इहि मग लगें, समरथ दियौ सुधारि ।
 सुकृतो भजनी काज कल, विमल वस्तु मन ढारि ॥६८२॥

सुकृती भजनी काज कल, मारग दियौ चलाइ ।
 आनन्द अतुलित अमल गुन, सुख समूह समुदाइ ॥६८३॥

सुख समूह समुदाइ में, पेंडौ प्रेम प्रभाइ ।
 जीवन वृत्ति सुसुजन जन, सर्वसु दाय उपाइ ॥६८४॥

प्रगटित श्रीहरिवंश कौ, पेंडौ परमानन्द ।
 भजनी सुहृद सन्तोष ही, बिमले चलैं सुछन्द ॥६८५॥

भजनी सुजनई खलि सकैं, सुहृद बिना प्रभु दूरि ।
 कपटी कुटिल न पावहौं, भरत बकुटियनि॑ धूरि ॥६८६॥

खरौ दूरि है कपट तैं, श्रीरसिक नृपति मग एहर॒ ।
 रंजन मंजन चातुरी, हाथ हू लगै न खेहरृ ॥६८७॥

तिनकौं प्रापति कहौं नहीं, पाखण्ड मंडन देह ।
 मारग रसिक नरेस की, क्यों करि परसै खेह ॥६८८॥

श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, पाखण्ड तजि गहि पाय ।
 बल पूरन समरथ हिये, तौ मग लाग्यौ जाय ॥६८९॥

पाखण्ड छाँड़े सुहृदता, जब ही आवै हीय ।
 मारग रसिक नरेस के, तब कहु सुधि परै जीय ॥७००॥

तबही सुधि तन मन परै, सुहृद भजन हिय देह ।
 श्रीरसिक नृपति मारग गहै, निरवधि आनन्द लेइ ॥७०१॥

सुजन सुहृद सुकृती मिले, तबहि भजन रस रंग ।
 मन रुचि राचैं वस्तु सौं, साज काज लौं ढंग ॥७०२॥

भजनी ढंग वर भजन के, चरन कमल छब छाँह ।
 जीव अकाजै काज लगि, जगत परे बिललांहि४ ॥७०३॥

१- हस्त सम्पुट, अंचुलि, २- यह, ३- राख, ४- बिललिताते हैं ।

यहै जगत् निज काज है, सुहृद् सुजन् सतसंग ।
 भजन विमल में मन परै, नव आनन्द अभंग ॥७०४॥
 सुहृदी भजनी सुजन् जन, भागनि होइ मिलाप ।
 विमल वस्तु में मन परै, परसै न जग परतापै ॥७०५॥
 सुहृद् सजाती सुजन् जन, मिलहि होहि बड़भाग ।
 सरस परस मन मिलनियाँ, हिये वस्तु अनुराग ॥७०६॥
 भजन वस्तु में मन परै, मिलत ही सुहृदी साधु ।
 भजनी भागनि पाइये, नाना सुखनि अगाध ॥७०७॥
 सुजन् सुकृत सुहृदी चलें, श्रीव्याससुवन् जू की गेल ।
 हिये सुहृद् विन कठिन है, पाखंड में खलरे मैल ॥७०८॥
 खंद मैल हिय में सदा, सैल भैल मन मैल ।
 सुहृद् भजन बिन रसिकमनि, निपट कठिन है गेल ॥७०९॥
 खरी कठिन है गेल यह, शुद्ध सचोटी ढार ।
 भजन अगह् कथों कं गहै, पाखण्ड प्रबल विकार ॥७१०॥
 सुहृद् गेल श्रीरसिक नृप, प्रगट करी करि प्रीति ।
 सीतल सुखद् सुधा मई, भजनी भजन समीति ॥७११॥
 सुहृद् गेल श्रीरसिकमनि, भजनी सुहृद् चलें चाइ ।
 हिये भजन बिन चातुरी, सबहो कों अगहाइ३ ॥७१२॥
 सुहृदी सुहृद् मत्यो फिरै, गहैं भजन निरमोल ।
 हिय में श्रीहरिवंश जू, पूरै निकसें बोल ॥७१३॥
 पहुँचे पूरे बोल मुख, हिये भजन भरवाउ ।
 जिय में श्रीहरिवंश जू, चलन वस्तु मन दाउ ॥७१४॥
 मन के सुचलन वस्तु में, भजन चित् छ्यो छाँह ।
 पूरे पहुँचे बोल मुख, श्रीव्याससुवन् हिय माँह ॥७१५॥

१- प्रताप, २- कुटिल, ३- अग्राह्य, न पकड़ में आने वाला ।

वस्तु विमल अति नोहरी॑, वानो विविध प्रकास ।
 अंग अंग मृदु माधुरी, सौरभ रूप हुलास ॥७१६॥
 सौरभ रूप हुलास सद, अब अब प्रेम प्रभाउ ।
 वानो विमल विनोद निधि, नबौ नबौ चित चाउ ॥७१७॥
 हिय में श्रीहरिवंश ज्ञ, मन वस्तु सौं समाज ।
 भजन चित छायौ फिरे, यह भजनिनि कौ साज ॥७१८॥
 भजनिनि कौ यह साज है, श्रीहित हिय गम्भीर ।
 बगरि सुहृद मन वस्तु में, घरि निज सुतन सरीर ॥७१९॥
 सोई सुजन सुधन्य वपु, श्रीव्यास सुवन घट माँझ ।
 वस्तु स्वाद भोगी भजन, सफल सर्व दिन सांझ ॥७२०॥
 सुजनई भोगी भजन के, श्रीव्यास सुवन घट राखि ।
 अमित स्वाद चसकौ पर्यौ, मुदित वस्तु सुख चाखि ॥७२१॥
 ताकौ भजन ते भजन के, श्रीरसिक नृपति घट माँहि ।
 विमल वस्तु में विमल मन, समरथ पकरी बाँह ॥७२२॥
 समरथ करणा करि गहै, सुहृद सुद्धता देख ।
 श्रीव्यास सुवन पद सरन सजि, भजनी भयौ विशेष ॥७२३॥
 सुजन भजन विमले फिरे, उर धरि रसिक नरेस ।
 निधरक बेपरवाह बल, समरथ कर गहे केश ॥७२४॥
 समरथ कर चुटिया पकरि, बेपरवाह निसंक ।
 विमल भजन निधि माँह है, मिट्यौ आपदा अंक ॥७२५॥
 तेई श्रीहरिवंश के, सुहृद सुद मन होय ।
 कबहै भजन न आय है, कुटिल कपट सठ जीय ॥७२६॥
 कबहूँ होहि न भजन के, हीम कुटिल पाखण्ड ।
 श्रीव्यास सुवन पद सरन बिनु, छनि है बहु बहण्ड ॥७२७॥

श्रीव्याससुबन मृदु पद सरन, गह्यौ न सुहृद सुधारि ।
 भूल्यौ भ्रमिहै वाइदें, कपट लैं गयौ मारि ॥७२८॥
 कपट अचानक लैं गयौ, वाइ वाइदै बिगोइै ।
 श्रीव्याससुबन प्रभु भजन बिनु, चल्यौ पुंजीसी खोइ ॥७२९॥
 बेपरवाही भजन सुख, निधरक फिरत निसंक ।
 भजन स्वाद सद बिमल मन, परसें न कलिमल पंक ॥७३०॥
 सुहृदी भजनी परसि पग, कलिमल पंक पवित्र ।
 श्रीव्याससुबन पद पछिलगारे, सुजनई हूजौरे मित्र ॥७३१॥
 सुहृद सुजन सौं मित्रता, जीवन जनम फल सोइ ।
 सत्त भाइ भजनी मिलन, पूरे भागनि होइ ॥७३२॥
 पाखण्ड प्रबल हिये जटेऽ, कहा समझै मन मूढ़ ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, गति गाढ़ी गुन गूढ़ ॥७३३॥
 गुन गन गुपति गंभीर गति, अलक लड़ी रति लाड़ ।
 प्रगटी परमानन्द प्रभु, सुहृदी सुजननि चाड़ ॥७३४॥
 गुन गन गर्व गुमान गति, अलबेली अनुराग ।
 श्रीहरिवंश सुरीति रस, सुजन लहैं बड़भाग ॥७३५॥
 जाके मन में रीति रस, सो मन बेपरवाह ।
 और न जिय में आवई, बानी हित चित चाह ॥७३६॥
 बानी श्रीहरिवंश की, कौन वस्तु को प्रकास ।
 सर्वोपरि रस काढ़ि कै, सुहृद सुजन मन बास ॥७३७॥
 जीवन भजनी सुहृद जन, श्रीव्याससुबन गति रम्य ।
 सुजन वृत्ति संतोष हिय औरनि महा अगम्य ॥७३८॥
 गाढ़ी गति गुन गूढ़ है, सुहृदी हिय करि जाइ ।
 कोलाहल कौतुक कुशल, भजन वस्तु समुदाइ ॥७३९॥

१- नष्ट करके, २- पोछे लगने वाला, ३- होना, ४- जड़े हुये हैं ।

दोहावली

मन आवं नहिं हष्टि पथ, गति गुन गूढ़ गम्भीर ।
 सुहृद भजन तें सुगम है, सनमुख शुद्ध शरीर ॥७४०॥

सुहृद भजन श्रीब्याससुत, सोई साधु शरीर ।
 मंगल वस्तु मन मेल सद, सुख विलसत है धीर ॥७४१॥

संपति सद सुख विलसि मन, भजनो सुहृद सभार ।
 श्रीब्याससुबन जू रसिकमनि, अपनौ कियो उदार ॥७४२॥

सुहृद भजन जब सुद्ध हिय, तब गुन गुपत प्रवेस ।
 ताहो अपनौ करि थपै, नागर रसिक नरेस ॥७४३॥

रसिक नरेस सुजान प्रभु, नुकताईँ लै हैं मानि ।
 सुहृद सच्चोटी अनुसरे, ताहो सौं पहिचानि ॥७४४॥

ताहो सौं पहिचानि वड़, कानि मानि करि प्रीति ।
 सुहृद भजन के सुबस प्रभु, यहे रसिकमनि रीति ॥७४५॥

श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, यहे प्रकृति रस रीति ।
 सुहृद भजन सन्मुख भयो, तासौं समझि समीति ॥७४६॥

समझि ताक ताकें तहाँ, भजनी सुहृद सतभाव ।
 श्रीरसिक नृपति हरिवंश जू, छिन छिन सुहृद सहाड ॥७४७॥

लाइक सुजन सहाइ कों, और न वियोँ उदार ।
 श्रीरसिक नृपति हरिवंश जू, सुहृद भजन प्रतिपार ॥७४८॥

भजनी सुहृद प्रतिपाल को, प्रगट्यौ समरथ दान ।
 सुजन सन्तोषनि पोष रस, रसिक नृपति प्रभु जान ॥७४९॥

जानि सिरोमनि प्रभु प्रगट, सुहृद सुजन प्रतिपाल ।
 उदित उदार श्रीब्याससुत, अलक लाड़िलौ लाल ॥७५०॥

अलक लाड़िलौ लाल है, बेपरबाह उदार ।
 भजन रतन अति दान दिन, सुहृद भजन आधार ॥७५१॥

१- घोड़े से ही, २- दूसरा ।

सुहृद सुजन आभार है, भरं भजन दिन राति ।
 विमल वस्तु में पारिए मन, कीनी साधु सजाति ॥७५२॥
 सोई सुहृदी साधु है, सुजन सजाती इष्ट ।
 श्रीरसिक नृपति हरिवंश प्रभु, भजन स्वाद रमें निष्ठ ॥७५३॥
 मिष्ट भजन सद स्वादलनिः, स्वादत सुजन सम्हारि ।
 प्रगट विमल गुन रसिकमनि, दयें वस्तु अनुसार ॥७५४॥
 भाँति भाँति के विमल गुन, लच्छन भेद समेत ।
 रूप रमित रति गति गहिल, प्रगटी अब अब हेत ॥७५५॥
 रूप रंग रस सुख सुलसि, सौरभ सद अवहेत ॥७५६॥
 अकह रीति श्रीरसिकमनि, मांडि रही रस खेत ॥७५६॥
 सुहृदी सुजननि हित प्रगट, सौरभ रस गुन गात ।
 विमल रीति श्रीरसिकमनि, सुदृढ़ सजाति समात ॥७५७॥
 सुदृढ़ सजाती सुजन जन, तेई भले समाहि ।
 अमल रीति श्रीरसिक नृप, औरन कौ गमै नांहि ॥७५८॥
 सौहृदता में भजन है, भजन तहाँ सतभाउ ।
 गढ़ी बनाई चातुरी, पाखण्ड बड़ौ अबाउ ॥७५९॥
 प्रेम पराक्रम प्रबल अति, बानी बर सुकुंवार ।
 रूप रंग रस माधुरी, भाँति भाँति के ढार ॥७६०॥
 रूप रंग मधु माधुरी, गरब गरूर गुमान ।
 अलक लड़ी आनन्दमय, बानी प्रेम अमान ॥७६१॥
 अलक लड़तो अनभतो, आनन्द अतुलित रंग ।
 सौरभ सार समूह सुख, गौर साँवरे अंग ॥७६२॥
 अलक लाड़ली गर्व गुन, गहिल गुमान गरूर ।
 श्रीब्याससुवन पद दीठि दे, रमे सुजन सुख सूर ॥७६३॥

१- लगा, २- स्वादों से, ३- निश्चित कारण से, ४- प्रवेश, ५- विरोध, वैर ।

सुहृदी सुकृती सूर सुख, रमे सुजन सतभाइ ।
 प्रसाद श्रीहरिवंश कौ, सोई पै नियराइ ॥७६४॥
 जाके माथे पर चरन, श्रीहरिवंश धराहि ।
 गाढ़े नाते नेह के, तेई नियरे जाहि ॥७६५॥
 ताते नातौ मानि हाँ, श्रीहरिवंश प्रतीति ।
 ताहि निरन्तर राखिहैं, लाल लड़ती रीति ॥७६६॥
 लाल लड़ती सहज हैं, ताही पर करें मोह ।
 इनाहि लाज सन्वन्ध की, वह कंसौ हूँ होह ॥७६७॥
 नातौ श्रीहरिवंश कौ, मानै ललना लाल ।
 श्रीव्याससुबन पद सरन जे, कराहि सदा प्रतिपाल ॥७६८॥
 बानी चित्र विचित्र में, चतुर चितेर रहे देख ।
 जाकौ यह सब खेल है, तासौं प्रीति विसेख ॥७६९॥
 जाकौ यह सब खेलनौ, ताही नीके पेखिरे ।
 श्रीरसिक नृपति तत्वज्ञ प्रभु, चरन हिये अवरेखि४ ॥७७०॥
 गढ़ी बनाई चोपरी, चतुराई नहीं काम ।
 सुद्ध सचोटी सुहृदता, भजनी भजन अराम ॥७७१॥
 सुद्ध सुहृदता माँझ है, भजनी भजन अराम ।
 प्रीति बिना कछु दूसरी, और न आवै काम ॥७७२॥
 सुद्ध सचोटी सुहृदता, भजनी भजन सुभाउ ।
 पाखण्ड फेरन जानई, वस्तु लये सतभाउ ॥७७३॥
 वस्तुई आगं भजन गति, सुहृद सुजन यह बानि ।
 धीर अनत चितवै नहीं, मंगल माँड़ थानि५ ॥७७४॥
 सुजननि कारन धीर प्रभु, संचित कीनौ सार ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल कौ, मंगल भजन पसार ॥७७५॥

1- निकट हो जाता है, 2- चित्रवत, 3- देखो, 4- अंकित करो, 5- स्थान ।

मंगल भजन पसार है, वस्तु रूप गुन रंग ।
 रति विचित्र गति गर्व भरि, अब छवि अमित सुधंग ॥७७६॥
 अब अब सौरभ माषुरी, रूप रंग रस पूरि ।
 वस्तु रसिकमनि लाल की, पहुँचे भागनि भूरि ॥७७७॥
 वस्तु सुभग आनन्दघन, भजनीय सन्मुख होइ ।
 श्रीव्याससुवन पद ढीठि दै, सहज पहुँचि है सोइ ॥७७८॥
 सुद्ध सुहृदता एक तें, नाहर सांप सुध्याहि ।
 खग मृग थिर चर भन रमें, कपटी नहीं पत्याहि ॥७७९॥
 कपटी होंहि न आपने, कीने सुहृद समीति ।
 पाखण्ड भजन भर्यौ रहै, स्वारथ ही की प्रीति ॥७८०॥
 कोटि करौ जो चातुरी, भजन कपट में नांहि ।
 पाखण्डी पाखण्ड चलैं, ज्यौं कागर घर मांहि ॥७८१॥
 कपटी सेवैं कुटिलता, सूझे न सौहृद सुद्ध ।
 न्यारे न्यारे ढंग हैं, पाखण्ड भजन विरुद्ध ॥७८२॥
 पाखण्ड घट मदिरा भर्यौ, कबहूं सुद्ध न होइ ।
 सुहृद भजन संग हड़ करै, पवित्र वासना खोइ ॥७८३॥
 सुहृद भजन सत्संग तें, को नांह होइ पवित्र ।
 पाखण्ड अरि हिय सेतरे सठ, खोवै आतम मिन्न ॥७८४॥
 भजन मिन्न निज आपनौ, क्यों खोवै अज्ञान ।
 कपट कसाई हाथ सठ, बाँधि दियौं पशुं प्रान ॥७८५॥
 बिना भजन पशु तें बुरौ, तामंहि कपट विकार ।
 सुहृद भजन सत्संग नांहि, बूढ़यौ सिर लै भार ॥७८६॥
 सुहृद सुजन भजनी मिलें, पाखण्ड प्रवल नसाहि ।
 सद गदरे यह ही कपट कौ, और उपाय न जाहि ॥७८७॥

१- अच्छा ढंग, २- सेवन करने से, ३- विष (ओपधि, काट) ।

सुहृदी भजनी सुजन जन, जिनके यही सेमार ।
 व्याससुवन पद सरन तकि, धक दियें बारम्बार ॥७८८॥
 श्रीव्याससुवन पद धक दियें, तक ताके हिय चाल ।
 सुहृदी सुजनइ चलहिंगे, भजन विमल मति पाल ॥७८९॥
 सुहृदी सुजननि भजन वित, हित संचित कर सार ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल वर, बानी विमलपसार ॥७९०॥
 बानी विमल पसार है, भजन सार सचि रीति ।
 वस्तु प्रगट निज रसिकमनि, चिक्र चातुरी भीति ॥७९१॥
 भजननि कों सुहृदी सदा, श्रीरसिक सिरोमनि राइ ।
 कपटिन कों हठ औहठी, सरतियै लेह छिड़ाइ ॥७९२॥
 कपटिनि चित आवं नहीं, सुहृदिन कौ सनमान ।
 भजननि के प्रभु सुवसहै, वस्तु रतन दियी दान ॥७९३॥
 सुहृद सजाती सुजन जन, भजनी भावं मीत ।
 रसिक नृपति ज्ञ औहठी, कपट सौ खरे अतीत ॥७९४॥
 कपटिन सौं एङ्डाइलौ, कैहूं न आवं ढार ।
 दीनन सौं बत्सल सुखद, एँठाइल सिर छारै ॥७९५॥
 भजनी सुहृदी भजन बस, श्रीरसिक नरेस उदार ।
 वस्तु मंगली भेल मन, सदई प्रभु भर भार ॥७९६॥
 सदई प्रभु आभा रहै, सुहृदी सुजन सुहाई ।
 भजननि कों श्रीव्याससुत, पालं दाइै उपाई ॥७९७॥
 भजनी सुहृद प्रतिपाल कों, नहीं प्रभु समरथ और ।
 कहनासिधु उदार हैं, लाल रसिक सिरमोर ॥७९८॥
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, चरनन की बलि जाऊ ।
 भजन भगति जानीं नहीं, मोकों ये पद ठाँउ ॥७९९॥

मोकों सरन सहाउ बल, गोरे ये पद मूल ।
 श्रीरसिक नृपति हृरिवंश जू, सदा रहौ अनुकूल ॥८००॥
 श्रीव्याससुवन जू रसिकमनि, सदा सहाइक होंहि ।
 करुणासिधु कृपाल जू, निवटि॑ निवारिवौर मोहि ॥८०१॥
 सरनागति है चरन तब, करदु कृपा यह जान ।
 श्रीरसिक नरेस उदार प्रभु, तुखद अलक लड़ी वानि ॥८०२॥
 चरन कमल परवान मन, श्रीव्याससुवन प्रभु मोर ।
 हैंसि प्रसन्न हूँ चितइयै, कृपा कटाक्षनि कोर ॥८०३॥
 चितवन तनेक प्रसन्न की, काज संपूरन मोर ।
 चरन कमल के आसरे, श्रीरसिक नरेस किशोर ॥८०४॥
 श्रीरसिक नरेस किशोर प्रभु, चरन कमल हों दीन ।
 प्रणत पाल करुणानिधे, समरथ दान प्रदीन ॥८०५॥
 सरनागत प्रतिपाल प्रभु, सुखद चित्त उपजाउ ।
 भजन रीति रति बस्तु में, तुम करि लेहु बनाउ ॥८०६॥
 मूरख सठ समझौं कहा, चरन सरन की लाज ।
 बड़ी भरोसौ रसिकमनि, करि लैंहौ कल काज ॥८०७॥
 काज साज तुमहौं लगे, मोरें ढंग कछु नाहि ।
 चरन कमल बर सरन हौं, समरथ लैंहि निवाहि ॥८०८॥
 समरथ मेरी खसम है, प्रभु निवारिन हार ।
 हों बलि बेपरवाह दिन, धनिही॒ पर्यौ अभार ॥८०९॥
 सद गद श्रीहृरिवंश पद, सौहृदता अनुपान ।
 व्याध वासना तन नसै, भजन पुष्ट हूँ प्रान ॥८१०॥
 अभय अमल श्रीहृरिवंश पद, भजननि जीवन मूरि ।
 तन मन व्याधि विकार गति, हियैं बस्तु बल पूरि ॥८११॥

१- पूर्ण रूप से, २- उढ़ार करोगे, ३- धन्य

तन मन व्याधि विकार सद, द्वरि होंहि तत्काल ।
 सद औषद श्रीहरिवंश पद, पोषन भजन रसाल ॥८१२॥
 तन मन पोषहि पुष्ट कर, नासहि व्याधि विकार ।
 निर्मल श्रीहरिवंश पद, औषद सुखद सद सार ॥८१३॥
 सुद्ध सुहृदता बाहिर, हिय में पाखण्ड केर ।
 सोचि हो सोचि विसूरि है, कठिन काज अवसर ॥८१४॥
 तहाँ काज अवसर है, चिलपि है बहुत विसूरि ।
 पाखण्ड केरन संति उर, पर्यौ भजन तें द्वारि ॥८१५॥
 परे भजन तें बाहिर, पाखण्ड केरनि पोषि ।
 भेट कही है भजन सों, द्वारि लागे संग दोष ॥८१६॥
 सहज दोष अनहों करे, पाखण्ड माँझ समात ।
 सुहृद भजन नहि परसई, भये कपट के गात ॥८१७॥
 समझि परे जो भजन में, अढंग अविद्या डारि ।
 सुधरें श्रीहरिवंश बल, पकरे रीति विचारि ॥८१८॥
 समरथ श्रीहरिवंशजी, मंगल रीति विचारि ।
 कपट केर छाँड़े हिये, भजनी होत न बारि ॥८१९॥
 कपट केर तजि प्रीति सों, रीति कों परे तुरन्त ।
 श्रीव्याससुबन पाठो गहे, तबही सुहृदी सन्त ॥८२०॥
 हों बलि श्रीहरिवंश की, भजन रीति निर्धारि ।
 गुप्त वस्तु प्रगटौ करी, मेंटि सकल जंजार ॥८२१॥
 हों बलि श्रीहरिवंश की, लक्षन भेद गुन काढि ।
 रूप रमित रस माधुरी, चले वस्तु मन काढि ॥८२२॥
 अकढ़ कढ़ो अवरस दिखो, कीनो अगह गहाइ ।
 सुगम करि दई रसिकमनि, भजनिनि हित सतभाइ ॥८२३॥
 तन गुन इन्द्रिन की वसा, चले सेमारे नेइ ।
 ठोकि ठाक मन चौकसे, भजनई माँहे देइ ॥८२४॥

१७२]

बाणी श्रीनेहो नागरीदास जी महाराज

चौकस भजन में दर्ये रहे, नेक न निघरक होइ ।

अति चंचल मन सबहाँ तें, पकरें ही सुधरि है सोइ ॥८२५॥

पकरि पकरि ही सुधरि है, मेलि दियें अगहाइ ।

मुकरे तें मन बाइली, परिहै बाद बहाइ ॥८२६॥

मनकी विकारें बाइली, मिटहि एक उपचार ।

श्रीव्याससुवन पद पछिलगा, स्वादिल करे विचार ॥८२७॥

विविध विचार विवेक की, पारहि राख्य भीर ।

भजन अमित गुन रसिकमनि, होन न देइ उछोर ॥८२८॥

श्रीरसिक नृपति बर भजन सुख, दोने स्वाद उधारि ।

मंगल में मन पकरि है स्वादिल होइ सुधारि ॥८२९॥

भजन सलिल संग मीन मन, अगमहि पहुँचे जाइ ।

साँचन जल बल प्रोति सों, सेल सिलनि चढ़े धाइ ॥८३०॥

तहाँ तहाँ विमल्यो फिरे, जहाँ जहाँ जीवन नीर ।

सिला संल ऊसर सुगम, प्रिय संग मीन सरोर ॥८३१॥

प्यारे प्रीतम संग जहाँ, अगम सुगम सुख तोष ।

ठोर अठोर अविधि विधि, मिलें सनेही पोष ॥८३२॥

भजन सनेही संग जल, अगम सुगम सुख ठोर ।

बरिधा खेले मीन मन, सेल सिलनि पर दौर ॥८३३॥

तहाँ कछू रथापे नहीं, भजन प्रीतमी संग ।

विमल वस्तु मन विमल है, नव अह्लाद अभंग ॥८३४॥

नव अह्लाद अभंग है, भजन सनेह मिलाप ।

वस्तु माँझ मन कड़ि परे, सोतल होइ सन्ताप ॥८३५॥

सुहृद भजन में हानि है, प्रकृति विरोधी संग ।

भक्ति हिये हुलसे नहीं, असंगतीय मन भंग ॥८३६॥

मिले संग असहाइ की, सुहृद भजन में टोट ।

वस्तु दुरावं सकुचि के, आगे ही सूझे खोट ॥८३७॥

खोटे चोटे टोटकी, प्रकृति विरोधी मेल ।
 देखत ही मन मूरछे, परं भजन में झेल ॥८३॥
 सुहृदी भजनी पाइये, मंगल मन अहिस्नाद ।
 दरसत परसत मिलत ही, नव नव भजन सवाद ॥८३॥
 छुटकि विमल खेलं भजन, छाँड़ि असंग अदाउ ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल ज्ञू, प्रगट्यौ बस्तु प्रभाउ ॥८४॥
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल की, बानी वरसत संग ।
 विमल भजन मृदु बस्तु सौ, दिन दिन बाढ़े रंग ॥८४॥
 विमल भजन मृदु बस्तु रति, लच्छन गुन गति रूप ।
 करे प्रगट हरिवंश ज्ञू, रसिक सिरोमनि भूप ॥८४॥
 श्रीरसिक सिरोमनि भूप ज्ञू, हाँ न्यौष्ठावर जाँउ ।
 अकह अगह रति प्रगट करि, सुख सौहृद सतभाउ ॥८४॥
 भजनबद्ध कहें सुहृदता, कीनों जानि मिलाय ।
 किर लागे हियरा जरन, बढ़ो ईरखा पाप ॥८४॥
 जीभ सवादे माछरी, लोलत लील्यो लोह ।
 भजन प्रान उगलित चल्यौ, हिये पूरि गयो छोह ॥८४॥
 सौहृद मुहुमिल देखिके, मिल्यौ छूटि अकुलाय ।
 भजन दावि औगुन कहे, यह दुख कहाँ समाइ ॥८५॥
 सुहृद भजन की चाल में, कौन पुरत रहौ केर ।
 पाखण्ड प्रबल हिये बढ़े, कहा बस्तु सौ मेर ॥८५॥
 सुहृद भजन में ईरखा, यहै जाँखि है मोहि ।
 बस्तु बीच मत्सर परे, पाखण्ड प्रबल अरोहि ॥८५॥
 सुहृद संग बिन भजन नहि, अह भजन तहाँ सतभाउ ।
 बहे फिरत घ्रम बीच के, कहूँ टिकत नहिं पौड ॥८५॥

बिना सुहृद सुख भजन के, पग न कहूँ ठहराय ।
 सूने हिय मन भक्ति नहीं, पाखण्ड निगले जाय ॥८५०॥
 पाखण्ड लोले झारि मन, सुहृद भजन बल नहीं ।
 सुकृत भक्ति सूझी नहीं, बचियै काकी छाँहि ॥८५१॥
 सुकृति भक्ति बर विमल गति, रति मति जहाँ बढ़ाव ।
 श्रीरसिक सिरोमनि रीति को, सुहृद होइ दं दाव ॥८५२॥
 श्रीरसिक सिरोमनि रीति बिनु, नहीं कहूँ निस्तार ।
 सुहृद होय हिय संचियै, बानी बर सुख सार ॥८५३॥
 बानी बर सुख सार सचि, श्रीब्याससुवन करतूत ।
 सुहृद भजन बिनु आपदा, जनम जायगौ धूत ॥८५४॥
 सुहृद भजन मन में बसे, श्रीब्याससुवन हिय मांह ।
 निर्भै निघरकता जहाँ, बस्तु गहे फिरे वर्हे ॥८५५॥
 ताको भजन सो भजन को, ब्याससुवन जा होय ।
 सदई सुख छाये रहे, बस्तु आनि बसं जोय ॥८५६॥
 ताके तन मन जिय हियै, निर्मल बस्तु प्रकास ।
 श्रीरसिक सिरोमनि लाल के, सुखद चरन उर जास ॥८५७॥
 श्रीब्याससुवन पद घट बसे, सुहृद भजन को मूल ।
 अकह अखिल सुख जानियै, इनहीं को फल फूल ॥८५८॥
 इनहीं को फल फूल है, सकल सुखनि विस्तार ।
 तेई निर्भै विमल हिय, श्रीब्याससुवन पद चाह ॥८५९॥
 सचि सुहृद के सुबस प्रभु, औरे माने मान ।
 चतुर सिरोमनि राय कै, चलै न कपट सयान ॥८६०॥
 सांच सुहृद में लोन प्रभु, दीननि की दिन लाज ।
 नुकता जाननि जान मन, ज्यों त्यों करि हैं काज ॥८६१॥
 सांचे हिरदे की गहै, दीननि पर करि मोह ।
 नुकता माने भजन को, और कंसोहु होहु ॥८६२॥

चतुर मनि रसिक नरेस छू, दोननि परम कृपाल ।
 सुहृद सचाई भजन जहाँ, करहि प्रीति प्रतिपाल ॥८६३॥
 भजन बान तिहि तान तनि, छतियाँ भिदीं बनाइ ।
 हिये नाठसल हँ रहै, जाते निकसत नांहि ॥८६४॥
 मरमो जतननि काढ़ि है, उर उर में दे डाठ ।
 शुद्ध सुहृद मन मिलनियाँ, परि लेइगौ बैट ॥८६५॥
 जबही न रति की गति चलै, तबही लागे छोभ ।
 गुनहँ औगुन सम गनै, हिये रोस को खोभ ॥८६६॥
 रति की चाल न समझाई, दवादवे चल्यौ जाइ ।
 संग लगे रुचि प्रीति के, गुन गति रहै आइ ॥८६७॥
 कहा अनेक ठाटनि ठटे, नहा जुरे बहुत समीति ।
 तबही तौ कुसलात है, जब हिय भजन सुरीति ॥८६८॥
 भजन समीती संग जहाँ, तहाँ व भजन उदोत ।
 सुहृद सनेही इकमना, बड़े भाग संग होत ॥८६९॥
 सुहृद सजाती इकमना, कहाँ पाईये संग ।
 वस्तु हिये छाई फिरे, नवौ भजन मन रंग ॥८७०॥
 कपटी कुत्सित कृपन कौ, मुख देखत ही हानि ।
 भजन वस्तु अन्तर परे, दूरि तजहु पहिचानि ॥८७१॥
 कपटी कुटिल कठोर के, संग बड़े संताप ।
 दूरहि ते परित्यागियै, अेखियनि देखत पाप ॥८७२॥
 कुटली कपटी कृतघनी, इनको एक सुभाउ ।
 सुहृद भजन मन हिय नहीं, ठौरहि देत अदाउ ॥८७३॥
 इनहि दाउ नहि सूझाई, सुहृद भजन को ठौर ।
 मत्सर छर अरप करि, सठ कुत्सित पेंडी और ॥८७४॥
 बानी सरबर कमल कल, मन मधुकर रही सेद ।
 भ्रांति भ्रांति की माषुरी, नौखे सौरभ लेइ ॥८७५॥

वानी अमी सरोबरहि, विकच सौरभी कंज ।
 मात्थी मुदित पराग पो, मन मधुकर रति रंज ॥८७६॥
 वानी अमल अमी सरह, अबै सरोज मकरंद ।
 प्रमुदित मन अलि पान करि, नीखे आनन्द कन्द ॥८७७॥
 वानी संगम अमृत सर, मकरंदी जल जात ।
 मन मधुकर सेवै सदा, पान करै निसि प्रात ॥८७८॥
 वानी अमी समाज सर, कूले पूखन बंध ।
 मन अलि प्रापति प्रेम निधि, मृदु माधुरी सुगन्ध ॥८७९॥
 मृदु माधुरी मकरन्द में, मन मधुकर मत्थी चाखि ।
 सुखद स्वाद जकतकिलग्यौ, गृह्णौ हियौ रति राखि ॥८८०॥
 सुरत सौरभी कंज कल, फूले विवि संगम सिधु ।
 अद्भुत अमी अमल अवत, मन अलि पियत सुगंध ॥८८१॥
 वानी बचन सुरत न रति, भेद भजन परकास ।
 यह जीवन ज्यौं जीवका, अवर नहीं कम्ह आस ॥८८२॥
 रत्ननि की प्रापति जहाँ, कौड़िन कौं मन देह ।
 अलक लड़ी आगे भजन, छाँड़ि अनत कहा लेह ॥८८३॥
 बड़े भाग प्रापति भई, भजन रतन को खान ।
 छूटि गई तब सहज ही, कौड़िन सौं पहिचान ॥८८४॥
 बस्तु नोहरी नेह निधि, निरूपम आई नैन ।
 कठिन रीझि कौ ठौर वहु, अनत कहाँ चित चैन ॥८८५॥
 लोल ललित अब अब चलत, आतुर रस अकुलात ।
 दरस परस सुख स्वादिलिन, पावत हू न अधात ॥८८६॥
 अब अब अनुरागी अमल, अमित अमोघ अमंद ।
 सद स्वादनि न अधात घत, परे ललक रति फंद ॥८८७॥
 अब अब आनन्दनि भरे, खरे अरे चढ़ि चाइ ।
 दरस परस सुख स्वादिलिनि, प्रमुदित नहीं अधाइ ॥८८८॥

अब अब परस प्रवीन रस, रोम रमें सुख स्वाद ।
 लागत लालच लख गुनौ, अति आनंद अहलाद ॥८८॥
 अति आनन्द अहलाद लदि, अब अब गति गंभीर ।
 जक लद स्वाद समूह सुख, विलसत बिमले धीर ॥८९॥
 अब अब लोल लुभावने, लाड़ लड़ावन फूल
 गरब गहिल गम्भीर गुन, मद मंथर गति झूल ॥९०॥
 मन चातिक बानी जलद, सदई सुधा चुचाई ।
 यह पोस्थौ तोख्यौ रहै, लालच नहीं बुझाइ ॥९१॥
 मन रति चातिक नेह घन, बानी अमी सर झेलि ।
 निष्पम सुख प्यारी प्रिया, प्रेम समागम केलि ॥९२॥
 बानी जलधर जगमग, दामिनि कोटिक काँति ।
 मन रति चातिक मुदित रटि, सुख संतोष रस माँति ॥९३॥
 बानी जलधर उमड़ि मद, धुरवा धनुक बग पाँति ।
 स्याम घटा दामिनि दिपे, मन चातिक रटे माँति ॥९४॥
 मन चातिक बानी सुधन, दामिनि छवि सुख पेखि ।
 रूप रंग रस वरषि अब, देखि जनम ले लेखि ॥९५॥
 बानी अंबुद दामिनी, दिपति वरसि अब मोद ।
 मन चातिक विवि बीच अटि, सुख झकोर दुर्दृ कोद ॥९६॥
 बानी जलधर जगमग, दामिनि विराजमान ।
 झलनि झकोरे रूप रस, मन चातिक सनमान ॥९७॥
 रूप झकोरे छवि झला, बानी घन वरखंत ।
 माँति माँति दामिन लसै, चित चातिक हरखंत ॥९८॥
 अलक लड़ती दामिनी, नौतन घन पति संग ।
 बानी चातिक मन मुदित, वरखे रूप रस रंग ॥९९॥
 मन चातिक रति रटि लगी, बानी जलधर चाइ ।
 अगनित गुन दामिनि दिपे, स्याम मुकुती सतमाइ ॥१००॥

लाड़ गहेली दामिनी, स्याम सु सुकृती मेह ।
 प्रेम पपीहा है मिलै, धन्य भजन को देह ॥६०२॥
 घन दामिनि उनमान कष्ट, यह नेह निरन्तर वानि ।
 वानी श्री हरिवंश को, बड़े भाग पहिचानि ॥६०३॥
 बड़े भाग पहिचानि है, गिरा रसिक मनि मेहु ।
 अलक लड़ी दामिनि लवै, रति चातिक मन नेहु ॥६०४॥
 वानी पहिचानी जहाँ, तहाँ काज कल फेल ।
 सुगम करी हरिवंश जू, विविध भेद बर गेल ॥६०५॥
 गेल चलाई औहठी, रसिक नरेस रसाल ।
 रीति समोति समूह सुख, अलक लड़े जू की चाल ॥६०६॥
 वानी सुचल नचाव चित, चतुर चौकसी चौप ।
 गुन गंभीर रति ललित गति, तन मन ज्यौं कर सौप ॥६०७॥
 हिये भीतरी भेवलौ, मन में भजन गङ्गर ।
 श्री व्यास सुवन पद धक दिये, वानी गुन मन पूर ॥६०८॥
 वानी गुन मन सुख रमै, बर विश्वाम आराम ।
 सुजननि की संपति सुधा, परिपूरन गुन ग्राम ॥६०९॥
 मंगल भजन बल मन रमै, हिये जर्मै अनुराग ।
 श्री रसिक नृपति रस रीति गति, तब ही पूरन भाग ॥६१०॥
 भूरि भाग जीवन सफल, वानी तत्त विचार ।
 श्री हरिवंश सुरोति विन, मिटे नहों छ्रम भार ॥६११॥
 रूप रंग मधु माधुरी, सोभा शुभ छवि जोत ।
 चौप सुरस वानी प्रवल, पल पल पानिप होत ॥६१२॥
 श्री रसिकनृपति हरिवंश को, सुखनिधि भजन अगाध ।
 प्रगट कर्यो जग सुजन हित, वानी संये साध ॥६१३॥
 सोई साधु सु सुजन जन, वानी भजन सत भाऊ ।
 श्रीव्यास सुचन रस रीति को, सुकृतीय दैहैं वाऊ ॥६१४॥

सोई सुकृत सुहृदी सुजन, सोई सतभाइ सुधीर ।
 बानी श्रीहरिवंश की, सेवत सफल सरीर ॥८१५॥
 बानी श्रीहरिवंश की, सेइ सफल धरि देह ।
 विमल भक्ति आई हिये, गहो रीति रति नेह ॥८१६॥
 रति गति मति पति प्रीति अति, बर बानी सु सेमार ।
 सुजननि काज श्रीरसिकमनि, दीनी प्रगट उदार ॥८१७॥
 नाना नाद सवाद सद, लक्षन दसा गुन भाइ ।
 प्रगटे रस जस रसिकमनि, बानी लाड़ लड़ाइ ॥८१८॥
 बानी लाड़ लड़ावनर्हि, लालन दोऊ दुलराइ ।
 प्रगटि श्रीहरिवंश ज्ञ, बानी रस समुदाइ ॥८१९॥
 चुम्बन चख मुख मधु खियत, दोऊ तृपित भये न ।
 पल पल प्रवल चौप रस, लंपट कहे रसिकमनि बैन ॥८२०॥
 बैन विचिवनि में प्रगट, ललना लाल विहार ।
 रूप रंग रस माधुरी, करे उदित सुख सार ॥८२१॥
 बैननि मांझ बनाऊ सब, केलि खेल कौतूह ।
 सहचरि नैनन सोंच रस, बरषत सुधा समूह ॥८२२॥
 सुधा सुरत सुख बरवि रस, नैन सिरावति दासि ।
 हित ज्ञ के कुंवर लड़ावने, अतुलित आनन्द रासि ॥८२३॥
 बानी श्रीहरिवंश की, समझ मरमी सुजान ।
 भाँति भाँति के भेद जहाँ, लाड़ लड़ावनौ आन ॥८२४॥
 औरे लाड़ लड़ावनौ, अद्भुत रीति समीति ।
 दुलराये दोऊ रसिकमनि, सेज संगमी प्रीति ॥८२५॥
 दुलरावन दुर्लभ दसा, अलभ लहैगी कौन ।
 करे कृपा श्रीरसिकमनि, हिय रमै भजन सलौन ॥८२६॥
 भजन सलौनी कठिन है, समझें जे बड़भाग ।
 प्रापति हूँ है बस्तु, श्रीहरिवंश चरण अनुराग ॥८२७॥

बानी मंगल माधुरी, मोहन रूप रसाल ।
 वरसु विलास लड़ावनी, दुलरावन दोड लाल ॥६२८॥
 हियं औरं मुख औरई, कपटी कुछित कुचाल ।
 सुहृद भजन बिन मानसर, काग महोछं मराल ॥६२९॥
 मानसरोवर सुहृदता, भजन संगमी मराल ।
 काग कपट संघट जहाँ, कहा विरभत हैं रसाल ॥६३०॥
 बिना भजन की सुहृदता, सुजन मराल न मेल ।
 दिकहि न कौआ रौर में, कुटिल कपट कौ खेल ॥६३१॥
 भजन माँझ कपट न मिलै, भजन तहाँ सतभाऊ ।
 सुहृद सुकृति मिलत बस्तु कौ, पकरि देहिगो बाउ ॥६३२॥
 दाद दियं फिरे बस्तु कौ, सुकृति सुजन समाज ।
 अनन्त धीर चितवं नहीं, एक भजन सौं काज ॥६३३॥
 सुजननि काजब भजन सौं, फिरत बस्तु के चाइ ।
 दिमल भक्ति हिय में धरें, औरनि कौं अगहाइ ॥६३४॥
 छेल छबीलौ भजन है, ओहठी हठीली बानि ।
 सुजन सजाती भजन बिन, औरनि सौं न पिछानि ॥६३५॥
 सुहृद सनेहिन की भजन, भजन सुजन सौं मेलि ।
 बस्तु प्रगट सब गुननि सौं, संगम सुखनि सुहेलि ॥६३६॥
 संगम सुखनि सुहेल है, सुजन भजन इकताक ।
 मुदित परस्पर मिलि चलै, डारे विमुख बराक ॥६३७॥



द्रोहा

सवसो हित, निष्काम मति वृन्दावन विश्वाम ।
 श्रीराधावल्लभ लाल को हृदय ध्यान मुख नाम ॥

 तनहि राखि सदसङ्ग में मनहि प्रेम रस भेव ।
 मुख चाहत हरिवंश हित कृष्ण कल्पतरु सेव ॥

 निकसि कुंज ठाड़े भये मुजा परस्पर अंस ।
 श्रीराधावल्लभ मुख कमल निरखि नैन हरिवंश ॥

 रसना कटो जु अन रटों निरखि अन फुटो नैन ।
 अवण फुटो जो अन सुनों बिनु राधा यश बैन ॥

